लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–23

पुराने दक्कन के दिन–2

हिन्दू परियों की कहानियाँ

मैरी फ्रैरे

1868

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title: Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series-23
Book Title: Purane Dakkan Ke Din-2 (Old Deccan Days-2)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2019
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Deccan

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें 5

पुराने दक्कन के दिन–2 7

9 पंचफूल रानी 9

10 जब सूरज चॉद और हवा खाना खाने गये 54

11 सिंह राजा और छोटे चालाक गीदड़ 57

12 गीदड़, नाई और एक ब्राह्मण जिसके सात बेटियॉ थीं 61

13 जैसे को तैसा 91

14 ब्राह्मण चीता और छह जज 94

15 स्वार्थी चिड़िया और बेघर कौए 102

16 बहादुर कुम्हार 106

17 राक्षस का महल 119

18 एक अन्धा, एक बहरा और एक गधा 139

19 मच्छी लाल 153

20 चन्दन राजा 169

21 सुदेवा बाई 189

22 चन्द्रा का बदला 208

23 तीन चतुर आदमियों ने राक्षसों को कैसे हराया 244

24 मगर और गीदड़ 264

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुई और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – “देश विदेश की लोक कथाऐं” जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र कर के 2500 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – “एक कहानी कई रंग”[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं “लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें”। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफ्रीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
3. 19वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें
4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोन, नाइट्स औफ स्ट्रापरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

[1] “One Story Many Colors”

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

पुराने दक्कन के दिन–2

भारत के दक्षिण के राज्य जैसे तेलंगाना तमिलनाडु केरल महाराष्ट्र आदि राज्य जो नर्मदा नदी के दक्षिण में स्थित हैं काफी पहले दक्कन प्रदेश कहलाते थे। यहाँ के अलग अलग प्रान्तों की कहानियाँ या लोक कथाऐं तो अधिक नहीं मिलतीं पर हाँ दो पुरानी पुस्तकें दक्कन की कहानियों की मिलती हैं। इन दो पुस्तकों में से एक पुस्तक का हिन्दी अनुवाद हम पहले ही प्रकाशित कर चुके हैं[2] अब यह दूसरी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है पिछली पुस्तक की तरह से यह पुस्तक भी आप सबको बहुत पसन्द आयेगी।

इस पुस्तक, "पुराने दक्कन के दिन"[3], को मैरी फ्रैरे ने पहली बार 1868 में प्रकाशित किया था। यद्यपि लोक कथाओं का इतिहास भारत से ही आरम्भ होता है पर फिर भी संगठित रूप से भारतीय लोक कथाओं पर प्रकाशित होने वाली यह पहली पुस्तक है।

मैरी ने ये कहानियाँ क्यों और कैसे लिखीं इसकी भी एक मजेदार कहानी है। सन् 1865–1866 में मैरी ने अपने पिता के साथ दक्षिण भारत का तीन महीने का दौरा किया। उस समूह में ये अकेली ही स्त्री थीं सो कुछ दिन तो इन्होंने पुस्तकें पढ़ीं फिर कुछ लिखा फिर कुछ चित्र बनाये पर फिर उस सबसे ऊब कर एक दिन इन्होंने अपनी नौकरानी से कहा कि क्या वह उनको कोई कहानी सुनायेगी।

पहले तो उसने साफ मना कर दिया पर फिर यह कहने पर कि उसके अपने बच्चे और पोते आदि भी तो थे तो वह उनको भी तो कहानी सुनाती होगी। ऐसा कहने पर वह उनको एक कहानी सुनाने पर तैयार हो गयी। यह कहानी पंचकिन थी जो उसने अपनी दादी से सुनी थी। उसके बाद फिर कई कहानियाँ सुनी गयीं जो यहाँ दी गयी हैं। इस पुस्तक में कुल 24 कहानियाँ दी गयी हैं।

यह उस समय इतनी लोकप्रिय हुई कि 30 साल के अन्दर अन्दर इसका पाँचवाँ संस्करण 1898 में ही प्रकाशित हो गया था। इस पुस्तक का अनुवाद जर्मन, हंगेरियन, डैनिश भाषाओं में हो चुका है और बल्कि एक बार ही नहीं कई बार हो चुका है। इसका मराठी हिन्दुस्तानी और गुजराती भाषाओं में भी अनुवाद हो चुका है। यह बड़ी अजीब सी बात है कि ऐसा सुना गया है कि इसके फ्रैन्च भाषा में दो अनुवाद मौजूद हैं पर दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि उनमें से कोई भी अनुवाद अभी तक प्रकाशित नहीं हो पाया है। दुर्भाग्य से यह इस पुस्तक का पहला हिन्दी अनुवाद है। हमें गर्व है कि इस पुस्तक का पहला हिन्दी अनुवाद हम प्रकाशित कर रहे हैं।

---

[2] "Deccan Nursery Tales or Fairy Tales from the South:. By CA Kincaid. 1914. 20 tales. Here these stories are given in Hindi. This book is available in English at : http://www.gutenberg.org/files/11167/11167-h/11167-h.htm
Deccan, the entire southern peninsula of India, south of Narmada River up to the Southern tip of India. It extends over eight Indian states including – Telanganaa, Maharashtra, Andhra Pradesh, Karnatak and Tamil Nadu.

[3] "Old Deccan Days or Hindoo Fairy Legends: current in Southern India". By Mary Frere. Originally published in 1868 (5th impression, London: John Murray. 1898). 24 tales. This book's Reprint is available in English at : https://en.wikisource.org/wiki/Old_Deccan_Days **AND** https://archive.org/details/olddeccandaysorh00freruoft

मैरी फ्रेरे का कहना है कि "प्रसिद्ध लेखक मैक्स मुलर[4] ने मुझे बताया कि उन्होंने इस संग्रह की एक कहानी को मूल संस्कृत भाषा में देखा है।"[5]

आज हम उन्हीं लोक कथाओं को उनकी उसी पुस्तक से पहली बार हिन्दी में अनुवाद कर के अपने हिन्दी भाषा भाषियों के लिये प्रस्तुत कर रहे हैं। आशा है कि ये क्लासिक लोक कथाऐं आप सबको हिन्दी में पढ़ कर बहुत अच्छा लगेगा। तो लीजिये पढ़िये ये दक्कन की कहानियाँ अब हिन्दी में पहली बार। यह पुस्तक बड़ी होने के कारण इसे दो भागों में प्रकाशित किया जा रहा है। इसका पहला भाग पहले ही प्रकाशित किया जा चुका है। अब प्रस्तुत है इसका दूसरा भाग।

---

[4] Professor Max Muller – a German authority on Indian writings especially Ved.

[5] All this account has been taken from the Preface of its 3rd English edition published in 1881. This is the Preface given in its 5th impression also. It is the only edition/impression available on Internet.

9 पंचफूल रानी[6]

एक बार की बात है कि एक राजा था। उसके दो रानियाँ थीं। पर वह अपनी दूसरी रानी को बहुत प्यार करता था। पहली रानी से उसके एक बेटा था पर वह क्योंकि दूसरी रानी को ज़्यादा प्यार करता था इसलिये उसे पहली रानी के बेटे से भी कोई ज़्यादा प्यार नहीं था।

क्योंकि उसका पिता उसके साथ बहुत कठोरता से बर्ताव करता था इसलिये राजकुमार को यह सब अच्छा नहीं लगता था।

एक दिन उसने अपनी माँ से कहा — "माँ मेरे पिता जी मुझे बिल्कुल नहीं चाहते यहाँ तक कि मेरा यहाँ होना भी उनको दुखी करता है तो मैं यहाँ रहने की बजाय कहीं और रह कर ज़्यादा खुश रहूँगा सो मुझे दूसरे देशों में मेरी किस्मत आजमाने की इजाज़त दीजिये।"

रानी ने राजा से पूछा कि क्या हम अपने बेटे को दूसरे देशों में जाने की इजाज़त दे दें। राजा ने कहा — "वह कहीं भी जाने के लिये आजाद है पर मेरी यह समझ में नहीं आ रहा है कि वह दूसरे देशों में रहेगा कैसे। क्योंकि वह तो अपनी जीविका कमाने तक के लिये बहुत बेवकूफ है। और मैं उसको बेमतलब का खर्च करने के लिये कोई पैसा दूँगा नहीं।"

---

[6] Panch-Phul Rani. (Tale No 9).

तब रानी ने उससे कहा कि उसने उसके पिता से उसके बाहर जाने इजाज़त ले ली है। वह आगे बोली — "बेटा अब तुम बाहर अपनी किस्मत आजमाने जा रहे हो तुम यह खाना और कपड़े अपने साथ ले जाओ जो मैंने तुम्हारी यात्रा के लिये तैयार किये हैं।"

कह कर उसने उसको कपड़ों की एक गठरी और काफी सारा खाना दिया। हर रोटी के बीच में उसने एक एक सोने की मुहर रख दी थी कि जब भी वह रोटी खाने बैठे तो खाने के साथ साथ उसको कुछ पैसे भी मिल जायें। यह सब ले कर उसने अपनी यात्रा शुरू की।

जब राजकुमार ने काफी यात्रा कर ली और अपने पिता का राज्य काफी पीछे छोड़ दिया। एक दिन वह एक बहुत बड़े शहर की बाहरी सीमा पर आया तो वहाँ पहुँच कर बजाय इसके कि वह अपने ओहदे के अनुसार वहाँ के राजा को अपने आने की खबर करता वह एक गरीब बढ़ई के घर चला गया और वहाँ उससे रात को ठहरने की जगह माँगी।

बढ़ई अपने बरामदे में बैठा लकड़ी के लट्टे बनाने में लगा हुआ था। फिर भी उसने उसकी तरफ देखा कर अपना सिर हाँ में हिलाया और बोला — "अजनबी नौजवान। तुम्हारा स्वागत है। आओ एक अजनबी को जिस चीज़ की जरूरत होती है वह हर जरूरत मैं तुम्हारी पूरी करूँगा।

अगर तुम्हें खाने की जरूरत है तो मेरी पत्नी और मेरी बेटी रसोईघर में हैं। वे तुम्हारे लिये खाना बना कर बहुत खुश होंगी।"

राजकुमार अन्दर गया और बढ़ई की बेटी से कहा — "मैं एक अजनबी हूँ। बहुत दूर से यात्रा करके आया हूँ। मैं बहुत थका हुआ हूँ और भूखा भी हूँ। जितनी जल्दी हो सकता हो उतनी जल्दी मेरे लिये खाना बना दीजिये। मैं आपकी मेहनत के लिये आपको पैसा दूँगा।"

लड़की बोली — "मैं आपके लिये खाना बहुत जल्दी बना देती पर मेरे पास लकड़ियाँ नहीं हैं और जंगल यहाँ से थोड़ी दूर है।"

राजकुमार बोला — "कोई फर्क नहीं पड़ता। आप आपने पिता की लकड़ी जला लीजिये मैं उसकी भरपाई कर दूँगा।" कह कर उसने उसके पिता की लकड़ी दो लट्ठे उठाये जो उसने अभी अभी बना कर रखे थे और उन्हें तोड़ कर उनसे आग जला दी।

अगली सुबह वह जंगल गया वहाँ से लकड़ी लाया और उससे उसने दो नये लट्ठे बना दिये। ये बढ़ई के बनाये गये लट्ठों से ज़्यादा अच्छे बने थे। उसने उन्हें बढ़ई की दूकान में दूसरे लट्ठों के साथ बेचने के लिये रख दिया।

कुछ देर बाद ही वहाँ के राजा का एक नौकर बढ़ई से एक जोड़ी लट्ठे माँगने आया। उसने वहाँ वे नये लट्ठे रखे देखे तो बढ़ई से कहा — "ये दो लट्ठे तो और दूसरे लट्ठे जो यहाँ रखे हुए हैं उनसे कहीं ज़्यादा अच्छे हैं। मैं यही दोनों लट्ठे राजा के लिये ले जाऊँगा।

काश तुम हमेशा ही इतने अच्छे लट्ठे बनाया करते।" कह कर उसने उसको दस सोने की मुहरें दीं और उन दोनों लट्ठों को ले गया।

बढ़ई तो इस सारे मामले पर चकित था। अक्सर तो उसको दो लट्ठों के दो तीन रुपये से ज़्यादा नहीं मिलते थे। उसे मालूम था कि जिन लट्ठों के दाम राजा के नौकरों ने दस सोने की मुहर लगाये हैं वे उसके बनाये हुए नहीं थे तो फिर वे वहाँ आये कहाँ से।

उसको यह भी मालूम था कि कल रात से पहले वे वहाँ नहीं थे। वह सोचता रहा सोचता रहा पर वह जितना ज़्यादा सोचता था उसकी गुत्थी उतनी ही उलझती जाती थी। सो वह इस बारे में अपनी पत्नी और बेटी से बात करने गया।

उसकी बेटी ने कहा — "पिता जी। ये लट्ठे उस अजनबी के बनाये हुए होंगे जो कल हमारे यहाँ आया था।"

फिर उसने अपने पिता को रात वाली घटना के बारे में बताया कि किस तरह से अजनबी ने उसके दो लट्ठे ले कर खाना बनाने के लिये उनसे आग जला दी थी और फिर किस तरह से सुबह को उसने जंगल से लकड़ी ला कर वे नये लट्ठे बना दिये थे।

बढ़ई तो यह सुन कर और भी आश्चर्यचकित रह गया। उसने सोचा कि "अजनबी तो बहुत ही शान्त और शान्ति वाला आदमी था। वह तो लट्ठे इतने अच्छे बना सकता है यह तो बड़े दुख की बात है कि वह यह जगह छोड़ कर यहाँ से चला जाये। वह तो मेरी बेटी के लिये भी एक अच्छा पति रहेगा।

सो उसने नौजवान राजकुमार को पकड़ कर उसको अपनी स्कीम बतायी। पर उसको तो यह पता ही नहीं था कि वह एक राजकुमार था।

अब बढ़ई की बेटी तो बहुत सुन्दर थी जैसे कोई रानी होती है। वह अच्छे स्वभाव की थी चतुर थी और खाना बहुत अच्छा बनाती थी। सो बढ़ई ने जब राजकुमार से अपना दामाद बनने के लिये कहा तो वह तो लड़की के माता पिता की तरफ देखने लगा।

और यह सोच कर कि बहुत सारे अच्छे लोगों की किस्मत खराब होती है उसने कहा — "मैं आपकी बेटी से शादी करूँगा यहाँ रहूँगा और लट्टे बनाऊँगा।" और इस तरह राजकुमार की शादी एक बढ़ई की बेटी से हो गयी।

राजकुमार लकड़ी की बहुत सारी चीज़ें बनाने में बहुत होशियार था। जब उसने बहुत सारे लट्टे बना लिये तो उसने उनको बाजार में बेचने की सोचा। उसको लकड़ी के खिलौने बनाने में बहुत आनन्द आता था सो उसने एक हजार लकड़ी के तोते बनाये।

देखने में वे बिल्कुल असली तोते लगते थे। उनके हर एक के दो दो पंख थे दो दो पैर दो दो आँखें और एक एक नुकीली चोंच थे। जब राजकुमार ने उन सबको बना कर खत्म कर लिया उसने उनको रंगा और उनको वार्निश कर के चमकाया। फिर उसने उनको सूखने के लिये धूप में रख दिया।

रात आयी तो पार्वती जी और महादेव जी दुनियाँ घूमने निकले।

बहुत सारे शहरों में घूम कर वे उस शहर में भी आये जहाँ बढ़ई रहता था। बढ़ई के घर के सामने वाले मैदान में उन्होंने देखा कि वहाँ एक हजार तोते रखे हुए हैं जिन्हें राजकुमार ने बनाया था रंगा था वार्निश कर के चमकाया था और फिर सूखने के लिये रखा हुआ था।

यह देख कर पार्वती जी ने महादेव जी से कहा — "ये तोते तो बहुत सुन्दर बने हुए हैं। इनको तो बस अब और कुछ नहीं चाहिये केवल ज़िन्दा करना है। तो हम इन्हें ज़िन्दगी क्यों न दे दें।"

महादेव ने पूछा — "क्या फायदा। पर यह तो एक आश्चर्य जनक घटना होगी।"

पार्वती जी बोलीं — "ओह मैंने तो आपसे केवल इसलिये कहा था कि थोड़ा आनन्द रहेगा। जब ये लकड़ी के तोते उड़ते नजर आयेंगे तब कितना अच्छा लगेगा। पर अगर आपको अच्छा नहीं लगता तो मत कीजिये।"

महादेव जी ने कहा — "तुम्हें तो अच्छा लगेगा न। तो ठीक है मैं कर देता हूँ।" और उन्होंने उन हजार तोतों को ज़िन्दा कर दिया। उसके बाद वे वहाँ से चले गये।

अगली सुबह जब राजकुमार उठा और बरामदे में यह देखने के लिये गया कि तोतों की वार्निश सूख गयी या नहीं तो जैसे ही उसने

बरामदे का दरवाजा खोला तो वह तो हक्का बक्का रह गया। सारे के सारे हजार तोते अपने पंख फड़फड़ाते हुए और बातें करते हुए उसके घर में घुसे चले आ रहे थे।

तोतों की आवाज सुन कर बढ़ई बढ़ई की पत्नी और बेटी सभी बाहर निकल कर आये तो उन्होंने भी जो देखा उसे देख कर उनको भी राजकुमार से कुछ कम आश्चर्य नहीं हुआ।

यह देख कर बढ़ई की पत्नी ने अपने दामाद से कहा — "यह तो बहुत अच्छा हुआ कि आपने ये इतने अच्छे तोते बनाये पर मुझे पता नहीं कि मैं अब इनके लिये खाना कहाँ से लाऊँ।

क्योंकि इतने तन्दुरुस्त तोतों के लिये हर एक के लिये कम से कम एक पौंड चावल तो रोज का चाहिये। आपके ससुर और मैं इस छोटे से घर में इतना सारा खाना तो रख नहीं सकते। अगर आप इन्हें रखना चाहते हों तो फिर कहीं और जा कर रहिये क्योंकि हम आप सबको नहीं रख सकते।"

राजकुमार बोला — "मैं आपको इस बात का मौका नहीं दूँगा कि आप मुझे आपको बर्बाद करने का दोषी बतायें इसलिये मैं अब अपना घर खुद बनाऊँगा।"

यह कह कर उसने अपने एक हजार तोते लिये। उसकी सास ने अपनी बेटी को घर गृहस्थी शुरू करने के लिये कुछ अनाज चावल और पैसा दिया और वह इन सबको साथ ले कर अपने नये घर में रहने चला गया।

कुछ ही दिनों में उसने देखा कि उसके तोते उस पर बोझा नहीं हैं बल्कि उसके लिये अच्छी किस्मत ले कर आये हैं। क्योंकि सुबह सवेरे ही वे खाने की खोज में उड़ जाते और सारा दिन मैदान में रहते और शाम को हर तोता अपनी चोंच में किसी अनाज की एक बाल दबाये लौटता जो भी उसको मिल जाती।

इससे उनके मालिक को जरूरत से ज़्यादा खाना मिल जाता जिसे वह बाजार में बेच देता। सो उसको अब अपनी जीविका कमाने के लिये कोई काम नहीं करना पड़ता। बस वह अपने लकड़ी के काम पर ध्यान देता जिससे वह कुछ ही दिनों बहुत अमीर हो गया।

इस तरह खुशी खुशी रहते हुए उसे कुछ दिन बीत गये कि एक रात जब वह सोया हुआ था तो उसने एक बहुत ही आश्चर्यजनक सपना देखा। उसका सपना यह था —

उसको लगा कि कहीं बहुत दूर, लाल सागर के भी उस पार, सात समुद्र से घिरा हुआ एक राज्य है। उसमें एक राजा और रानी हैं और है उनकी एक सुन्दर बेटी जिसका नाम है पंचफूल। उसी के नाम पर राज्य का नाम भी है – पंचफूल रानी का राज्य।

पंचफूल अपने राज्य के बीच में रहती थी एक छोटे से घर में जिसके चारों तरफ सात बड़े बड़े गड्ढे हैं। बरछियों की बनी सात हैजैज़ हैं। पंचफूल वहाँ रहती है। वह पंचफूल इसलिये कहलाती है क्योंकि वह केवल पाँच कमल के फूलों के बराबर भारी है।

यह सपना देख कर उसकी ऑख खुल गयी और वह कुछ परेशान सा हो गया। वह अपना सिर अपने हाथों में ले कर बैठ गया और इस सपने के बारे में सोचने लगा कि जो कुछ उसने सपने में देखा क्या वैसा उसने पहले कभी कहीं सुना था। पर वह अपने सपने का कोई मतलब न निकाल सका।

जब वह बैठा बैठा इस तरह सोच रहा था तो उसकी पत्नी जाग गयी। उसने उससे पूछा कि क्या बात थी। उसने अपनी पत्नी को सारा हाल बता दिया।

सुन कर वह बोली — “यह तो सचमुच में बहुत ही अजीब सा सपना है। पर मैं अगर तुम होती तो मैं इस सपने के बारे में उस बूढ़े तोते से पूछती। वह एक अक्लमन्द चिड़ा है। और यह भी हो सकता है कि वह जानता हो।”

वह जिस तोते के बारे में बात कर रही थी वह उसके पति के एक हजार लकड़ी तोतों में सबसे अक्लमन्द तोता था।

राजकुमार ने अपनी पत्नी की सलाह मानी। शाम को जब उसके सारे तोते लौट कर आये तो उसने अपने अक्लमन्द तोते को बुलाया और उसे अपना सपना सुनाया और उससे पूछा “क्या यह सच हो सकता है।”

सुन कर तोता बोला “हॉ यह सब सच है। पंचफूल रानी का देश लाल सागर के भी उस पार है। उसका राज्य सात समुद्रों से घिरा हुआ है। वह अपने पिता के राज्य के बीच में रहती है।

उसके घर के चारों तरफ सात गड्ढे हैं और बरछियों की बनी सात हैजेज़ हैं। उसने प्रतिज्ञा की है कि वह किसी ऐसे से शादी करेगी जो सातों गड्ढों और सातों हैजेज़ को फलाँगेगा।

अब क्योंकि वह बहुत सुन्दर है तो उससे शादी करने की बहुत लोगों ने कोशिश की है पर अब तक कोई सफल नहीं हो सका है। राजा और रानी दोनों उसे बहुत प्यार करते हैं और उसके अपनी बेटी होने का गर्व करते हैं।

वह हर रोज अपने माता पिता से मिलने के लिये उनके महल जाती है और वे उसको एक तराजू में तौलते हैं। तराजू के एक पलड़े में वह उसको बिठाते हैं और दूसरे पलड़े में वह पाँच कमल के फूल रखते हैं।

वह इतनी नाजुक और पतली सी है कि वह कभी भी पाँच फूलों से भारी नहीं होती। इसलिये वे उसे पंचफूल रानी कहते हैं। उसके माता पिता को उस पर बहुत गर्व है।

राजकुमार बोला — "मैं उसके देश जा कर उसको देखना चाहूँगा पर मैं सात समुद्र कैसे लाँघूँगा।"

तोता बोला — "मैं आपको बताता हूँ कि आप ऐसा कैसे कर सकते हैं। मैं एक दूसरे तोते के साथ उसको बराबर बराबर उड़ूँगा। मैं अपना बाँया पंख उसके दाँये पंख पर रख लूँगा और फिर हम दोनों ऐसे उड़ेंगे जैसे कोई एक ही चिड़िया उड़ रही हो। आप हमारे उस जुड़े हुए पंख पर बैठ जाइयेगा। हम आपको सुरक्षित रूप से

सात समुद्र पार ले जायेंगे। हर शाम को हम किसी पेड़ पर आराम करेंगे और अगली सुबह अपनी यात्रा फिर शुरू कर देंगे।"

राजकुमार बोला — "यह तो बड़ा अच्छा प्लान है। मेरी बड़ी इच्छा है कि मैं इस तरह वहाँ पहुँच जाऊँ। प्रिये तुम क्या सोचती हो मेरी पंचफूल के पास जाने की इस यात्रा के बारे में और यह देखने के बारे में कि मैं वे सातों गड्ढे और बरछियों की हैजैज़ पार कर सकता हूँ या नहीं। क्या तुम मुझे कोशिश करने दोगी।"

पत्नी बोली — "हाँ हाँ क्यों नहीं। अगर तुम उससे शादी करना चाहते हो तो। पर अपना ध्यान रखना कि अपने आपको मार मत लेना और यह भी कि तुम उसी दिन वापस आ जाना।"

कह कर उसने उसके लिये यात्रा के लिये खाना बना दिया। उसने अपने सोने और चाँदी के कंगन निकाले जिनको उसने कुछ गर्म चीज़ों के साथ रख दिया कि हो सकता है कि रास्ते में उसको पैसे कपड़े खाने की जरूरत पड़े।

फिर राजकुमार ने अपने बचे हुए **998** तोतों को कहा कि वे उसके पीछे उसकी पत्नी को खाना ला कर देते रहें ताकि उसे खाने की कोई परेशानी न हो। फिर वह उसको उसके पिता के घर ले गया जहाँ वह उसके पीछे रहती।

उसने उसे विदा ली — "डरना नहीं। मैं तुम्हारे पास वापस आऊँगा। अगर मैंने पंचफूल रानी को जीत भी लिया फिर भी एक बढ़ई की बेटी होने के बावजूद तुम मेरी पहली पत्नी रहोगी।"

तब दोनों तोतों ने अपने पंख फैलाये राजा को उन पर बिठाया और हवा में उड़ चले। जल्दी ही वे पत्नी की आँखों से ओझल हो गये।

वे उड़ते रहे उड़ते रहे। उतनी तेज़ जितनी कि कोई तोता उड़ सकता था। पहाड़ियों के ऊपर जंगलों के ऊपर घाटियों के ऊपर। बस उड़ते रहे घंटों दिनों हफ्तों। वे केवल रात को ही आराम करते थे जब वे यह नहीं देख पाते थे कि वे कहाँ जा रहे हैं।

आखिर वे उन सात समुद्रों तक पहुँच गये जिन्होंने पंचफूल रानी के देश को घेर रख था। जब उन्होंने समुद्र पार करना शुरू किया तो फिर वे कहीं बीच में नहीं रुक सकते थे क्यों कि उनमें न तो कोई चट्टान ही खड़ी थी और न नीच में कोई टापू ही था। इसलिये उनको अगले किनारे तक सीधा एक बार में ही उड़ना पड़ा।

इस वजह से तोते बहुत थक गये थे और राजा के शहर तक नहीं जा सकते थे सो वे एक सुन्दर से बरगद के पेड़ पर आराम करने के लिये रुक गये। यह बरगद का पेड़ समुद्र के पास ही लगा हुआ था और इसके पास ही एक छोटा सा गाँव भी था।

राजकुमार ने सोचा कि वह शहर देख कर आता है और वहीं अपने लिये खाने पीने और रात को सोने का इन्तजाम करता है। उसने तोतों से कहा कि वह जब तक लौट कर आता है वे वहीं उस बरगद के पेड़ पर ही रहें। अपना सब सामान उनकी देखभाल में छोड़ कर वह सबसे पास वाले घर चला गया।

कुछ ही देर में वह एक माली के घर पहुँच गया। उसने एक सोने की मुहर माली की पत्नी को दी और उसे उसे खाना और रात को शरण देने के लिये राजी कर लिया।

अगली सुबह वह जल्दी उठा और माली की पत्नी से बोला — "मैं यहाँ अजनबी हूँ और मैं इस शहर के बारे में कुछ नहीं जानता। इस शहर का क्या नाम है।"

वह बोली — "इस देश का नाम पंचफूल रानी का देश है।"

उसने पूछा — "और तुम्हारे इस देश की सबसे नयी खबर क्या है।"

वह बोली — "बहुत बुरी खबर है। राजा के केवल एक ही बेटी है। वह बहुत सुन्दर है। वह इतनी कोमल और हलकी है उसका वजन पाँच कमल के फूलों से भी कम ही है इसी लिये उसका नाम पंचफूल रानी है। वह तुम सामने शहर के बीच में जो जगह देख रहे हो न वह वहाँ एक छोटे से घर में रहती है।

पर हम सबके लिये यह बहुत बुरी बात है कि उसने यह प्रतिज्ञा कर रखी है कि वह केवल उसी से शादी करेगी जो भालों की बनी हुई सात हैजैज़ और सात बड़े गड्ढे कूद कर पार कर उसके घर पहुँचेगा। यह अब तक किया नहीं जा सका है मेरे बच्चे।

मुझे तो पता ही नहीं कि कितने सैंकड़ों हजारों उम्मीदवारों ने इसको करने की कोशिश की है और इस कोशिश में मारे गये। फिर भी राजकुमारी अपनी प्रतिज्ञा नहीं तोड़ रही।

रोज ही शहर से उन लोगों के मरने की बुरी बुरी खबरें आती हैं जिन्होंने सात हैजैज़ और सात गड्ढों के ऊपर कूदने की कोशिश की। मुझे तो इस बदकिस्मती का कोई अन्त नजर नहीं आता।

धरती ने इसमें केवल बहादुर लोग ही नहीं खोये बल्कि क्योंकि राजकुमारी भी किसी ऐसे आदमी से शादी नहीं करेगी जिसने यह नहीं किया हो तो मुझे तो उसकी भी शादी होने का कोई मौका नजर नहीं आता।

और अगर ऐसा हो गया तो जब राजा मर जायेगा तो उसकी देखभाल कौन करेगा राज्य का मालिक कौन बनेगा। सारे कुलीन लोग राज्य के लिये झगड़ा करेंगे। सारे राज्य में बलवा मच जायेगा।"

राजकुमार बोला — "आप चिन्ता मत कीजिये। मैं आपकी राजकुमारी को जीतने की कोशिश करूँगा क्योंकि मैं बहुत अच्छा कूदता हूँ।"

माली की पत्नी बोली — "बेटा। ऐसा तो तुम कभी सोचना भी नहीं। क्या तुम पागल हो गये हो। मैंने तुम्हें बताया न कि सैंकड़ों हजारों लोगों ने ये शब्द कहे हैं और इस कोशिश में मर गये हैं। तुम क्या समझते कि तुम्हारे पास ऐसी कौन सी ताकत है जिससे तुम उन्हें पार कर लोगे। ये सब विचार छोड़ दो। यह सब बेवकूफी की बातें हैं।"

राजकुमार बोला — "ठीक है बिना अपने दोस्तों से सलाह किये मैं ऐसा नहीं करूँगा।"

सो वह माली के घर से चला गया और बरगद के पेड़ के पास आया और तोतों से इस बारे में सलाह माँगी क्योंकि उसने सोचा कि शायद वे अपने पंखों पर बिठा कर उसे वहाँ ले जा सकें।

तोतों ने कहा — "आप जबसे हमें यहाँ छोड़ कर गये हैं दो दिन हो गये हैं। आपको गाँव से क्या खबर मिली।"

राजकुमार बोला — "पंचफूल रानी अभी भी उसी मकान में रहती है जिसके चारों तरफ सात गड्ढे और भालों की बनी सात हैजैज़ बनी हैं। बहुत सारे लोगों ने उनको पार करने की कोशिश की है पर कोई भी अभी तक उसे पार नहीं कर सका है।

पर ओ तोतों तुम लोग जो मुझे सात समुद्र पार करा कर यहाँ तक ले कर आये हो तो क्या तुम लोग मुझे वे सातों गड्ढे और सातों हैजैज़ पार करा कर नहीं ले जा सकते।"

बूढ़ा तोता बोला — "ओ बेवकूफ। क्यों नहीं हम आपको जरूर वहाँ ले जा सकते हैं पर ऐसा करने क्या भला होगा। हम अगर आपको ले गये तो वह वैसी बात नहीं होगी जो कूद कर जाने में होती है। और राजकुमारी आपसे शादी नहीं करेगी।

क्योंकि उसने यही प्रतिज्ञा की है न कि वह केवल उसी से शादी करेगी जिसने उन्हें कूद कर पार किया हो। सो अगर आप चाहते हैं

कि वह आपसे शादी करे तो बजाय बेकार की बात करने के आप खुद ही यह काम करें।

आपको याद है कि जब आप एक छोटे बच्चे थे तो आपको किस तरह से कूदना सिखाया गया था – क्योंकि यह तोता राजकुमार के बारे में सब कुछ जानता था। अब वह समय आ गया है कि जब आपने जो कुछ सीखा था उसको अब आप काम में लायें।

अगर आप सातों गड्ढे और भालों के बनी हुई सातों हैजैज़ पार कर लेते हैं तो आप एक बहुत बड़ा काम पूरा कर लेंगे और पंचफूल रानी से शादी कर पायेंगे। पर अगर आप यह नहीं कर पाये तो इसमें हम आपकी कोई सहायता नहीं कर पायेंगे।"

राजकुमार बोला — "तुम ठीक कह रहे हो। मैं अब अपने उन पाठों को काम में लाने की कोशिश करूँगा। इस बीच तुम लोग यहीं ठहरो जब तक मैं वापस आता हूँ।"

ऐसा कह कर वह शहर चला गया। वह वहाँ रात ढलते ढलते पहुँचा। वह वहाँ पहुँचा जहाँ राजकुमारी का घर था यह देखने के लिये कि वह वे चौदह बाधाओं को पार कर सकता है या नहीं।

वह बहुत ही बहादुर था। उसने सात गड्ढे पार कर लिये और सात हैजैज़ में से छह हैजैज़ पार कर लीं। पर जब वह सातवीं हैज पार करने के लिये भाग रहा था तो उसके पैर में चोट लग गयी। इससे वह काँप गया और भाले की नोक पर गिर गया और मर गया।

उस सुबह जब पंचफूल के माता पिता उठे और उन्होंने बाहर अपनी बेटी के घर की तरफ देखा जैसे कि वे रोज उठ कर देखा करते थे तो उन्होंने देखा कि सातवीं हैज पर कुछ लटका हुआ है। वे इतनी दूर से यह नहीं जान सके कि वह क्या चीज़ थी क्योंकि वह चीज़ उनकी ऑखों को चौंधिया रही थी।

सो उन्होंने अपने वजीर को बुलाया और उससे कहा — "कुछ दिनों से मैंने किसी को पंचफूल को पाने के लिये गड्ढे और हैजैज़ को लॉघते नहीं सुना पर आज यह क्या है जो उसके सातवें हैज पर लटका पड़ा है।"

वजीर बोला — "वह एक राजा का बेटा है जो उन सबकी तरह से उन्हें लॉघने में नाकामयाब रहा है जिन्होंने उससे पहले उन्हें लॉघने की कोशिश की थी।"

राजा बोला — "पर यह क्या है जो हमारी ऑखों को चौंधिया रहा है।"

वजीर बोला — "यह उसकी सुन्दरता की चमक है क्योंकि वह बहुत सुन्दर है। और जो पहले उसको पाने की कोशिश में मर चुके हैं उन सबमें यह सबसे ज़्यादा सुन्दर है।"

राजा दुखी हो कर बोला — "ओह। मेरी बेटी ने कितने सारे बहादुर लोग मार दिये हैं। मैं अब किसी और को उसके लिये मरने नहीं दे सकता। मेरी बेटी को और इस मरे हुए आदमी को दोनों को साथ साथ जंगल भिजवा दो।"

तब उसने अपने नौकरों से कहा कि वे राजकुमार के शरीर को वहाँ लायें। उसको वहाँ ला कर लिटा दिया गया। उसके चारों तरफ चाँदनी सी फैल रही थी पर उसके अन्दर ज़िन्दगी की कोई चिनगारी नहीं थी।

राजा ने जब उसे देखा तो उसके मुँह से निकला — "उफ़। इतने सुन्दर और बहादुर लड़के को इस लड़की के पीछे मरने के लिये यहाँ आना पड़ा। फिर भी यह तो उन हजारों में से एक ही है न जो इस लड़की के लिये मर चुके हैं।"

फिर उसने अपने नौकरों से कहा कि वे सातों हैजैज़ के सारे भालों को निकाल कर सातों गड्ढों में फेंक दें। अब वे वहाँ नहीं रहेंगे।"

तब उसने दो पालकियाँ सजाने का हुक्म दिया और उन आदमियों को तैयार रहने का हुक्म दिया जो उनको ले जायेंगे। उसने कहा — "लड़की की शादी इसी राजकुमार से कर दो और इन दोनों को जंगल ले जा कर छोड़ दो ताकि हम इनके बारे में फिर कुछ न सुन सकें। तभी राज्य में शान्ति रह सकेगी।"

पंचफूल रानी की माँ इस बात पर बहुत ज़ोर ज़ोर से रोयी क्योंकि वह अपनी बेटी को बहुत प्यार करती थी। उसने अपने पति से बार बार प्रार्थना की कि वह उसे इतनी बेदर्दी से एक मरे हुए के साथ रहने के लिये जंगल न भेजे पर राजा उसकी बिल्कुल नहीं सुन रहा था।

उसने कहा जब इतने सारे लोग मर गये। यह इतना सुन्दर लड़का बेचारा मर गया तो मेरी बेटी को भी मर जाने दो। अब मैं अपने राज्य में उसके लिये किसी और आदमी को नहीं मरने दूँगा।

सो दो पालकियाँ तैयार की गयीं। एक पालकी में उसने अपनी बेटी को बिठाया और दूसरी पालकी में उसने मरे हुए राजकुमार का शरीर रखा अऔर पालकी उठाने वालों से कहा — "इन दोनों पालकियों को जंगल में इतनी दूर ले जाओ जहाँ कोई चिड़िया भी पर नहीं मारती हो और इन दोनों को वहीं छोड़ दो।"

उन्होंने वैसा ही किया। वे उनको गहरे जंगल में ले गये जहाँ सूरज की रोशनी भी नहीं आती थी किसी आदमी की आवाज नहीं सुनायी देती थी। किसी भी आबादी से बहुत दूर जहाँ ज़िन्दा रहने का कोई साधन नहीं था। वहाँ बहुत सारे जंगली जानवर थे।

उन्होंने वे दोनों पालकियाँ वहाँ रखीं और उन्हें वहाँ जंगल की आधी रातों की भयानकता का सामना अकेले करने के साथ छोड़ दिया – एक ज़िन्दा आदमी और एक मरा हुआ आदमी। वहाँ उसकी सहायता के लिये भी न तो कोई था और न कोई पहुँच सकता था।

पंचफूल रानी ने पालकी लाने वालों के जाते हुए कदमों की आवाज सुनी और फिर बाद में तो उनके बात करने की आवाज भी धीरे धीरे हल्की पड़ती गयी। उसको लगा कि बस अब उसके लिये मौत के सिवा और कोई चारा नहीं है।

रात जल्दी ही होती नजर आ रही थी क्योंकि सूरज की रोशनी के अन्दर आने का कोई रास्ता ही नहीं था। जंगल इतना अँधेरा था कि अगर ज़रा सी भी रोशनी होती तो वह वह उसमें तीर की तरह दिखायी देती।

उसने सोचा कि वह कम से कम आखिरी बार उस आदमी को तो देख ले जो उसकी प्रतिज्ञा की वजह से मर गया और जिसकी वजह से उसे यहाँ आना पड़ा। वह वहाँ उसके पास बैठी बैठी तब तक इन्तजार करेगी जब तक वह भी न मर जाये। या फिर कोई जंगली जानवर जल्दी से उसका अन्त न कर दे।

सो उसने अपनी पालकी छोड़ी और अपने पति की पालकी की तरफ गयी। वहाँ वह आँखें बन्द किये होठों को कस कर बन्द किये लेटा हुआ था। उसके बाल काले और घुँघराले थे जो उसकी पगड़ी में से बाहर निकल कर चेहरे पर छितरा गये थे जिससे उसकी कनपटी का घाव छिप गया था।

उसके चेहरे पर दर्द का कोई भाव नहीं था। उसकीं लम्बी घनी पलकें कुछ ऐसा भाव दिखा रहीं थी जैसे वह अभी भी ज़िन्दा हो। उसको विश्वास ही नहीं हो रहा था कि वह ज़िन्दा नहीं था। वह सचमुच में बहुत सुन्दर था।

उसकी तरफ देखते हुए उसने सोचा "ओह कितना सुन्दर और कितना कुलीन आदमी इस दुनियाँ से चला गया। धरती से उसकी एक खुशी चली गयी। क्या मैं इसी के लिये इतनी निर्दयी थी। क्या

मुझे इसी का घमंड था कि मैं अपनी ख़ुशी का प्याला अपने हाथों से तोड़ दूँ और तुम जैसे की मौत की वजह बनूँ।

अब तुम्हें कभी पता नहीं चलेगा कि तुमने अपनी पत्नी को जीत लिया है। अब तुम कभी अपनी पत्नी का माफी माँगना नहीं सुन पाओगे। न उसकी इस निर्दयी सजा के बारे में जान पाओगे। आह काश तुम ज़िन्दा होते तो मैंने तुम्हें कितना प्यार किया होता।"

यह कहते कहते वह जमीन पर बैठ गयी। उसने अपना चेहरा अपने हाथों में छिपा लिया और ज़ोर ज़ोर से रोने लगी।

जब वह यह सब कर रही थी तभी जंगल के ऊपर रात छा गयी। सब जंगली जानवर शिकार की खोज में अपने अपने घरों से बाहर निकल आये। पंचफूल रानी के आसपास बहुत सारे जानवर घूम रहे थे।

वे एक एक कर के पंचफूल रानी के पास तक आ रहे थे पर वे उसको कोई नुकसान नहीं पहुँचा रहे थे क्योंकि वह इतनी सुन्दर थी कि वे इतने निर्दयी होने के बावजूद उसको नुकसान पहुँचाने की सोच भी नहीं सकते थे।

आखिर सुबह के चार बजे सारे जानवर वहाँ से चले गये सिवाय दो छोटे गीदड़ों के। वे यह सब देखने में और चीतों द्वारा लायी गयी हड्डियों को उठाने में ही लगे हुए थे। वे भी अब थक गये थे सो वे दोनों भी पालकियों के पास लेट गये। तब गीदड़ी ने गीदड़ से कहा कि वह उसे कोई छोटी से कहानी सुनाये।

गीदड़ बोला — “प्रिये। तुम लोग कहानी के पीछे ही क्यों पड़ी रहती हो। उन दोनों को देख रही हो न?”

“हॉ देख रही हूॅ। तो क्या।”

“वह लड़की जिसे तुम जमीन पर बैठी देख रही हो वह पंचफूल रानी है।”

“और वह राजा का बेटा जो पालकी में है।”

गीदड़ बोला — “वह तो एक राजा का बहुत ही अभागा बेटा है। इसका पिता इसके लिये इतना बेरहम था कि यह घर छोड़ कर भाग गया और अपने देश से बहुत दूर एक और देश में जा कर रहने लगा।

वहॉ इसने सपने में पंचफूल रानी को देखा तो उससे शादी करने की इच्छा से यहॉ आया पर बेचारा जब भालों की सातवीं हैज पर से कूद रहा था तो मारा गया। इस तरह इसको पाने के लिये इसने मौत ली।”

गीदड़ी बोली — “यह तो बड़े दुख की बात है पर क्या कोई ऐसा उपाय नहीं है जिससे वह ज़िन्दा हो सके।”

गीदड़ बोला — “हॉ है तो। अगर वह इससे ज़िन्दा हो सके तो। अगर किसी को पता हो कि ठीक दवा को इसके ऊपर कैसे इस्तेमाल करना है।”

गीदड़ी ने पूछा — “और वह ठीक दवा क्या है और उससे यह कैसे ठीक हो सकता है।”

पंचफूल रानी उन दोनों की बातें बड़े ध्यान से सुन रही थी। पर जब उसने यह सवाल सुना तब तो वह और भी ज़्यादा कान लगा कर सुनने की कोशिश करने लगी।

गीदड़ बोला — "वह पेड़ देख रही हो न। उसकी कुछ पत्तियों को कुचल लिया जाये अैर उसके रस की कुछ बूँदें उसके दोनों कानों में डाल दी जायें, कुछ उसके ऊपर वाले होठ पर लगा दी जायें, कुछ उसकी कनपटियों पर मल दी जायें और कुछ उसके शरीर पर लगे भाले के घावों में डाल दी जायें तो वह फिर से ज़िन्दा हो जायेगा और ऐसा तन्दुरुस्त हो जायेगा जैसा पहले था।"

अब सुबह हो गयी थी। वे गीदड़ भी वहॉ से भाग गये थे। पंचफूल रानी अभी उनकी बात नहीं भूली थी। वह जिसने कभी जमीन पर पैर नहीं रखा था वहॉ की खुरदरी जमीन और पथरीले रास्ते पर चल कर उस पेड़ के पास गयी जो रात में गीदड़ ने बताया था।

वहॉ से उसने कुछ पत्तियॉ तोड़ीं फिर उन्हें अपने हाथों और पैरों से कुचल कर उसका कुछ रस निकाला। वे इतनी सख्त और कड़ी थीं कि उनका रस निकालने में उसे उसको कुछ समय लग गया। आखिर उनको किसी तरह तोड़ कर कुचल कर उसने अपनी साड़ी के पल्लू में बॉध लिया।

फिर उसमें दबा दबा कर थोड़ा सा रस उसने राजकुमार की कनपटी पर लगया होठ पर लगाया कानों में डाला घावों पर

लगाया। उसने यह सब अभी किया ही था कि वह ऐसे जाग कर बैठ गया जैसे किसी लम्बी नींद से जाग कर उठा हो। उसको आश्चर्य हो रहा था कि वह है कहाँ।

उसके सामने पंचफूल रानी एक सितारे की तरह चमकती खड़ी थी और उनके चारों तरफ अँधेरा जंगल था।

यह कहना बहुत मुश्किल था कि उन दोनों में से कौन ज़्यादा खुश था – राजकुमार या राजकुमारी। राजकुमारी को तो इस बात का आश्चर्य था कि गीदड़ की बतायी हुई दवा इतनी जल्दी कैसे काम कर गयी तो उसको तो विश्वास ही नहीं हो रहा था कि राजकुमार उसके सामने ज़िन्दा खड़ा था।

वह जब मरा हुआ था तब ज़्यादा सुन्दर लग रहा था या अब ज़िन्दा हो कर ज़्यादा सुन्दर लग रहा था – जीता जागता हिलता डुलता और ताकतवर।

उधर वह यह सोच रहा था कि उसके सामने जो लड़की खड़ी थी उसकी सुन्दरता कितनी लाजवाब है। उसको तो यही पता नहीं था कि वह है कौन क्योंकि उसको तो उसने पहले कभी देखा नहीं था। उसको केवल एक बार उसने बस सपने में देखा था।

क्या यह वही पंचफूल रानी है जिसकी दुनियाँ में इतनी चर्चा है या फिर वह अभी भी कोई सपना देख रहा है। वह तो इस डर से हिलने में भी डर रहा था कि उसका यह जादू कहीं टूट न जाये।

पर उसको आश्चर्य में डूबा बैठा देख कर पंचफूल रानी बोली — "तुम सोच रहे होगे कि यह सब क्या है। तुम मुझे नहीं जानते। मैं पंचफूल रानी हूँ – तुम्हारी पत्नी।"

तब वह बोला — "ओह तो यह तुम हो पंचफूल रानी। तुम मेरे साथ बड़ी कठोर थीं।"

"हॉ मुझे मालूम है। मैं ही तुम्हारे मरने की वजह थी पर देखो मैंने ही तुम्हें ज़िन्दा कर लिया। अब बीती बातें भूल जाओ और मेरे साथ मेरे घर चलो। मेरे माता पिता तुम्हारा अपने बेटे की तरह से स्वागत करेंगे।"

राजकुमार बोला — "नहीं। पहले मुझे अपने घर जाना होगा। बल्कि तुम भी मेरे साथ मेरे घर चलो क्योंकि मुझे अपना घर छोड़े बहुत दिन हो गये हैं। उसके बाद हम तुम्हारे पिता के घर आ जायेंगे।"

पंचफूल राजी हो गयी। जंगल से बाहर निकलने में उन्हें बहुत देर लग गयी। आखिर उनको रास्ता मिल ही गया। वे इतने सुन्दर और शाही लग रहे थे कि किसी जंगली जानवर ने भी उनको परेशान नहीं किया।

जब वे बरगद के पेड़ के पास पहुँचे जहॉ राजकुमार ने अपने तोते छोड़े थे वे तोते उसे देखते ही चिल्ला पड़े — "अरे आप आ गये। हमको लगा कि आप कभी नहीं आयेंगे क्योंकि आपको गये तो बहुत दिन हो गये थे।

आप तो हमको यहाँ अकेले छोड़ कर वहाँ चले गये थे। वहाँ जा कर भी आपने कोई बहुत अच्छा नहीं किया केवल अपने आपको मार लिया। आपने वैसा ही क्यों नहीं किया जैसा कि हमने आपसे करने के लिये कहा था। आप ठीक से कूदे क्यों नहीं।"

राजकुमार बोला — "मुझे यकीन है कि तुम्हारा मामला बहुत मुश्किल है। पर मैं तुमसे तुमको यहाँ अकेले इतने दिनों के लिये छोड़ने के लिये माफी माँगता हूँ। अब तुम मेरा और मेरी पत्नी दोनों का घर में स्वागत करो।"

तोते बोले — "वह तो हम करेंगे। पर पहले आप अपने लिये कुछ खाने का इन्तजाम कीजिये। सात समुद्र की यात्रा तो बहुत लम्बी है।" सो राजा पास के एक गाँव में गया और अपने और पंचफूल रानी के लिये खाना ले कर आया।

जब वह खाना ले कर लौटा तो उसने पंचफूल रानी से कहा — "मुझे तुम्हारे लिये इतनी लम्बी यात्रा से डर लगता है। अच्छा है कि तुम मुझे इस यात्रा पर अकेले ही जाने दो। जब यात्रा खत्म हो जायेगी तब मैं तुम्हारे पास लौट आऊँगा।"

पंचफूल रानी बोली — "नहीं। मैं अकेली कमजोर लड़की यहाँ क्या करूँगी। इसके अलावा जब तक तुम यहाँ वापस नहीं आ जाते तब तक मैं यहाँ से अपने पिता के घर भी नहीं जा सकती। तुम कितनी भी दूर जाओ मुझे अपने साथ ही ले चलो। बस मुझसे इतना वायदा करो कि तुम मुझे कभी छोड़ोगे नहीं।"

राजकुमार ने इस बात का वायदा किया और दोनों तोतों पर सवार हो कर सात समुद्र पार चल दिये। लाल सागर के भी उस पार चलते गये चलते गये। पूरे एक साल की यात्रा थी।

वे राजकुमार के पिता के राज्य में पहुँचे और महल के बराबर के बागीचे में उतर गये। राजकुमार को तो पता ही नहीं था कि वह हे कहाँ क्योंकि जबसे यानी बचपन से उसने महल छोड़ा था वह काफी बदल गया था।

तब राजकुमार के एक छोटा सा बेटा हुआ। वह बच्चा बहुत सुन्दर था। पर उसके पिता को यह चिन्ता थी कि वह ऐसी जगह अपने बेटे को कैसे पाले। माँ और बच्चे के लिये वहाँ कोई शरण की जगह नहीं थी।

सो उसने अपनी पत्नी से कहा — "मैं अपने दोनों के लिये खाना ले कर आता हूँ और साथ में उसे पकाने के लिये आग भी ले कर आता हूँ। मैं पूछता हूँ कि यह कौन सा देश है और तुम्हारे आराम के लिये जगह भी ढूँढता हूँ। तुम डरना नहीं मैं जल्दी ही लौटता हूँ।"

उसने कुछ दूरी पर धुआँ उड़ता देखा जो नटों और नाचने वालों के घरों से उठ रहा था तो वह उसी तरफ चल दिया। उसको लग रहा था कि उसे वहाँ से आग जरूर ही मिल जायेगी और शायद थोड़ा सा खाना भी।

जब वह वहाँ पहुँचा तो उसने देखा कि वह जगह तो उसकी आशा से कहीं ज़्यादा बड़ी थी। अच्छा खासा गाँव बसा हुआ था वहाँ। सारे घरों में लोग अपने अपने कामों में लगे हुए थे। कुछ नाच रहे थे कुछ गा रहे थे दूसरे लोग नटों की कलाऐं दिखा रहे थे या फिर ढोल बजाने का अभ्यास कर रहे थे। सब खुश थे।

जब नटों ने उसे देखा तो वे उसकी शक्ल सूरत देख कर बड़े आश्चर्य में पड़ गये क्योंकि वह तो बहुत सुन्दर था। उन्होंने तय किया कि अगर हो सका तो वह उसको अपने झुंड में मिला लेंगे और अपने पास रख लेंगे।

एक ने दूसरे से कहा — "यह आदमी नाचने वालों के लिये ढोल बजाता हुआ कितना अच्छा लगेगा। अगर हमारे पास ढोल बजाने के लिये इतना सुन्दर आदमी होगा तो सारी दुनियाँ हमारा नाच देखने आयेगी।"

अब राजा को उनके इरादों का तो पता नहीं था। वह उन झोंपड़ियों में से जो सबसे बड़ी झोंपड़ी उसे दिखायी दी उसी तरफ चल दिया।

वहीं एक स्त्री अनाज पीस रही थी। वह उससे जा कर बोला — "बाई जी। मुझे थोड़ा सा चावल दीजिये और अपने चूल्हे में से थोड़ी सी आग दीजिये।"

वह तुरन्त ही कुछ जलती हुई लकड़ियाँ लाने चली गयी पर इससे पहले कि वह उसे वे लकड़ियाँ उसे देती उसने और उसके

साथियों ने उसके ऊपर किसी तरह का बहुत ही असरदार जादू का पाउडर फेंक दिया।

तो जैसे ही राजकुमार ने वे लकड़ियाँ उसके हाथों से लीं तो वह अपनी पत्नी और बच्चे अपनी यात्रा और जो कुछ भी हुआ था सबके बारे में बिल्कुल भूल गया। वह जादू का पाउडर ऐसा ही था।

जब नटों ने उससे कहा — "तुम यहाँ से क्यों जाना चाहते हो। तुम हमारे पास ही रुको और हममें से एक हो जाओ।" राजकुमार ने हाँ कर दी।

इस सारे समय पंचफूल रानी अपने पति का इन्तजार करती रही पर वह तो आया ही नहीं। अब रात हो गयी थी और उसके लिये वहाँ कोई खाना नहीं था। उसके पास अपने और अपने बच्चे के रहने की जगह की भी कोई खबर नहीं थी। आखिर वह थकी हारी बेहोश हो गयी।

अब कुछ ऐसा हुआ कि उसी दिन राजकुमार की माँ का सबसे छोटा बच्चा मर गया – एक सुन्दर एक दिन का बच्चा। नौकर लोग उसके शरीर को बागीचे के नीचे की तरफ दफ़नाने के लिये ले जा रहे थे।

जब वे ऐसा कर ही रहे थे कि उन्होंने किसी की छोटी सी रोने की आवाज सुनी। तो उन्होंने चारों तरफ देखा तो उन्होंने देखा कि पास में ही एक बहुत सुन्दर स्त्री मरी पड़ी है और एक छोटा सा

बच्चा उसके पास पड़ा है तो उनके दिमाग में एक विचार आया। उन्होंने मरे हुए बच्चे को तो उस स्त्री के पास छोड़ा और उस ज़िन्दा बच्चे को उठा कर रानी के पास ले गये।

जब वे लौटे तो उन्होंने रानी से कहा कि उनका बच्चा मरा नहीं था ज़िदा ही था सो वे उसको वापस ले आये हैं। कह कर उन्होंने जो बच्चा बागीचे से उठाया था उसे उसको दे दिया।

कुछ समय बाद जब रानी ने उसके बारे में उनसे पूछताछ की तो उन्होंने उसे सब सच सच बता दिया। पर इस बीच वह इस बच्चे को इतना प्यार करने लगी थी कि उसने उसे महल में ही रख लिया। बच्चा वहीं रह कर रानी के अपने बच्चे की तरह से पलने बढ़ने लगा। सच में तो वह उसका अपना ही पोता था पर उसको यह बात मालूम नहीं थी।

इस बीच शाही माली की पत्नी फूल चुनने के लिये बागीचे में आयी जैसा कि उसका रोज का नियम था कि वह सुबह शाम बागीचे में फूल तोड़ने जाती थी। फूल ढूँढने के लिये वह बागीचे के नीचे तक आयी तो उसने देखा कि पास में ही एक स्त्री मरी जैसी पड़ी है और पास में एक मरा हुआ बच्चा लेटा हुआ है।

उस भली स्त्री को यह देख कर बहुत दुख हुआ। इस आशा में कि शायद इन उपायों से स्त्री होश में आ जाये उसने पंचफूल रानी के ठंडे हाथों को सहलाया और उसको खुशबूदार फूल सुँघाये। इससे कुछ देर में ही वह होश में आ गयी।

उठ कर उसने पूछा "मैं कहाँ हूँ। क्या मेरे पति अभी वापस नहीं आये। आप कौन हैं।"

माली की पत्नी ने कहा — "मैडम। मुझे नहीं मालूम कि आपके पति कहाँ हैं। मैं इस बागीचे की माली की पत्नी हूँ और रोज यहाँ फूल चुनने आती हूँ। अभी जब मैं फूल चुनने के लिये आयी तो मैंने आपको और इस बच्चे को यहाँ देखा जो मर गया है। पर आप मेरे घर आइये मैं आपकी देखभाल करूँगी।"

पंचफूल रानी बोली — "आपका बहुत बहुत धन्यवाद पर यह मेरा बच्चा नहीं है। मेरा बच्चा तो अपने पिता की शक्ल का था और इस बच्चे से कहीं ज़्यादा सुन्दर था।

लगता है कि मेरा बच्चा किसी ने ले लिया है क्योंकि अभी कुछ देर पहले तक तो यह ज़िन्दा था मैंने इसको गोद में ले रखा था। उस समय यह बिल्कुल ठीक था जबकि यह बच्चा तो बहुत ही कमजोर है। आप मुझे यहाँ से ले चलिये मैं आपके साथ आपके घर चलने के लिये तैयार हूँ।"

सो माली की पत्नी ने बच्चे को दफ़न कर दिया और पंचफूल रानी को अपने घर ले गयी। वहाँ वह **14** साल तक रही पर इतने सालों तक उसको अपने पति या खोये हुए बच्चे की कोई खबर नहीं मिली।

उधर बच्चा महल में बड़ा होता रहा और एक बहुत सुन्दर नौजवान बन गया

एक दिन वह बागीचे में घूम रहा था कि वह माली के घर के पास से गुजरा। पंचफूल रानी अन्दर बैठी हुई थी। बैठी बैठी वह माली की पत्नी को खाना बनाते देख रही थी।

नौजवान राजकुमार ने उसको देखा तो माली की पत्नी को आवाज लगायी और उससे कहा — "यह इतनी सुन्दर स्त्री तुम्हारे घर में कौन है और कहाँ से आयी।"

माली की पत्नी बोली — "छोटे राजकुमार। यह आप कैसी बातें कर रहे हैं। यहाँ तो कोई स्त्री नहीं है।"

राजकुमार ने फिर कहा — "मैंने देखा है कि यहाँ एक बहुत सुन्दर स्त्री है। जब मैं यहाँ से गुजर रहा था तब मैंने उसे देखा था।"

माली की पत्नी बोली — "अगर आपने मेरे घर के बारे में ऐसी कहानियाँ फिर से कहीं तो मैं आपकी जबान खींच लूँगी।"

क्योंकि उसने सोचा कि अगर मैंने इस बच्चे को नहीं डाँटा तो यह मेरे घर में जो इसने देखा है सारे महल में कह देगा। और फिर हो सकता है कि कुछ लोग पंचफूल रानी को मेरे घर से ले जायें।

पर जब माली की पत्नी छोटे राजकुमार से बात कर रही थी तो पंचफूल रानी चुपचाप से उस बच्चे को देखने के लिये और उनकी बातें सुनने के लिये वहाँ आ गयी।

जैसे ही उसने बच्चे को देखा तो वह चिल्लाये बिना न रह सकी — "ओह इस बच्चे की सूरत तो मेरे पति से कितनी मिलती जुलती

है। बिल्कुल वैसी ही ऑखें। बिल्कुल वैसा ही चेहरा। और वैसी ही शाही चाल। इसकी उम्र भी उतनी ही है जितनी कि मेरे बच्चे की होती अगर वह आज ज़िन्दा होता तो।"

नौजवान राजकुमार ने उसकी आवाज सुन ली थी सो उसने माली की पत्नी से पूछा कि वह क्या कह रही थी।

माली की पत्नी बोली — "यह स्त्री जिसे आपने देखा इसका बच्चा आज से **14** साल पहले खो गया था। यह कह रही है कि आप उसके बच्चे जैसे लगते हैं बल्कि वह सोच रही है कि आप ही उसके बच्चे हैं। पर वह गलत है क्योंकि हमें मालूम है कि आप तो रानी के बेटे हैं।"

इस पर पंचफूल रानी खुद घर से बाहर निकल कर आयी और छोटे राजकुमार से बोली — "छोटे राजकुमार। जब मैंने आपको देखा तो मैं यह कहे बिना न रह सकी कि आपकी शक्ल मेरे खोये हुए पति से मिलती है। और आप मेरे खोये हुए बेटे जैसे लगते हैं। आज उन दोनों को खोये हुए **14** साल बीत गये हैं।"

फिर उसने छोटे राजकुमार को बताया कि वह भी कभी एक राजकुमारी थी। वह अपने पति के साथ अपनी ससुराल जा रही थी कि इस महल के पहुँचने के बीच रास्ते में ही एक जंगल में उसका बेटा पैदा हुआ।

उसका पति उनके लिये खाना आग और रहने की जगह ढूँढने गया पर अभी तक नहीं लौटा। फिर वह कैसे बेहोश हो गयी और

कैसी उसी बेहोशी में किसी ने उसका बच्चा चुरा लिया और उसकी जगह मरा हुआ बच्चा रख दिया। और फिर कैसे माली की पत्नी उसको अपने घर ले आयी। तबसे वह यहीं रह रही है।"

अपनी कहानी कहने के बाद वह ज़ोर ज़ोर से रोने लगी।

छोटा राजकुमार बोला — "अब आप खुश हो जाइये। मैं आपके पति और बच्चे दोनों को ढूँढने की कोशिश करूँगा। क्योंकि कौन जानता है कि कहीं मैं ही आप का बेटा न होऊँ।"

कह कर वह अपने घर भाग गया और जा कर रानी से पूछा — "माँ मुझे सच सच बताओ कि क्या मैं सचमुच आपका ही बेटा हूँ। माँ मैं शाम होने से पहले पहले यह जानना चाहता हूँ।"

रानी बोली — "अरे बेटे। यह तुम आज कैसी बात कर रहे हो। क्या मैंने तुम्हे बेटे जैसा प्यार नहीं किया।"

"पर फिर भी मुझे यह बात सचमुच बताओ कि क्या मैं आपका अपना बच्चा हूँ। या किसी और का हूँ या फिर आपका गोद लिया हूँ। अगर आप मुझे सच सच नहीं बतायेंगी तो मैं अपने आपको मार लूँगा।" कह कर उसने अपनी तलवार निकाल ली।

यह देख कर रानी चिल्लायी — "रुको रुको। मैं तुम्हें सच सच बताती हूँ। तुम्हारे पैदा होने से एक दिन पहले मैंने एक बच्चे को जन्म दिया पर वह तभी मर गया। मेरे नौकर लोग उसे दफ़नाने के लिये बागीचे के नीचे की तरफ गये। वहाँ उन्होंने एक सुन्दर स्त्री को देखा जो मरे जैसी पड़ी थी।

और उसके पास एक बच्चा लेटा हुआ था जो तभी तभी पैदा हुआ था। तुम वह बच्चे थे। वे तुम्हें महल ले आये और मैंने तुम्हें अपना बेटा बना लिया। मेरे बच्चे को वे तुम्हारी जगह रख आये।"

"तब मेरी माँ का क्या हुआ।"

रानी बोली — "मुझे नहीं पता क्योंकि दो दिन के बाद ही मैंने अपने नौकरों को फिर उसी जगह भेजा पर तब तक वह स्त्री और वह बच्चा दोनों ही गायब हो चुके थे। और उसके बाद मैंने उसके बारे में फिर कभी नहीं सुना।"

यह सुन कर छोटा राजकुमार बोला — "माँ। अपने बड़े माली के घर में एक बहुत सुन्दर स्त्री है जिसे उसने **14** साल पहले बागीचे में पाया था। वही मेरी माँ होनी चाहिये। माँ। उनको यहाँ आदर के साथ महल में बुला लो। क्योंकि यही एक तरीका है जिससे हम उनका कुछ बदला उतार सकते हैं।"

रानी राजी हो गयी। छोटा राजकुमार अपनी माँ को महल लाने के लिये बड़े माली के घर खुद गया। वह अपने साथ काफी लोगों को ले गया। बहुत सुन्दर और कीमती कपड़ों से ढकी हुई एक पालकी ले गया। अपनी माँ के लिये कीमती कपड़े और गहने ले गया और माली की भली पत्नी के लिये बहुत सारी भेंटें ले गया।

जब पंचफूल रानी ने अपने बेटे की लायी चीज़ें पहनी और वह उससे मिलने के लिये गरीब माली के घर से बाहर निकली सब लोग बोल पड़े कि उन्होंने इतनी शाही रानी पहले कभी नहीं देखी।

जैसे सोना और साफ स्फटिक बहुत सुन्दर होते हैं जैसे सीपी बहुत सुन्दर होती है इतनी ही सुन्दर और कोमल पंचफूल रानी भी थी।

उसका बेटा उसको बड़ी शानो शौकत से महल में ले गया और उसके बस में जितना था उसे उतने ही मान सम्मान के साथ रखा। वहाँ वह काफी समय तक खुशी खुशी रही।

X X X X X X X

एक दिन छोटे राजकुमार ने उससे फिर से अपनी कहानी शुरू से सुनाने की विनती की कि वह अपनी ज़िन्दगी के बारे में उसे बताये और जितना वह उसके पिता की ज़िन्दगी के बारे में जानती है वह भी उसे बताये। उसने ऐसा ही किया।

कहानी सुनने के बाद उसने अपनी माँ से कहा कि वह उसके पिता के बारे में दुखी न हो। वह चारों तरफ अपने नौकर भेजेगा जो उसके पिता के बारे में पता लगा कर लायेंगे। हो सकता है कि हम आखीर में उनके बारे में कुछ खबर पा ही लें।

और उसने बहुत सारे नौकरों को सारे राज्य में अपने पिता की खोज में भेज दिया – उत्तर पूर्व पश्चिम दक्षिण। पर वह उनको कहीं नहीं मिला।

आखिर चार साल की असफल खोज के बाद जब कुछ ऐसा लगने लगा कि अब वह नहीं मिलेगा और उसके मिलने की सारी

आशाऐं खत्म हो गयीं तो पंचफूल रानी का बेटा उससे मिलने आया और बोला — "मॉ मैंने अपने लोगों को अपने पिता जी की खोज में चारों तरफ भेजा पर उनके बारे में कुछ भी पता नहीं चला।

अगर मुझे ज़रा सा भी इसका इशारा मिल जाता कि वह किस दिशा में गये थे तो अभी भी उनकी खबर मिलने का मौका है। पर इस बात का पता कैसे चले।"

पंचफूल रानी बोली — "जब तुम्हारे पिता मेरे पास से गये थे तो वह कह रहे थे कि 'मैं खाना और उसको पकाने के लिये आग लेने जाता हूॅ और यह जानने के लिये जाता हूॅ कि यह कौन सा देश है और यहॉ मुझे कोई रहने के लिये जगह मिल सकती है या नहीं। तुम डरना नहीं मैं जल्दी ही वापस लौटूॅगा।"

बस इतना कह कर वह चले गये थे। उसके बाद मैंने उनको फिर नहीं देखा।"

राजकुमार ने पूछा — "वह वहॉ से किस दिशा में गये थे।"

पंचफूल रानी बोली — "वह एक छोटे से गॉव की तरफ गये थे जहॉ कुछ नट लोग रहते थे। मुझको लगा कि वह उनसे कुछ खाना मॉगने गये थे पर अगर उनको वहॉ कुछ मिल गया होता तो वह तुरन्त ही लौट कर जरूर आ जाते।"

छोटा राजकुमार फिर बोला — "मॉ क्या आप अगर उन्हें दोबारा देखेंगी तो पहचान जायेंगी।"

"हॉ मैं पहचान जाऊॅगी।"

“हालाँकि अब आपको उन्हें देखे हुए 18 साल बीत गये हैं। चाहे वह अब बड़े हो गये हों या बीमार हो गये हों या कमजोर हो गये हों फिर भी?”

पंचफूल रानी बोली — “हाँ तब भी। उनका सब कुछ मेरे दिमाग पर इतना साफ लिखा है कि मैं उनको कहीं भी और किसी भी रूप में पहचान लूँगी।”

“ठीक है। तब मुझे नौकरों को उस दिशा में भेजना चाहिये जिस दिशा में नटों के मकान हैं। हो सकता है कि उन्होंने उनको रोक लिया हो। हालाँकि यह एक इत्तफाक है फिर भी कम से कम हम कोशिश तो कर के देख ही सकते हैं।”

सो पंचफूल रानी और छोटे राजकुमार ने नटों के गाँव में यह समाचार भेजा कि उस दिन उनके झुंड के सभी लोग महल में आयें। यानी कोई भी आदमी गाँव में न बचे।

सारे नट आये और राजा के महल में आ कर नाचने गाने लगे। कुछ कूद रहे थे कुछ ऊपर थे कुछ नीचे थे कुछ चारों तरफ घूम घूम कर अपनी कला दिखा रहे थे। उन सबके बीच में फटे कपड़े पहने एक आदमी था जो ढोल बजा रहा था।

जैसे ही पंचफूल रानी ने उसे देखा तो बोली — “बेटा यह तुम्हारे पिता हैं।”

“क्या माँ। वह गन्दा सा दिखायी देने वाला आदमी जो ढोल बजा रहा है।”

मॉ बोली — "हॉ बेटा वही हैं।"

छोटे राजकुमार ने तुरन्त ही अपने आदमियों से कहा कि वह ढोल बजाने वाले को पकड़ कर उसके पास ले आयें। राजकुमार को पकड़ कर छोटे राजकुमार के पास लाया गया।

कोई उसको नहीं पहचान सका – उसकी अपनी मॉ भी नहीं। सिवाय उसकी अपनी पत्नी के। वह **18** साल से नाच वालों के बीच में रहा था।

उसके बाल बहुत सख्त हो गये थे। उसकी दाढ़ी बढ़ गयी थी। उसका चेहरा धूप से काला और बहुत पतला हो गया था। उस पर झुर्रियॉ पड़ गयी थीं। उसने नाक में एक छल्ला पहन रखा था जैसा कि नाच वाले लोग पहनते हैं। उसकी पोशाक भी मोटे कम्बल की सी थी। उसकी सुन्दरता के सारे निशान मिट गये थे।

उन्होंने उससे पूछा कि क्या उसे याद है कि वह कभी राजा था और पंचफूल रानी के देश गया था। उसने कहा कि उसको कुछ याद नहीं था। उसे केवल ढोल बजाना ही याद था। उसको लगा कि वह तो अपनी सारी ज़िन्दगी ढोल ही बजाता रहा है।

तब छोटे राजकुमार ने हुक्म दिया कि सारे नाच वालों को जेल में डाल दिया जाये जब तक यह पता नहीं चल जाये कि किन हालातों में उन्होंने उसके पिता को इन हालात में रहने के लिये मजबूर किया था।

फिर उसने अपने राज्य के सबसे अक्लमन्द डाक्टरों को बुलवाया और उनसे कहा कि वे अपनी पूरी कोशिश करके उनकी तन्दुरुस्ती को फिर से वापस लाने की कोशिश करें।

ऐसा लगता था कि राजकुमार की याद और तर्क करने की ताकत दोनों ही चली गयी थीं। सो छोटे राजकुमार ने उनसे कहा कि वे अगर पता कर सकते हों तो यह भी पता करें कि इसकी वजह क्या थी।

डाक्टरों ने कहा कि उन्हें इस बात का पूरा यकीन था कि उनके ऊपर कोई जादू टोना किया गया था जिसने उनकी याद और तर्क करने की ताकत दोनों पर असर डाला था पर हम अपनी पूरी कोशिश करेंगे कि हम उन्हें वापस ले आयें।

और उन्होंने ऐसा ही किया। उन्होंने राजकुमार का कुछ दिनों तक इलाज किया जिसके बाद उसकी याद और तर्क करने की ताकत वापस आ गयी। उन सबने इस बीच उनकी इतनी अच्छी देखभाल की कि बहुत जल्दी वह पूरी तरह से तन्दुरुस्त हो गये।

उसको यह जान कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि पंचफूल रानी और उसका बेटा कितने सालों से उसके पिता के राज्य में ही रह रहे थे। उसका पिता उसे फिर से देख कर इतना खुश हुआ कि अब वह उसके लिये बिल्कुल भी निर्दयी नहीं रह गया था। अब वह उसका बहुत प्यारा बेटा हो गया था जो उसे बहुत दिनों के बाद मिला था।

उसकी माँ भी बहुत खुश थी। उन्होंने उससे कहा — "क्योंकि तुम हमें बहुत दिनों बाद मिले हो तो अब तुम्हें इधर उधर क्यों घूमना चाहिये। तुम्हारी पत्नी और बेटा भी यहाँ है तो अब तुम भी यहीं रहो और पूरी ज़िन्दगी यहीं रहो।"

राजकुमार बोला — "पर मेरी एक और पत्नी है – एक बढ़ई की बेटी जिसने मुझे अपने देश में रहने में बहुत ही सहायता की। इसके अलावा मेरे वहाँ **998** बोलने वाले तोते भी हैं जो मेरे लिये बहुत कीमती हैं। आप पहले मुझे वहाँ जाने दें और उनको लाने दें।"

उन्होंने कहा — "ठीक है तुम वहाँ जाओ और उन्हें ले कर आओ।"

सो वह अपने दोनों लकड़ी के तोतों पर सवार हुआ जो उसको और पंचफूल रानी को उसके देश से यहाँ लाये थे और **18** साल से महल के पास वाले पेड़ पर रह रहे थे और उस देश में आया जहाँ उसकी पहली पत्नी रहती थी। वहाँ से वह अपनी पत्नी और तोतों को ले कर अपने पिता के राज्य ले आया।

उसके पिता ने उससे कहा — "देखो मेरे बाद तुम अपने सौतेले भाई से लड़ना नहीं।" यह लड़का राजा का उसकी प्रिय पत्नी से था।

राजा ने फिर कहा — "मैं तुम दोनों को बहुत प्यार करता हूँ इसलिये मैं अपना राज्य तुम लोगों में आधा आधा बाँटता हूँ।" कह

कर उसने अपना आधा राज पंचफूल रानी के पति को दे दिया और दूसरा आधा उसने अपने दूसरे बेटे को दे दिया।

इस इन्तजाम के कुछ समय बाद पंचफूल रानी ने कहा — "अपने मरने से पहले मैं एक बार अपने माता पिता से मिलना चाहती हूँ।"

राजकुमार बोला — "ठीक है। तुम जाओगी मैं और हमारा बेटा भी तुम्हारे साथ जायेंगे।"

कह कर उसने अपने तोतों को बुलाया – दो तोते खुद और पंचफूल रानी के लिये और दूसरे दो तोते अपने बेटे को ले जाने के लिये।

तोतों के दोनों जोड़ों ने अपने अपने पंख जोड़े। एक जोड़े के पंखों पर राजकुमार और पंचफूल रानी बैठे और दूसरे जोड़े के पंखों पर छोटा राजकुमार बैठा और तोते उन सबको ले कर उड़ चले – लाल सागर पार सात समुद्र पार। जब तक वे पंचफूल रानी के देश पहुँचे।

पंचफूल रानी के पिता ने देखा कि कोई उनकी तरफ इतनी तेज़ उड़ कर आ रहे हैं जैसे कोई तारा भागा चला आ रहा हो। उन्होंने सोचा यह कौन हो सकता है सो उन्होंने अपने कई कुलीन और दरबारी लोग बाहर देखने के लिये भेजे।

वे सब बाहर गये और उनसे पूछा कि यह कौन राजा है जो इतनी शाही शान वाली पोशाक पहने हावा में इतनी तेज़ उड़ता हुआ चला आ रहा है। हमें बताओ ताकि हम अपने राजा को बता सकें।

राजकुमार ने कहा — "जा कर अपने राजा से कहो कि पंचफूल रानी का पति अपने ससुर से मिलने आ रहा है।"

यह सुन कर वे लोग अन्दर चले गये और राजा से यही जा कर कहा तो राजा को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ।

उसके मुँह से निकला — "इस बात का क्या मतलब है क्योंकि पंचफूल रानी का पति तो बहुत साल पहले मर गया। वह तो बालों की हैजैज़ लॉघते समय ही मर गया था फिर यह और कौन सा पति पैदा हो गया। खैर फिर भी जा कर देखो कि वास्तव में यह राजा है कौन।"

सो वह और उसके दरबारी फिर बाहर गये। तब तक तोते महल के फाटक के पास उतर गये थे। पंचफूल रानी ने एक हाथ में अपने बेटे का हाथ लिया और दूसरे हाथ में अपने पति का हाथ लिया और अपने पिता से मिलने के लिये आगे बढ़ी।

"पिता जी मैं आपसे मिलने के लिये फिर से आ गयी हूँ। ये मेरे पति हैं जो मर गये थे और यह लड़का मेरा बेटा है।"

पंचफूल रानी को फिर से देख कर सारा देश बहुत खुश था। लोग कह रहे थे — "हमारी राजकुमारी दुनियाँ में सबसे सुन्दर राजकुमारी है। और इसका पति भी इतना ही सुन्दर है जितनी सुन्दर

यह खुद है। इसका बेटा भी बहुत सुन्दर है। अब हमारी इच्छा है कि ये सब हमारे साथ ही रहें।”

जब उन लोगों ने थोड़ा आराम कर लिया तो पंचफूल रानी ने अपने माता पिता को उनके नौकरों द्वारा दोनों पालकियाँ जंगल में छुड़वाने से अब तक की अपनी सारी कहानी सुनायी।

जब उसने यह कहानी सुन ली तो उसने राजकुमार से कहा — “अब तुम यहाँ से बिल्कुल नहीं जाओगे क्योंकि देखो न मेरा तुम्हारे सिवा कोई बेटा नहीं है। मेरे बाद तुम और तुम्हारे बेटे को यहाँ राज करना चाहिये। अगर तुम मेरे साथ रहो तो मैं अभी तुम्हें अपना इतना बड़ा राज्य देता हूँ। क्योंकि मैं अब राज करने के लिये काफी बूढ़ा हो गया हूँ और थक गया हूँ।”

राजकुमार बोला — “पर पिता जी पहले मुझे अपने राज्य लौटना होगा उसके बाद फिर जब तक आप चाहेंगे तब तक मैं आपके पास रहूँगा।”

सो उसने पंचफूल रानी और अपने बेटे को बूढ़े राजा और रानी के पास छोड़ा अपने तोतों पर सवार हुआ और फिर एक बार अपने देश लौट कर आया।

उसने अपनी माँ से कहा — “माँ मुझे मेरे ससुर ने इससे भी दस हजार गुना बड़ा राज्य दिया है इसलिये मैं आपसे विदा लेने के लिये और अपनी पहली पत्नी को अपने साथ ले जाने के लिये लौट कर आया हूँ। अब मुझे उस दूसरे देश में ही रहना होगा।”

मॉ बोली — "बेटे जहॉ तुम खुश रहो वहीं में भी खुश हूॅ।"

उसके बाद उसने अपने सौतेले भाई से कहा — "मेरे ससुर ने पंचफूल रानी का देश मुझे दे दिया है जो बहुत दूर है। इसलिये अपने हिस्से का आधा राज्य मैं तुम्हें देता हूॅ।"

उसके बाद इसने अपने पिता से विदा ली और बढ़ई की बेटी को साथ ले कर अपने दोनों तोतों पर सवार हो कर पंचफूल रानी के देश वापस आ गया।

वहॉ आ कर वह अपनी दोनों पत्नियों और बेटे के साथ सारी ज़िन्दगी खुश खुश रहा।

10 जब सूरज चॉद और हवा खाना खाने गये[7]

एक दिन सूरज चॉद और हवा अपने चाचा चाची गरज और बिजली के घर खाना खाने गये। उनकी मॉ जो बहुत दूर एक तारा थी उनके वापस आने का इन्तजार करती रही।

अब सूरज और हवा तो दोनों बहुत ही लालची थे। उन्होंने उस खाने का पूरा आनन्द लिया जो उनके लिये बनाया गया था। उन्होंने यह भी नहीं सोचा कि थोड़ा सा खाना वे अपनी मॉ के लिये भी बचा लें।

पर चॉद बहुत भली थी वह अपनी मॉ को नहीं भूली। जो भी खाना उसको बहुत अच्छा लगा उसमें से थोड़ा सा उसने अपने एक लम्बे सुन्दर नाखून के नीचे रख लिया ताकि तारा भी उस स्वादिष्ट खाने का स्वाद ले सके।

जब वे लोग घर लौटे तो वह उनका अपनी चमकीली ऑख खोले रात भर इन्तजार कर रही थी बोली — "बच्चों तुम लोग मेरे लिये क्या लाये हो।"

सूरज जो सबसे बड़ा था बोला — "मॉ हम तो घर कुछ भी वापस ले कर नहीं आये। मैं तो केवल अपने दोस्तों के साथ आनन्द करने गया था न कि अपनी मॉ के लिये खाना लाने के लिये।"

---

[7] How the Sun the Moon and the Wind Went Out to Dinner. (Tale No 10).

हवा बोला — "और न मैं ही कुछ लाया तुम्हारे लिये। तुमको वहाँ से बहत सारी अच्छी अच्छी चीज़ें लाने की आशा भी नहीं करनी चाहिये। क्योंकि वहाँ तो मैं अपने आनन्द के लिये गया था तुम्हारे लिये खाना लाने नहीं।"

पर चाँद बोली — "माँ तुम अपने लिये एक प्लेट ले कर आओ। देखो मैं तुम्हारे लिये क्या ले कर आयी हूँ।" और अपने दोनों हाथों को हिलाते हुए उसने इतना अच्छे खाने की बारिश कर दी जैसा किसी ने पहले खाया नहीं होगा।

तारा सूरज की तरफ घूमी और बोली — "क्योंकि तुम अपने घर में छोड़ी हुई माँ का बिना कोई ख्याल किये हुए अपने दोस्तों के साथ केवल अपने आनन्द के लिये गये थे अपने खाने के लिये गये थे इसके लिये तुम्हें मेरी बद्दुआ मिलेगी।

आज से तुम्हारी किरनें हमेशा गर्म और जलाने वाली रहेंगी और हर उस चीज़ को जला देंगी जिनको भी वे छुऐंगी। लोग तुमसे नफरत करेंगे और जब भी तुम आसमान में दिखायी दोगे वे अपना सिर ढक लेंगे।"

और इसी लिये सूरज आज तक बहुत गर्म है।

फिर वह हवा की तरफ घूमी और बोली — "तुम भी जो अपने स्वार्थ में अपने आनन्द में अपनी माँ को भूल गये अब अपनी बदकिस्मती सुनो। तुम हमेशा गर्म और सूखे के मौसम में बहोगे और सब चीज़ों को सुखा दोगे। अभी से लोग तुमसे बचेंगे।"

इसी लिये हवा गर्म मौसम में भी अच्छी नहीं लगती।

पर चॉद से उसने कहा — "बेटी। तुमने अपनी मॉ को याद रखा और अपना आनन्द उसको भी बॉटा इसलिये तुम हमेशा शीतल और शान्त रहोगी और चमकती रहोगी। तुम्हारी किरनें कभी बहुत तेज़ नहीं होंगी और लोग तुम्हें हमेशा दुआऐं देंगे।"

और इसी लिये चॉद की किरनें आज भी हमेशा से बहुत मुलायम शीतल और सुन्दर रहती हैं।

11 सिंह राजा और छोटे चालाक गीदड़[8]

एक बार की बात है कि एक बड़े जंगल में एक बड़ा शेर रहता था। वह उस जंगल का राजा था। वह हर दिन अपनी मॉद में से निकलता और बहुत ज़ोर से दहाड़ता हुआ पहाड़ियों की तरफ चला जाता।

जब वह इस तरह से दहाड़ता तो जंगल के सारे जानवर जो उसकी प्रजा थे बहुत डर जाते और डर के मारे इधर उधर भाग जाते। पर सिंह राजा उनको किसी तरह दबोच ही लेता मार देता और उनको खा जाता।

यह सब बहुत दिनों तक चलता रहा। तब तक चलता रहा जब तक जंगल में कोई भी ज़िन्दा जानवर नहीं बचे सिवाय दो छोटे छोटे गीदड़ों के – एक राजा गीदड़ दूसरी रानी गीदड़ी – एक पति और पत्नी।

उन दोनों गीदड़ों का समय बड़ी मुश्किल से गुजर रहा था। वे हर समय उस भयानक शेर से इधर उधर बचते भागते रहते। रानी गीदड़ी रोज अपने पति से कहती — "मुझे बहुत डर लगता है। वह शेर हमें यकीनन किसी न किसी दिन पकड़ ही लेगा। ओह प्रिय। तुम कुछ करो न।"

[8] Singh Raja and Cunning Little Jackals. (Tale No 11).

राजा गीदड़ जवाब देता — "तुम बिल्कुल डरो नहीं। मैं तुम्हारी देखभाल कर रहा हूँ न। चलो एक दो मील भाग कर आते हैं। आओ जल्दी जल्दी आओ।" और फिर दोनों बहुत ज़ोर से भाग जाते।

इस तरह से कुछ दिन और निकल गये। पर एक दिन उन्होंने देखा कि शेर उनके इतना पास आ गया था कि वह आज उससे बच कर भाग नहीं सकते थे।

छोटी रानी गीदड़ी ने कहा — "प्रिय। मुझे बहुत डर लग रहा है। राजा शेर तो बहुत गुस्से में दिखायी दे रहा है आज तो वह यकीनन ही हमें खा जायेगा। अब हम क्या करें।"

राजा गीदड़ बोला — "प्रिये। तुम बिल्कुल नहीं डरो। खुश रहो। हम अभी भी इससे बचने की कोई तरकीब सोच सकते हैं। आओ चलो देखो कि हम इससे कैसे बचते हैं।"

सो इन चालाक गीदड़ों ने क्या किया कि वे उस बड़े शेर की माँद में गये। जब उस शेर ने इनको आते देखा तो वह बहुत ज़ोर से दहाड़ा और अपनी गर्दन के बालों को झटकने लगा।

वह बोला — "ओ नीच जानवरों आओ आज मैं तुम्हें खाऊँगा। मैंने तीन दिन से खाना नहीं खाया है। मैं इन सारे दिनों पहाड़ और घाटियों में घूमता रहा हूँ पर तुम लोगों का कहीं कोई पता ही नहीं था। आओ आओ आज मैं तुम्हें खाऊँगा।"

कह कर उसने अपनी पूँछ फटकारी और अपने दॉत किटकिटाये। वह सचनुच में बहुत ही भयानक लग रहा था।

तब राजा गीदड़ उसके पास पहुँचा और बोला — "हम सब जानते हैं कि आप ही हमारे मालिक हैं। हम तो आपके बुलाने पर पहले ही आ जाते पर इस जंगल में आपसे बड़ा भी एक राजा है। उसने हमको पकड़ कर खाना चाहा और हमको इतना डराया कि हमको यहॉ से भागना पड़ गया।"

सिंह राजा दहाड़ा — "यह तुम क्या कह रहे हो। मेरे सिवा इस जंगल में और कोई राजा नहीं है।"

गीदड़ बोला — "आह सर। सच में तो किसी को यही सोचना चहिये क्योंकि आप तो बहुत ही खूँख्वार हैं। पर है वैसा ही जैसा कि हम कह रहे हैं। क्योंकि हमने आज एक और शेर देखा है जिसे आप नहीं हरा सकते।

उसके आगे आप ऐसे ही है जैसे हम आपके सामने हैं। उसके मुँह से आग निकलती रहती है। जब वह चलता है तो उसके पैरों से बिजली सी चमकती है और वह बहुत ताकतवर है।"

बूढ़ा शेर बीच में ही बोला — "यह नामुमकिन है। जिस शेर के बारे में तुम इतना बड़ा बड़ा बोल रहे हो इस राजा को मुझे दिखाओ ताकि मैं उसे तुरन्त ही मार सकूँ।"

उस शेर को दिखाने के लिये गीदड़ और गीदड़ी दोनों वहॉ से एक कुँए की तरफ भाग

गये। वहाँ पहुँच कर उन्होंने उससे कहा कि वह शेर उस कुँए में छिपा बैठा है। सिंह राजा ने उसमें झाँका तो उसे उसमें अपनी परछाईं दिखायी दी जिसे देख कर वह बहुत गुस्सा हुआ।

वह उसको देख कर फिर दहाड़ा और अपनी गर्दन के बाल हिलाये और गुस्से में आ कर कुँए में कूद पड़ा। पर वहाँ तो कोई शेर नहीं था। वहाँ तो केवल उसकी परछाईं थी।

कुँआ बहुत गहरा था सो वह दोनों गीदड़ों को सजा देने के लिये उसमें से बाहर ही नहीं निकल सका। कुछ देर तक तो वह वहाँ से बाहर निकलने की कोशिश करता रहा पर फिर वहाँ बहुत देर रहने की वजह से मर गया।

छोटे गीदड़ों ने फिर उसमें ऊपर से पत्थर और फेंक दिये और बहुत देर तक कुँए के चारों तरफ नाचते रहे — "आहा जंगल का राजा मर गया। जंगल का राजा मर गया। हमने उसे मार दिया है अब हमें कौन मारेगा।

12 गीदड़, नाई और एक ब्राह्मण जिसके सात बेटियाँ थीं[9]

एक बार की बात है कि एक नाई और एक गीदड़ की बड़ी पक्की दोस्ती हो गयी जो आज तक चलती रह सकती थी अगर गीदड़ इतना होशियार न होता कि नाई अपने आपको उसके बराबर का न पाता तो। उसको लगा कि उसका दोस्त गीदड़ उससे बहुत सारी चालें खेल रहा है।

पर परेशानी यह थी कि वह इस बात को साबित नहीं कर पा रहा था।

एक दिन गीदड़ ने नाई से कहा — "हम लोगों के लिये यह अच्छा होगा अगर हमारा अपना एक बागीचा हो जिसमें हम चाहे जितना खीरा काशीफल और तरबूज उगायें। क्यों न हम लोग एक बागीचा खरीद लें।"

नाई बोला — "यह तो अच्छी बात है। यह लो ये पैसे लो और हमारे लिये एक बागीचा खरीद लो।"

गीदड़ ने नाई से पैसे लिये और उससे उसने एक बहुत ही अच्छा बागीचा खरीद लिया। उसमें खीरे काशीफल तरबूज अंजीर और बहुत से अच्छे अच्छे फल और सब्जियाँ लगे हुए थे।

[9] Jackal, Barber and the Brahman Who Had Seven Daughters. (Tale No 12).

अब वह वहाँ रोज जाता और मन भर कर सब्जी और फल खाता। एक दिन नाई ने पूछा — "वह बागीचा कैसा है जो तुमने उस पैसे से खरीदा था जो मैंने तुम्हें दिये थे।"

गीदड़ बोला — "ओह उसमें तो बहुत अच्छे अच्छे पेड़ पौधे हैं पर उनमें फल नहीं हैं। जब फल पक जायेंगे तब मैं तुम्हें बताऊँगा।"

नाई इस जवाब से सन्तुष्ट हो गया क्योंकि उसे इस समय इससे अधिक जानने की कोई जरूरत नहीं थी। कुछ दिनों बाद नाई ने अपने बागीचे के बारे में गीदड़ से फिर पूछा। उसने कहा — 'मैं देख रहा हूँ कि तुम रोज उस बागीचे में जाते हो। क्या वहाँ फल पक गये हैं।"

गीदड़ बोला — "नहीं दोस्त नहीं। वे अभी नहीं पके हैं। अभी तो पेड़ों पर फूल आने शुरू हुए हैं।"

पर इस बीच तो बागीचे में बहुत सारे फल आ चुके थे। गीदड़ वहाँ रोज़ जाता था और जितने खा सकता था उतने खा आता था। फिर कुछ हफ्ते निकल गये तीसरी बार नाई ने गीदड़ से फिर एक बार पूछा — "क्या अभी तक बागीचे के फल नहीं पके?"

गीदड़ बोला — "नहीं। अभी तो केवल उनके फूल ही नीचे गिरे हैं। पर हाँ अब फल आ रहे हैं। समय आने दो हम लोग बहुत सारे फल खायेंगे – तरबूज अंजीर।"

अबकी बार नाई को लगा कि गीदड़ उसको धोखा दे रहा है सो उसने खुद जा कर वहाँ देखने का निश्चय किया कि इसमें सचाई कितनी है। सो अगले दिन वह बिना किसी से कुछ कहे गीदड़ के पीछे चलता गया।

अब ऐसा हुआ कि उस दिन गीदड़ ने अपने बहुत सारे दोस्तों को बागीचे में दावत दी थी। आस पास के सभी जंगलों के जानवरों ने उसकी दावत स्वीकार कर ली थी और वे दर्जनों और सैंकड़ों में वहाँ आ रहे थे। वे सब बहुत खुश थे और खुशी खुशी इधर उधर घूम घूम कर तरबूज खीरे काशीफल और अंजीरें खा रहे थे।

नाई ने हैज के ऊपर से झाँका और वहाँ आये सारे जंगली जानवरों को देखा और गीदड़ को उनकी आवभगत करते देखा। कभी वह इसके साथ बात कर रहा था तो कभी वह उसके संग हँस रहा था और सबके साथ खा रहा था।

भले आदमी की हिम्मत नहीं हुई कि वह इतने सारे जानवरों को बीच में ही टोके क्योंकि वे बहुत सारे थे और बहुत ताकतवर थे सो बहुत गुस्सा हो कर बुड़बुड़ाता हुआ वह तुरन्त ही घर वापस गया "मैं इसकी मौत बनूँगा। अब वह मेरे बागीचे में मेरे साथ कोई चाल नहीं खेलेगा।" कहता हुआ वह अपने मौके का इन्तजार करने लगा।

जब गीदड़ और उसके दोस्त लोग चले गये तो वह वहाँ लौट कर गया और एक चाकू बचे हुए एक बड़े से खीरे पर बाँध आया और घर वापस आ गया। उसने जो कुछ वहाँ देखा उसके बारे में किसी से कुछ नहीं कहा।

अगली सुबह गीदड़ ने सोचा चलो मैं ज़रा बागीचे हो कर आता है शायद कोई खीरा या तरबूज बचा हो। सो वह वहाँ गया और सबसे बड़ा खीरा तोड़ कर खाने लगा। तुरन्त ही जो चाकू आदमी उसकी पत्तियों में छिपा कर आया था वह उछला और उसका गला और उसकी बगल काटता चला गया।

वह चिल्लाया — "ओह वह नीच नाई। यह जरूर उसी का काम होगा।" सो बजाय घर जाने के वह जंगल में भाग गया एक चौरस चट्टान पर लेट कर मरने की तैयारी करने लगा।

पर वह मरा नहीं। गर्दन और बगल का दर्द उसे पूरे तीन दिन तक परेशान करता रहा कि वह वहाँ से हिल भी न सका। क्योंकि उसका बहुत खून निकल गया था इसलिये वह बहुत कमजोरी भी महसूस कर रहा था।

तीसरे दिन शाम को उसने उठने की कोशिश की पर उसके अपने खून ने उसको चट्टान से चिपका दिया था। उसने काफी ज़ोर लगा कर उठाने की कोशिश की पर उठ नहीं सका।

वह बुड़बुड़ाया — "ओह। मुझे किसी तरह यहॉ से उठना चाहिये नहीं तो क्या मैं यहॉ इसी हालत में मर जाऊॅगा। यह मेरी बेईमानी का नतीजा है।" यह कह कर वह रोने लगा।

अब कुछ इत्तफाक ऐसा हुआ कि बारिश के देवता ने उसका यह दुखड़ा सुना तो उनको उस पर दया आ गयी सो उन्होंने बारिश भेज दी। बारिश ने पत्थर को गीला कर दिया और वह पत्थर से छूट गया।

जैसे ही गीदड़ चट्टान से छूटा तो उसने सोचना शुरू कर दिया कि वह अपनी जीविका कमाने के लिये क्या करे। अब वह नाई के पास तो वापस जा नहीं सकता था।

जल्दी ही उसके दिमाग में एक और प्लान आया। अभी अभी की बारिश ने चारों तरफ कीचड़ कर दी थी। उसने उसमें से थोड़ी सी कीचड़ एक बर्तन में रखी सावधानी से उसे पत्तों से ढका जैसे लोग मक्खन ढकते हैं और उसे पड़ोस के गॉव में बेचने के लिये ले चला।

वह पहले घर के दरवाजे पर गया जहॉ एक स्त्री खड़ी हुई थी। गीदड़ ने उससे कहा — "माई। देखो यह मक्खन है ताजा मक्खन। पर अगर तुम इस बर्तन को अभी अभी खोल दोगी तो जब तक तुम्हें इसको काम में लेना होगा तब तक यह खराब हो जायेगा इसलिये इसे तभी खोलना जब तुम्हें इसे इस्तेमाल करना हो।

अगर तुम इसे खरीदना चाहती हो तो खरीद लो नहीं तो मैं इसे किसी दूसरे को बेच दूँगा।"

स्त्री को ताजा मक्खन की जरूरत थी और वह बर्तन जिसमें गीदड़ वह मक्खन बेच रहा था और जो उसके सिर पर रखा हुआ था वह कस कर बॅधा हुआ था। ऐसा लग रहा था जैसे उसमें दुनियाँ का सबसे अच्छा और ताजा मक्खन रखा था।

उसको यह भी पता था कि अगर उसने उसे अभी खोल कर देखा तो जब तक उसका पति घर वापस आता है तब तक वह शायद बिगड़ जायेगा। इसके अलावा उसने यह भी सोचा कि अगर गीदड़ उसे धोखा देना चाहता तो वह उससे उसे खरीदने के लिये ज़ोर नहीं डालता।

सो उसने कहा — "ठीक है वह बर्तन मुझे दे दो और यह लो इसका पैसा लो। क्या तुम्हें पक्का विश्वास है कि यह सबसे अच्छा मक्खन है?"

गीदड़ बोला — "जी हॉ। यह सबसे अच्छा मक्खन है। बस इसे किसी ठंडी जगह में रखना और इस बर्तन को तब तक मत खोलना जब तक कि तुम्हें इसकी जरूरत न पड़े।"

इस तरह से पैसा ले कर गीदड़ वहॉ से यह जा और वह जा। कुछ ही देर में स्त्री को पता चल गया कि गीदड़ ने इसे धोखा दिया था तो वह बहुत गुस्सा हुई। पर गीदड़ तो उस समय तक बहुत दूर जा चुका था।

जब उसके ये पैसे खत्म हो गये तो फिर गीदड़ को परेशानी हुई कि अब वह पैसे कैसे कमाये। क्योंकि उसको अब कोई खाना नहीं दे रहा था और वह अपने आपसे कुछ खरीद नहीं सकता था।

उसकी खुशकिस्मती से तभी किसी गाँव वाले का एक बैल मर गया। गीदड़ ने उसे सड़क के किनारे पड़ा पाया। उसने उसे खाना शुरू कर दिया। उसने उसे इतना खाया इतना खाया कि वह उसके शरीर में इतना घुसता चला गया कि कोई आने जाने वाला उसको देख ही नहीं सका।

मौसम बहुत गर्म और सूखा था। जब गीदड़ उसके अन्दर था तो गर्मी से बैल की खाल इतनी कस कर सिकुड़ गयी कि उसको बैल का माँस खाना बहुत मुश्किल हो गया और उसके शरीर में से वह बाहर भी नहीं निकल सका।

कुछ देर बाद गाँव के भंगी लोग उसको दफ़नाने के लिये वहाँ आये तो गीदड़ तो उसके अन्दर था। गीदड़ को डर लगा कि अगर किसी ने उसको पकड़ लिया तो वह उसको मार देगा और अगर उनमें से किसी ने उसे नहीं देखा तो वह उसी के साथ दफ़ना दिया जायेगा।

सो जब वे उसके पास आये तो वह चिल्ला कर बोला — "लोगों ज़रा मुझे देख कर हाथ लगाना क्योंकि मैं एक बहुत बड़ा संत हूँ।"

जब उन्होंने एक मरे हुए बैल को बोलते हुए सुना तो वे बेचारे गरीब लोग बहुत डर गये। उनको लगा कि उसे किसी आत्मा ने जकड़ रखा था।

वे वहीं से चिल्लाये — "जनाब आप कौन हैं और आपको क्या चाहिये।"

गीदड़ बोला — "मैं एक बहुत ही पवित्र संत हूँ। मैं तुम्हारे गाँव का देवता भी हूँ। मैं तुम लोगों से बहुत गुस्सा हूँ क्योंकि तुम लोग मेरी पूजा नहीं करते और ना ही मुझे कोई चढ़ावा चढ़ाते हो।"

यह सुन कर वे भंगी बोले — "आपको हम क्या चढ़ावा चढ़ायें आपको क्या चाहिये। बस आप हमें बता दीजिये हम आपको वही ला कर दे देंगे।"

गीदड़ बोला — "ठीक है। तो तुम लोग मुझे बहुत सारा चावल ला कर दो बहुत सारे फूल लाओ और एक बड़ा सा मुर्गा ले कर आओ। उन सबको चढ़ावे के रूप में यहाँ मेरे पास रख दो। और उन पर बहुत सारा पानी डाल दो। जैसा कि तुम लोग अक्सर अपनी दावतों में करते हो और फिर मैं तुम्हारे पापों को माफ कर दूँगा।"

उन बेचारे भंगियों ने वैसा ही किया। उन्होंने मरे हुए बैल के पास कुछ चावल और फूल ला कर रख दिये। जो वह पा सके वह सबसे अच्छा मुर्गा ला कर रख दिया और फिर बैल के ऊपर बहुत सारा पानी ला कर डाल दिया।

जैसे ही बैल की खाल गीली हो कर मुलायम हुई तो वह कई जगहों से फट गयी। पूजा करने वालों ने आश्चर्य से देखा कि उसमें से तो गीदड़ निकल आया। उसने अपने मुँह में मुर्गा पकड़ा और उन सबके बीच में से उसे ले कर जंगल भाग गया।

भंगियों ने उसका मीलों तक पीछा भी किया पर वह तो तुरन्त ही उड़न छू हो गया। वह तो किसी के हाथ ही नहीं आया।

वह बहुत देर तक भागता रहा भागता रहा जब तक वह एक ऐसी जगह नहीं आ गया जहाँ एक शीकाकाई के पेड़[10] के नीचे बकरी की एक छोटी सी बच्ची रहती थी। उसके सारे रिशतेदार और दोस्त कहीं दूर रहते थे।

जब उसने गीदड़ को आते देखा तो वह डर के मारे शीकाकाई के पेड़ के तने से चिपकने के लिये उसकी तरफ भागी। जिससे उस पेड़ की सारी शाखें हिल गयीं। उसके पत्ते हिलने लगे।

जब गीदड़ ने पत्तों के हिलने की आवाज सुनी तो वह डर गया। उसने सोचा कि शायद बकरी के बच्ची के दोस्त और रिश्तेदार उसकी सहायता के लिये आ रहे होंगे।

वह चिल्लायी — "भागो भागो गीदड़ भागो। अपनी जान बचाओ।"

उसकी इस आवाज पर हजारों गीदड़ भागने लगे। इससे गीदड़ इतना डर गया कि वह वहाँ से भाग गया।

---

[10] Shikakai tree. Shikakai is used by women to wash their hair. It is used to make hair oil also.

इस तरह जो सबको धोखा दे रहा था वह खुद ही एक छोटी सी बकरी की बच्ची से धोखा खा कर भाग गया।

इसके बाद गीदड़ अपने गाँव चला गया जहाँ वह नाई रहता था। वहाँ कुछ रातों तक घरों के आसपास इधर उधर घूमता रहा और जो कोई हड्डी उसको मिल जाती उसे ही खा कर गुजारा करता रहा।

गाँव वालों को उसका आना अच्छा नहीं लगा पर वे यह भी नहीं जानते थे कि वे उसे कैसे पकड़ें। कि एक रात उसके पुराने दोस्त नाई ने जिसने अभी तक अपने फल चुराने के लिये माफ नहीं किया था उसको अपने जाल में फाँस लिया। इससे पहले भी वह उसे पकड़ना चाहता था पर किसी तरह भी कामयाब नहीं हो पाया था।

उसे पकड़ कर नाई ने उसके चारों पैर रस्सी से बाँधे और चिल्लाया — "आहा। आखिर मैंने तुम्हें पा ही लिया। तुम उस खीरे वाले चाकू से तो बच कर निकल गये पर अब तुम नहीं बच पाओगे।" फिर वह अपनी पत्नी से बोला — "प्रिये यहाँ आओ। ज़रा देखो तो मैं आज तुम्हारे लिये क्या पकड़ कर लाया हूँ।"

नाई की पत्नी तुरन्त ही भागती हुई दरवाजे पर आयी और नाई ने गीदड़ उसको पकड़ाया और कहा — "लो इसको घर में ले जाओ और ज़रा ध्यान रखना कि यह कहीं भाग न जाये। तब तक मैं इसको काटने के लिये एक चाकू ले कर आता हूँ।"

यह कह कर नाई चाकू लाने चला गया और नाई की पत्नी ने उसे अन्दर ले जा कर फर्श पर लिटा दिया।

जैसे ही नाई वहाँ से हटा गीदड़ नाई की पत्नी से बोला — "ओ भली स्त्री। जैसे ही तुम्हारा पति लौटेगा वह मुझे मार देगा। भगवान के लिये उसके आने से पहले एक मिनट के लिये मेरे पैरों की रस्सी थोड़ी ढीली कर दो ताकि दरवाजे के पास बने पानी के गड्ढे में से मैं थोड़ा सा पानी तो पी लूँ क्योंकि मेरा गला प्यास से बिल्कुल सूखे चमड़े जैसा हो गया है।"

नाई की पत्नी बोली — "नहीं गीदड़ नहीं। मुझे बहुत अच्छी तरह मालूम है कि तुम क्या करने वाले हो। जैसे ही मैं तुम्हारे पैर खोलूँगी तुम भाग जाओगे। और जब मेरे पति लौटेंगे और देखेंगे कि तुम भाग गये हो तो वह मुझे मारेंगे।"

गीदड़ बोला — "हाँ वह तो है। पर तुम खोल दो मुझे मैं भागूँगा नहीं। ओ दयालु माँ मेरे ऊपर दया करो। बस एक मिनट के लिये।"

नाई की पत्नी ने सोचा कि यह ठीक नहीं है कि बेचारे जानवर की आखिरी इच्छा पूरी न की जाये। अब यह बहुत देर तक तो ज़िन्दा रहने वाला है नहीं। सो उसने गीदड़ के पैर तो खोल दिये पर उसकी रस्सी अपने हाथ में ही पकड़े रही।

पर जैसे ही नाई की पत्नी ने उसके पैर ढीले किये वह तो तुरन्त ही एक अंगड़ाई ले कर रस्सी खींच कर एक बार फिर जंगल भाग गया। नाई की पत्नी के हाथ से उसकी रस्सी छूट गयी।

कुछ देर तक तो वह इधर उधर भागता रहा और गॉव में उसे जो कुछ भी मिलता रहा वही खा पी कर गुजारा करता रहा पर फिर वह और इधर उधर चलते चलते अपने गॉव से बहुत दूर निकल गया।

एक दिन इत्तफाक से एक वह एक ऐसे मकान के सामने से गुजरा जिसमें एक बहुत ही गरीब ब्राह्मण रहता था। उसके सात बेटियॉ थीं।

जब गीदड़ वहॉ से गुजर रहा था तो उसने ब्राह्मण को कहते सुन — "हे भगवान मैं अपनी सात बेटियों का क्या करूॅ। मुझे तो इनको सारी ज़िन्दगी खिलाना पड़ेगा क्योंकि ये तो बहुत गरीब हैं। इनकी तो शादी भी कैसे होगी। अगर कोई कुत्ता या गीदड़ भी इनमें से एक से शादी कर ले तो मैं इसकी शादी उससे कर दूॅगा।"

गीदड़ ने यह सुना तो अगले दिन वह उस ब्राह्मण के घर गया और उससे कहा — "तुमने कल यह कहा था कि अगर कोई कुत्ता या गीदड़ भी इनमें से एक से शादी कर ले तो मैं उसकी शादी उससे कर दूॅगा। क्या तुम मुझे अपना दामाद बनाओगे?"

ब्राह्मण तो यह सुन कर भौंचक्का रह गया पर यह बात तो सही थी कि कल उसने ये शब्द कहे थे। तो अब तो यह उसकी

इज़्ज़त का सवाल था अगर वह अपनी बात न रखे। हालाँकि उसने कभी यह सोचा भी नहीं था कि वह ऐसी किसी हालत का सामना कभी करेगा।

उसी समय उसकी सातों बेटियाँ खाने के लिये रोने लगीं। पर उनके पिता के पास तो उनके लिये कोई रोटी थी नहीं।

यह देखते हुए गीदड़ बोला — "तुम मुझे अपनी एक बेटी से शादी करने दो मैं उसकी देखभाल करूँगा। इस तरह से कम से कम तुम्हारे पास एक बेटी तो खाना खिलाने के लिये कम होगी और मैं यह देखूँगा कि उसको कभी खाने की जरूरत न पड़े।"

यह सुन कर ब्राह्मण का दिल कुछ मुलायम पड़ा। उसने अपनी सबसे बड़ी बेटी की शादी गीदड़ से कर दी। गीदड़ उसको ऊँची ऊँची चट्टानों में बनी अपनी माँद में ले गया।

अब तुम कहोगे कि इतना अक्लमन्द गीदड़ तो हमने पहले कभी सुना नहीं था। तुम्हारा कहना बिल्कुल ठीक है क्योंकि यह गीदड़ कोई सामान्य गीदड़ नहीं था। ये सब काम कोई सामान्य गीदड़ तो कर ही नहीं सकता था जो अभी हमने बताये।

यह गीदड़ एक राजा था जो गीदड़ के वेश में था। राजा ने थोड़ा सा मजा लेने के लिये यह वेश रखा हुआ था। वह एक बढ़िया राजकुमार तो था ही पर साथ में एक जादूगर भी था।

वह माँद जिसमें वह ब्राह्मण की बेटी को ले कर गया वह छेद पहाड़ में एक साधारण छेद लगता था पर था वह एक बहुत ही

शानदार महल जो सोने चाँदी हाथी दाँत और वेशकीमती रत्नों से सजा हुआ था।

पर राजा की अपनी पत्नी को भी इस बात का पता नहीं चला कि वह एक राजा था क्योंकि वह हमेशा ही गीदड़ का रूप लिये रहता। आदमी के वेश में तो वह केवल हर सुबह आता था जब उसको अपनी गीदड़ की खाल धो कर उसे कंघी करनी होती थी और फिर से पहननी होती थी।

जब उसको अपनी पत्नी यानी ब्राह्मण की बेटी के साथ रहते कुछ समय बीत गया तो एक दिन गीदड़ ने क्या देखा? उसने देखा अपने ससुर को जो पहाड़ी चढ़ कर अपनी बेटी से मिलने आ रहा था।

गीदड़ ब्राह्मण को देख कर दुखी हो गया क्योंकि उसको मालूम था कि ब्राह्मण बहुत गरीब था। उसको लगा कि ब्राह्मण उससे कुछ माँगने आया होगा। और ऐसा ही था भी।

ब्राह्मण आ कर बोला — "बेटा मुझे अपनी गुफा में अन्दर आने दो ताकि मैं थोड़ा सुस्ता सकूँ। मैं तुमसे कुछ सहायता माँगने आया हूँ। मेरी हालत बहुत बुरी है और मुझे तुम्हारी सहायता की बहुत आवश्यकता है।"

गीदड़ बोला — "मेहरबानी कर के मेरी गुफा में न जाइये यह बहुत ही गन्दी है। यह आपके देखने लायक नहीं है। पर मैं अपनी पत्नी को बुलाता हूँ ताकि आपको यह विश्वास हो जाये कि मैंने उसे

खाया नहीं है। और फिर आप वह और मैं यहाँ पहाड़ी पर बैठ कर बात करेंगे। और फिर देखते हैं कि आपके लिये क्या किया जा सकता है।"

सो ब्राह्मण ब्राह्मण की बेटी और गीदड़ सब पहाड़ी पर बैठ गये। ब्राह्मण बोला — "मुझे नहीं मालूम मैं क्या करूँ जिससे मैं अपनी पत्नी अपनी छह बेटियों और अपने लिये कुछ खाना जुटा सकूँ। मेरे दामाद गीदड़ जी। क्या आप मेरी कुछ सहायता नहीं कर सकते?"

गीदड़ बोला — "यह बहुत मुश्किल काम है पर जो कुछ मुझसे हो सकता है मैं करूँगा।"

कह कर वह अपनी गुफा में दौड़ गया और एक बड़ा सा तरबूज ले आया और उसे ब्राह्मण को देता हुआ बोला — "ससुर जी। आप यह तरबूज ले जायें और इसे अपने बागीचे में बो दें। जब यह बड़ा हो जाये तो इस पर जो फल लगें उन्हें आप बेच दें। वे आपको कुछ पैसे दे सकेंगे।"

ब्राह्मण ने वह तरबूज लिया और उसे ले जा कर अपने बागीचे में गाड़ दिया। अगले दिन ही गीदड़ का दिया हुआ तरबूज एक सुन्दर पौधा बन गया जिस पर सैंकड़ों सुन्दर मीठे पके हुए तरबूज लगे हुए थे।

यह देख कर तो ब्राह्मण उसकी पत्नी और उसका परिवार सभी बहुत खुश हुए। यह देख कर तो उसके पड़ोसी भी आश्चर्य करने लगे और कहने लगे — "देखो तो इस ब्राह्मण के बागीचे में कितनी जल्दी इतने सारे तरबूज हो गये।"

ब्राह्मण के पड़ोस में एक स्त्री रहती थी जिसे तरबूज की जरूरत थी। उसने देखा कि ब्राह्मण के खेत में तो बहुत बढ़िया बढ़िया तरबूज लगे हुए हैं सो वह ब्राह्मण के पास आयी और ब्राह्मण की पत्नी से दो तीन तरबूज खरीद कर ले गयी।

घर पहुँच कर उसने उन्हें काटा तो लो देखो तो उसमें क्या था। वह तो उस सुन्दर दृश्य को देख कर अचम्भित रह गयी। वह तो सोच रही थी कि उसमें सफेद मोटा गूदा होगा पर वह सारा तरबूज तो हीरे लाल और पन्नों से भरा हुआ था। उसमें बीजों की जगह बड़े बड़े मोती लगे हुए थे।

उसने तुरन्त ही अपने घर का दरवाजा बन्द किया और अपना सारा पैसा जितना भी उसके पास था ले कर ब्राहंण के घर की तरफ भागी।

उसने ब्राह्मण की पत्नी से कहा — "तुमने मुझे जो तरबूज बेचे थे वे तो बहुत अच्छे थे। मुझे वे इतने अच्छे लगे कि मैं तुम्हारे वे सारे तरबूज खरीदना चाहती हूँ जो तुम्हारी बेल पर लगे हुए हैं।"

ऐसा कह कर उसने उसको वे सारे पैसे दिये जो वह अपने साथ ले कर आयी थी और उससे सारे तरबूज खरीद कर ले गयी।

अब इस चालाक स्त्री ने इस सारे खजाने के बारे में जो उसने तरबूजों में पाया था किसी से कुछ नहीं कहा और गरीब बेवकूफ ब्राह्मण और उसके परिवार को यही पता नहीं चला कि उसने क्या खो दिया था। क्योंकि उन्होंने कोई तरबूज खोल कर तो देखा ही नहीं था। इस तरह इतने सारे कीमती जवाहरात उन्होंने पैसों के मोल लुटा दिये थे।[11]

अगले दिन जब ब्राह्मण ने अपनी खिड़की से बाहर झॉक कर देखा तो उसे वहॉ फिर से बहुत सारे पके तरबूज लगे नजर आये। अगले दिन भी वह पड़ोसन वहॉ आयी और ब्राह्मण की पत्नी से सारे तरबूज खरीद कर ले गयी।

ऐसा कुछ दिनों तक चलता रहा। कितने सारे तरबूज थे और वे सब कीमती जवाहरातों से भरे हुए थे कि उस स्त्री का पूरा एक कमरा उनसे भर सकता था।

आखिर तरबूज की बेल सूखने लगी और जब एक दिन पड़ोसन फिर से तरबूज मॉगने आयी तो ब्राह्मण की पत्नी का कहना पड़ा कि अब तो हमारी बेल सूख गयी है। हमारे पास एक भी तरबूज नहीं है। वह स्त्री निराश हो कर अपने घर चली गयी।

---

[11] [My Note : Why should he cut open any of the melon, because he was told only to sell them. How could he know about this miracle? This is no fault of his.]

उस दिन ब्राह्मण और उसके परिवार के पास खाने के लिये कोई पैसा नहीं था। वे तो यह सोच सोच कर ही बहुत दुखी हो रहे थे कि उनके तरबूज की बेल सूख गयी थी।

ब्राह्मण की सबसे छोटी बेटी बहुत अक्लमन्द थी। उसने सोचा "हमारी तरबूज की बेल पर अब कोई तरबूज बेचने के लिये नहीं है पर मैं जा कर देखती हूँ शायद मुझे उस पर कोई सूखा हुआ तरबूज मिल जाये जिन्हें अगर हम पकायेंगे तो कुछ खा सकें।"

सो वह बाहर बागीचे में गयी और सावधानी से बेल के मोटे मोटे पत्तों में किसी सूखे हुए तरबूज को ढूँढने लगी। भगवान का लाख लाख धन्यवाद है कि उसको दो तीन सूखे सिकुड़े तरबूज मिल गये। वह उन्हें घर ले आयी और उनको काटने लगी।

तो लो उसको उनमें भी छोटे छोटे हीरे लाल पन्ने और मोती मिले। लड़की ने अपने माता पिता और अपनी पाँचों बहिनों को बुलाया और उनको दिखाते हुए बोली — "देखो मैंने इस तरबूज में क्या पाया। देखो ये कितने कीमती जवाहरात और मोती।

मुझे पूरा विश्वास है कि जो तरबूज हमने अपनी पड़ोसन को बेचे उनमें इनसे भी अच्छे जवाहरात होंगे। इसी लिये वह इन सब तरबूजों को खरीदने के लिये आती रही। देखिये पिता जी माँ और बहिनो।"

इस खजाने को देख कर तो वे सब बहुत खुश थे। ब्राह्मण बोला — "कितनी खराब बात ही कि हमने अपने दामाद गीदड़ की

इतनी बढ़िया भेंट का पूरा फायदा नहीं उठाया। क्योंकि हमें इनकी कीमत का पता ही नहीं था। मैं अभी उस स्त्री के पास जाता हूँ और अपने सारे तरबूज उससे वापस ले कर आता हूँ।"

सो वह तुरन्त ही अपनी पड़ोसन के घर गया और उससे कहा — "तुमने जो मुझसे तरबूज खरीदे थे वे मुझे वापस करो क्योंकि मुझे उनकी कीमत नहीं मालूम थी।"

वह बोली — "मुझे पता नहीं कि तुम क्या कह रहे हो।"

ब्राह्मण बोला — "तुम बहुत धोखेबाज हो। तुमने हम गरीबों से जिनको उनकी कीमत का पता नहीं था कीमती जवाहरात भरे तरबूज सामान्य तरबूज की कीमत दे कर खरीद लिये। मैं तुम्हारी विनती करता हूँ उनमें से कुछ मुझे वापस करो।"

पर वह बोली — "मैंने तुम्हारी पत्नी से सामान्य तरबूज ही खरीदे थे और उनको तो मैं पका कर कभी की खा भी गयी। आगे से जवाहरात की बात भी नहीं करना। जाओ अपना काम देखो।"

और उसने उसको अपने घर से बाहर निकाल दिया। इस सारे समय उसके पास एक कमरा भर कर हीरे मोती और जवाहरात थे जो उसने उन तरबूजों में से निकाले थे जो ब्राह्मण की पत्नी ने उसे बेचे थे।

ब्राह्मण बेचारा घर वापस आया और अपनी पत्नी से बोला — "मैं उस स्त्री से उनमें से कोई भी तरबूज वापस नहीं ले सका जो तुमने उसे बेचे थे। पर तुम मुझे वे कीमती जवाहरात दो जो हमारी

बेटी ने अभी पाये थे। मैं उनको किसी जौहरी को बेच कर कुछ पैसे ले कर आता हूँ।”

सो वह वे कीमती जवाहरात ले कर शहर गया और एक जौहरी की दूकान पर जा कर उनको उसे दिखाया और पूछा — “आप मुझे इनके कितने पैसे देंगे।”

पर जैसे ही जौहरी ने उन्हें देखा तो आश्चर्य से पूछा — “पर तुम्हारे जैसे गरीब के पास ये आये कहाँ से। लगता है तुमने ये कहीं से चुराये हैं। तुम चोर हो। तुमने इनको मेरी दूकान से चुराया है और फिर अब मुझे ही बेचने चले आये हो।”

ब्राह्मण चिल्लाया — “नहीं नहीं ऐसा नहीं है।”

जौहरी चिल्लाया — “चोर चोर।”

ब्राह्मण बोला — “सर ऐसा नहीं है। मेरे दामाद गीदड़ ने मुझे एक तरबूज का पौधा दिया था उस पर जो तरबूज लगे उनमें से एक तरबूज में से मुझे ये मिले।”

जौहरी चीखा — “मुझे तुम्हारी एक भी बात पर विश्वास नहीं है जो तुम कह रहे हो।” उसने उसका एक हाथ पकड़ा हुआ था और वह उसको अपने दूसरे हाथ से पीटने लगा। “वे सारे जवाहरात मुझे दो जो तुमने मेरी दूकान से चुराये हैं।”

अब ब्राह्मण भी गरजा — “नहीं। मैं नहीं दूँगा। मुझे मत मारो। मैंने उन्हें चुराया नहीं है।”

पर जौहरी ने तो तय कर रखा था कि वह उससे जवाहरात ले कर ही रहेगा सो उसने ब्राह्मण को कुछ और मारा और पुलिस को बुला लिया जो उसकी सहायता के लिये तुरन्त ही आ गयी।

पुलिस ने भी चिल्लाना शुरू कर दिया और वहाँ तो एक बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गयी। तब जौहरी फिर ब्राह्मण से बोला — "तुम मेरे जवाहरात सीधी तरह से वापस कर दो जो तुमने मेरी दूकान से चुराये हैं नहीं तो मैं तुम्हें पुलिस को दे दूँगा और फिर तुम जेल में ही नजर आओगे।"

ब्राह्मण ने अपने दामाद गीदड़ की कहानी फिर कहने की कोशिश की पर किसी ने उस पर विश्वास ही नहीं किया। सो पुलिस से बचने के लिये उसको वे जवाहरात उस जौहरी को देने ही पड़े। वह उसे दे कर जितनी तेज़ी से भाग सकता था घर भाग गया था।

हर एक को लगा कि यह जौहरी तो बहुत अच्छा है जो उसने ऐसे चोर को इतनी आसानी से जाने दिया।

ब्राह्मण का सारा परिवार उसके साथ हुए इस व्यवहार से बहुत दुखी था। उसकी पत्नी बोली — "तुम अपने दामाद जी के पास फिर से जाओ और उनसे पूछो कि वह अब हमारे लिये क्या कर सकते हैं।"

सो वह फिर गीदड़ के पास पहुँचा। गीदड़ उसको देख कर फिर बहुत खुश नहीं था। सो वह उससे मिलने के लिये बाहर आया

और बोला — "ससुर जी। मुझे आपके इतनी जल्दी दोबारा आने की आशा नहीं थी।"

ब्राह्मण बोला — "मैं तो बस ज़रा आपको देखने आया था और साथ में यह कहने आया था कि हम कितने गरीब हैं। अगर आप हमारी कुछ सहायता कर देते तो हमें बहुत खुशी होती।"

गीदड़ ने पूछा — "वह जो मैंने आपको तरबूज दिया था उसका क्या हुआ।"

ब्राह्मण बोला — "उसकी तो बड़ी दुखभरी कहानी है।"

कह कर उसने उसको शुरू से आखीर तक सारी कहानी बता दी कि किस तरह से उसने उनको उनकी कीमत जाने बिना सामान्य तरबूज के दामों में बेच दिये। और कैसे कुछ थोड़े से जवाहरात जो उसे मिल पाये थे वे उसे जौहरी को देने पड़ गये।

यह सुन कर गीदड़ बहुत हँसा फिर बोला — "बदकिस्मत लोगों को कोई चीज़ जैसे सोना या जवाहरात देने का कोई फायदा नहीं होता बल्कि वे उनके लिये मुसीबत ही ले कर आते हैं। ठीक है मैं आपको एक और फायदे वाली चीज़ देता हूँ।"

कह कर वह अपनी गुफा में भाग गया और एक छोटा सा बर्तन ले कर बाहर आया। वह बर्तन उसने ब्राह्मण को दिया और कहा — "लीजिये यह बर्तन ले जाइये। जब भी आपके परिवार को भूख लगे तो आप इस बर्तन से उसे माँगें वह आपको इस बर्तन से मिल जायेगा।"

और उस बर्तन के अन्दर अपना पंजा डालते हुए उसने उसी समय उस बर्तन में से कुछ सब्जी चावल और पुलाव निकाल दिया। और उसमें से उसने और भी खाने की कई अच्छी अच्छी चीज़ें निकाल दीं जिनसे 100 लोगों तक को बड़ी अच्छी तरह से खाना खिलाया जा सकता था। जितना वह उसमें से निकालता उससे ज़्यादा बर्तन में रह जाता।

जब ब्राह्मण ने यह बर्तन देखा और स्वादिष्ट खाने की खुशबू सूँघी तो खुशी से उसकी आँखें चमक उठीं। वह अपनी इस नयी भेंट को सीधा घर ले गया।

इसके बाद कुछ समय तक पूरा परिवार खुश रहा क्योंकि उनको न केवल अच्छा खाना ही मिलता रहा बल्कि बहुत स्वादिष्ट स्वादिष्ट खाने भी मिलते रहे। रोज जब वे खाना खा चुकते तो वे उस बर्तन को आलमारी में रख देते और वह बर्तन अगली बार के लिये फिर से भर जाता।

अब ऐसा हुआ कि इस ब्राह्मण के घर के पास एक और ब्राह्मण रहता था जो राजा का आदमी था। इसको गरीब ब्राह्मण के घर से रोज ही स्वादिष्ट खानों की खुशबू आती जिसे देख कर वह बहुत परेशान हुआ।

उसने देखा कि गरीब ब्राह्मण के खाने की खुशबू तो उसके अपने खाने की खुशबू से भी बहुत अच्छी है जिस पर वह इतना

पैसा खर्च करता था। फिर भी उसको वह उस ब्राह्मण के खाने की खुशबू के मुकाबले में किसी गरीब ब्राह्मण का खाना लगता था।

सो एक दिन उसने इसका राज़ जानने का तय किया। वह अपने पड़ोसी के घर गया और जा कर उस गरीब ब्राह्मण से बोला — "रोज दोपहर को **12** बजे मुझे बहुत अच्छे खाने की खुशबू आती है जो मेरे खाने की खुशबू से भी अच्छी होती है। मुझे लगता है कि तुम जरूर ही बहुत बढ़िया खाना खाते होगे हालाँकि तुम बहुत गरीब लगते हो।"

यह सुन कर गरीब ब्राह्मण की छाती गर्व से फूल गयी और उसने उसे अपने घर खाना खाने के लिये बुला लिया। जब वह खाना खाने आया तो उसने बर्तन आलमारी में से निकाला और उसमें से उसने उसको इतने बढ़िया बढ़िया खाने खिलाये जैसे उसने पहले कभी चखे भी नहीं थे।

और फिर उसने एक बुरी घड़ी में उस ब्राह्मण को उस बर्तन के बारे में भी सब कुछ बता दिया जिसे उसके दामाद गीदड़ ने उसे दिया था। साथ में उसने उसे यह भी बताया कि वह बर्तन कभी खाली नहीं होता था।

जैसे ही शाही ब्राह्मण ने यह सुना तो वह तुरन्त ही राजा के पास पहुँचा और उससे कहा — "सरकार शहर में एक गरीब ब्राह्मण है जिसके पास एक ऐसा जादुई बर्तन है जो हमेशा ही बहुत स्वादिष्ट खानों से भरा रहता है।

मुझे यह अधिकार नहीं है कि मैं उससे वह बर्तन ले लूँ पर अगर आपको अच्छा लगे तो आप उससे वह बर्तन ले सकते हैं और वह कोई शिकायत नहीं कर पायेगा।"

यह सुन राजा ने निश्चय किया कि वह खुद जा कर ऐसे जादुई बर्तन को देखेगा सो उसने कहा कि वह खुद उस बर्तन को देखना चाहेगा। और वह अमीर ब्राह्मण के साथ गरीब ब्राह्मण के घर चल दिया।

गरीब ब्राह्मण तो राजा को अपने घर आते देख कर बहुत ही खुश हो गया। उसने बड़ी खुशी से राजा को वह बरतन दिखाया।

पर जैसे ही राजा ने उसका स्वादिष्ट खाना चखा उसने अपने रक्षकों को आज्ञा दी कि वे उस बर्तन को उससे ले लें और उसे उसके महल ले चलें। गरीब ब्राह्मण बहुत रोया बहुत धोया पर राजा ने उसकी एक न सुनी और उसने दूसरी बार अपने दामाद की दी हुई भेंट खो दी।

जब राजा चला गया तो ब्राह्मण ने अपनी पत्नी से कहा — "अब हमारे पास कोई और रास्ता नहीं रह गया है सिवाय अपने दामाद गीदड़ के पास जाने का। देखें अबकी बार वह हमारी सहायता कैसे करता है।"

पत्नी बोली — "अगर आप इसी तरह से चीज़ों की परवाह नहीं करेंगे तो आखीर में दामाद जी का धीरज भी खो देंगे। मेरी तो यही

समझ में नहीं आया कि आप उस बर्तन के बारे में सब जगह बात क्यों कर रहे थे।"

गीदड़ ने जब ब्राह्मण की यह कहानी सुनी तो वह बहुत गुस्सा हुआ और बोला — "आप तो बहुत ही बेवकूफ आदमी निकले। क्या जरूरत थी आपको किसी को उस बर्तन के बारे में बताने की?

खैर यह लीजिये अब मैं आपको एक तीसरी चीज़ देता हूँ जिससे आप आप अपनी पुरानी दोनों चीज़ें वापस पा लेंगे। आप इसको ठीक से सॅभाल कर रखियेगा क्योंकि यह मैं आपको आखिरी बार दे रहा हूँ।"

कह कर उसने ब्राह्मण को एक और बर्तन दिया जिसमें एक मोटी सी डंडी उससे कस कर बॅधी हुई थी और कहा — "यह लीजिये। इसे आप उन लोगों के सामने खोलियेगा जिन्होंने मेरी भेंटें आपसे ली हैं और इस डंडी से कहियेगा कि वह उनको मारे। यह डंडी उनको इतनी अच्छी तरह से मारेगी कि वे आपको आपकी चीजें वापस कर देंगे।

बस इतना ध्यान रखियेगा कि आप इस बर्तन को अकेले में न खोलें नहीं तो इसकी डंडी आप ही को मारना शुरू कर देगी।"

ब्राह्मण ने अपने दामाद को धन्यवाद दिया और वह बर्तन ले कर वहॉ से चला गया। अब वह वहॉ से चला तो गया पर उसको उस बर्तन के बारे में यह विश्वास करना मुश्किल लग रहा था कि गीदड़ ने जो कुछ उसके बारे में कहा था वह सच था या महीं।

सो जब वह जंगल में से गुजर रहा था तो उसने उत्सुकतावश उस बर्तन को खोल दिया ताकि वह यह देख सके कि उसमें डंडी थी भी या नहीं। जैसे ही उसने उस बर्तन को खोला तो उसमें बॅधी रस्सी बाहर कूदी और उसके साथ ही कूदी उसमें बॅधी डंडी।

रस्सी ने उसे एक पेड़ से बॉधा और डंडी ने उसे तड़ातड़ पीटना शुरू कर दिया। वह तो उसे पीटती गयी पीटती गयी पीटती गयी। और वह दर्द के मारे चिल्लाता गया चिल्लाता गया चिल्लाता गया।

"उफ़ मैं भी कितना बेवकूफ हूॅ। ओ मेरी प्यारी डंडी रुक जा।" पर वह डंडी कहॉ रुकने वाली थी वह तो उसे मारती गयी। किसी तरह से वह अपने घर पहॅुचा।

घर पहॅुच कर उसने किसी तरह रस्सी बर्तन में रखी और उसको बन्द कर दिया। फिर उसने अपने पड़ोसी अमीर ब्राह्मण को राजा के पास यह कह कर भेजा कि अब उसके पास एक नया बर्तन आ गया है जो पहले वाले से भी अधिक अच्छा है। आप आयें और देखें कि वह कैसा है।

अमीर ब्राह्मण और राजा ने सोचा कि यह तो और भी अच्छा है। इसका खाना भी चखना चाहिये। हम इससे यह बर्तन भी ले लेंगे जैसे हमने इससे पहले वाला लिया था। सो वे ब्राह्मण से मिलने के लिये जंगल चल दिये। साथ में उन्होंने अपने बहुत सारे आदमी भी ले लिये।

उनको देख कर ब्राह्मण ने अपना बर्तन खोला और बोला — "ओ डंडे मारो। मारो सबको मारो।" बस उसके यह कहते ही बर्तन में से रस्सी कूदी और उसने राजा अमीर ब्राह्मण और उनके साथ आये सभी लोगों को पेड़ से बॉध दिया और डंडी उठी और सबको मारने लगी।

वह तो बस मारती गयी मारती गयी मारती गयी। उधर गरीब ब्राह्मण चिल्लाता रहा "मेरा बर्तन वापस करो। मेरा बर्तन वापस करो।

यह देख कर राजा और उसके साथी डर गये। उनको लगा कि वे तो बस अब मर ही जायेंगे। राजा बोला — "बस तुम अपनी यह डंडी वापस ले लो। बस तुम अपनी यह डंडी वापस ले लो हम तुम्हें तुम्हारा बर्तन वापस कर देंगे।"

यह सुन कर ब्राह्मण ने अपनी डंडी और रस्सी दोनों बर्तन में वापस रख लीं। और राजा ने भी ब्राह्मण को खाना बनाने वाला बर्तन वापस कर दिया। सारे लोग ब्राह्मण से डरने लगे और उसकी बहुत इज़्ज़त करने लगे।

अब ब्राह्मण डंडी वाले बर्तन को ले कर अपनी उस पड़ोसन के घर गया जिसने उससे तरबूज खरीदे थे। वहॉ जा कर उसने अपना बर्तन खोला तो रस्सी ने स्त्री को बॉध दिया और डंडी ने उसकी पिटायी शुरू कर दी।

वहाँ ब्राह्मण चिल्लाया "मेरे तरबूज वापस करो। मेरे तरबूज वापस करो।" वहाँ भी स्त्री ने यही कहा — "तुम अपनी डंडी वापस ले लो मैं तुम्हारे तरबूज अभी वापस करती हूँ।"

ब्राह्मण ने अपनी रस्सी और डंडी अपने बर्तन में वापस रखी और स्त्री ने उसके सारे तरबूज वापस कर दिये। उसके पास वे तरबूज एक कमरा भर कर थे और हर तरबूज में हीरे लाल पन्ने और मोती भरे हुए थे।

ब्राह्मण उन सबको अपनी पत्नी के पास ले गया। फिर उसी डंडी के सहारे जौहरी को भी अपने जवाहरात वापस करने पर मजबूर कर दिया। यह सब कर के वह घर गया और फिर वह और उसका परिवार सब हमेशा खुश रहे।

एक दिन गीदड़ की पत्नी ने अपनी छहों बहिनों को अपने घर बुलाया। अब जैसा कि तुम्हें पता है कि उनमें से सबसे छोटी बहिन सबसे ज़्यादा होशियार थी।

तो एक दिन उसने देखा कि उसके जीजा ने अपनी गीदड़ की खाल उतार कर साफ कर के कंघी कर के सूखने के लिये डाल दी। जब उसने वह खाल उतारी तो वह तो बहुत सुन्दर राजकुमार बन गया।

यह देख कर वह तुरन्त ही खाल की तरफ दौड़ी और उसको उठा कर उसने आग में डाल कर जला दिया। फिर वह तुरन्त ही अपनी बहिन के पास भागी गयी और उसको बताया — "जीजी।

तुम्हारा पति गीदड़ नहीं है। देखो वह दरवाजे के पास कौन खड़ा है।”

यह सुन कर बहिन अपने पति को देखने के लिये दरवाजे की तरफ भागी गयी और क्योंकि अब उसकी गीदड़ वाली खाल जल चुकी थी सो वह उसको फिर कभी नहीं पहन सका। वह सारी उम्र आदमी ही बना रहा। अब उसकी गीदड़ वाली हरकतें भी छूट गयी थीं। सब लोग फिर खुशी खुशी रहे।

13 जैसे को तैसा[12]

एक बार की बात है कि एक ऊँट और एक गीदड़ थे। वे आपस में बहुत गहरे दोस्त थे। एक दिन गीदड़ ने ऊँट से कहा — "मुझे मालूम है कि नदी के उस पार एक बहुत ही बढ़िया गन्ने का खेत है। अगर तुम मुझे नदी पार ले चलो तो मैं तुम्हें वह जगह दिखा सकता हूँ।

यह प्लान हम दोनों के लिये अच्छा है। हम दोनों गन्ना खाने का आनन्द लूटेंगे और मुझे विश्वास है कि वहाँ तुमको नदी किनारे काफी केंकड़े हड्डियाँ और मछली आदि भी मिल जायेंगी जिससे तुमको वहाँ बढ़िया खाना भी मिल जायेगा।"

ऊँट राजी हो गया और गीदड़ को ले कर नदी पार कर गया क्योंकि गीदड़ तो तैर नहीं सकता था। जब वे नदी के उस पार पहुँचे तो ऊँट तो गन्ना खाने चला गया और गीदड़ नदी के किनारे केंकड़े और मछली खाने पर लग गया।

जब तक ऊँट ने गन्ने के दो तीन कौर ही खाये होंगे तब तक तो गीदड़ ने अपना बहुत बढ़िया खाना जल्दी जल्दी खा लिया था। जैसे ही उसने अपना खाना खत्म किया तो वह चीखते चिल्लाते गन्ने के खेत के चक्कर काटने चल दिया।

---

[12] Tit For Tat. (Tale No 13).

उसकी आवाज गाँव वालों ने भी सुनी तो उन्होंने सोचा कि लगता है कि हमारे गन्ने के खेतों में कोई गीदड़ घुस आया है। वह खेतों में गड्ढे खोद खोद कर हमारे पौधे बर्बाद कर रहा होगा।

सो उसको भगाने के लिये वे अपने खेतों पर आये। पर जब वे वहाँ आये तो उन्होंने देखा कि वहाँ केवल गीदड़ ही नहीं है बल्कि एक ऊँट भी है जो उनके गन्ने खा रहा था।

यह देख कर वे बहुत गुस्सा हो गये। अब गीदड़ तो वहाँ से भाग गया पर ऊँट को उन्होंने पकड़ लिया। उन्होंने उसे खेत से निकाल कर इतना मारा इतना मारा कि वह बेचारा अधमरा सा हो गया।

जब गाँव वाले चले गये तो गीदड़ ने ऊँट से कहा — "अब हमें घर चलना चाहिये।"

ऊँट बोला — "ठीक है। तुम मेरी पीठ पर चढ़ जाओ जैसे तुम पहले चढ़े थे फिर हम घर चलते हैं।"

गीदड़ ऊँट की पीठ पर बैठ गया और ऊँट ने नदी पार करनी शुरू की। जब वे आधे रास्ते पहुँच गये तो ऊँट बोला — "यह अच्छा तरीका है तुम्हारा मेरे साथ बर्ताव करने का जैसा तुमने मेरे साथ किया।

कि जैसे ही तुमने अपना खाना खत्म किया तो तुमने गन्ने के खेत के पास आ कर चिल्लाना शुरू कर दिया जिससे सारे गाँव वाले वहाँ आ गये और उन्होंने मुझे पीट पीट कर लाल नीला कर दिया

और मुझे मेरा पेट भरने से पहले ही खेत में से बाहर निकाल दिया।"

गीदड़ बोला — "मुझे मालूम नहीं। हम लोगों का यही तरीका है कि हम खाना खाने के बाद थोड़ा सा गाना गाना पसन्द करते हैं।"

यह सुन कर ऊँट नदी के पानी में थोड़ा बैठने लगा। पानी उसके घुटनों तक पहुँचा। फिर पानी ऊपर बढ़ने लगा यहाँ तक कि ऊँट को उसमें तैरना पड़ा।

गीदड़ की तरफ देखते हुए ऊँट बोला — "मुझे इस पानी में लेटने की बड़ी इच्छा हो रही है।"

गीदड़ चिल्लाया — "लेकिन क्यों। तुम ऐसा क्यों करना चाहते हो।"

ऊँट बोला — "पता नहीं। यह हमारा तरीका है कि खाना खाने के बाद हम लोग कुछ लेटना चाहते हैं।"

ऐसा कह कर उसने अपने शरीर को एक झटका दिया जिससे गीदड़ उसकी पीठ से छिटक कर दूर जा पड़ा और वह पानी में लेट गया। इस तरह गीदड़ तो पानी में डूब गया और ऊँट सुरक्षित रूप से नदी पार कर दूसरे किनारे पर आ गया। यह था ऊँट का बदला।

14 ब्राह्मण चीता और छह जज[13]

एक बार की बात है कि एक ब्राह्मण सड़क पर चला जा रहा था कि उसने देखा कि वहॉ गॉव वालों ने एक बहुत बड़े चीते को कटघरे में बन्द किया हुआ था।

जब ब्राह्मण उस कटघरे के पास से गुजर रहा था तो चीते ने उसको पुकारा — "ब्राह्मण भाई ब्राह्मण भाई। मुझ पर दया करो। मुझे बस एक मिनट के लिये इस कटघरे में से बाहर निकाल दो। मुझे बहुत ज़ोर से प्यास लगी है मुझे पानी पीना है। मैं प्यास से मरा जा रहा हूँ।"

ब्राह्मण बोला — "नहीं मैं नहीं निकाल सकता। क्योंकि जैसे ही मैंने तुम्हें इस कटघरे में से बाहर निकाला तो तुम मुझे खा जाओगे।"

चीता गिड़गिड़ाया — "नहीं दया के सागर। ऐसा नहीं होगा। मैं इतना कृतघ्न नहीं हो सकता। बस मुझे बाहर निकाल दो मैं पानी पी कर वापस आ जाऊँगा।"

तो ब्राह्मण को उस पर दया आ गयी उसने कटघरे का दरवाजा खोल दिया। पर जैसे ही उसने दरवाजा खोला चीता उसके अन्दर से कूद कर बाहर आ गया और बोला — "अब पहले मैं तुम्हें खाऊँगा और उसके बाद ही पानी पियूँगा।"

---

[13] The Brahman, the Tiger and Six Judges. (Tale No 14).

ब्राह्मण यह सुन कर घबरा गया पर जल्दी ही बोला — "तुम मुझे इतनी जल्दी मत मारो। पहले हम छह लोगों की राय ले लें और अगर सारे लोग यह कह दें कि "हॉ यह ठीक है कि तुम इसे खा सकते हो।" तो तुम मुझको खा लेना।"

चीता बोला — "हॉ यह ठीक है। ऐसा ही होगा जैसा तुमने कहा है। हम पहले छह लोगों की राय पूछेंगे।"

सो चीता और आदमी थोड़ा सा आगे चले और एक बरगद के पेड़ के पास आये। ब्राह्मण ने उससे पूछा — "ओ बरगद के पेड़ ओ बरगद के पेड़। तुम मेरी बात सुनो और अपना फैसला सुनाओ।"

बरगद का पेड़ बोला — "मुझे किस बात पर फैसला देना है।"

ब्राह्मण बोला — "इस चीते ने कहा कि मुझे पानी पीना है मुझे इस कटघरे में से निकाल दो। इसने वायदा किया कि अगर मैंने इसे निकाल दिया तो यह मुझे कोई नुकसान नहीं पहुॅचायेगा। पर अब जब मैंने इसे निकाल दिया है तो यह मुझे खाना चाहता है। इसका मेरे साथ ऐसा करना क्या ठीक है?"

बरगद का पेड़ बोला — "लोग अक्सर मेरी छॉह में ठंडे होने के लिये आते हैं और जब वे सुस्ता लेते हैं तो मेरी टहनियॉ तोड़ कर उनके पत्ते तोड़ कर बिखेर जाते हैं जिनकी छॉह में उन्होंने सुस्ताया था। आदमी की जाति बहुत ही कृतघ्न है। चीते तुम उसे खा लो।"

यह सुन कर चीता तो उसे तुरन्त ही खा जाता पर ब्राह्मण बोला — "चीते तुम मुझे ऐसे अभी नहीं खा सकते क्योंकि तुमने वायदा किया कि तुम पहले छह फैसले सुनोगे।"

चीता बोला "ठीक है।" और वे और आगे चल दिये।

कुछ देर बाद उन्हें एक ऊँट मिला। उसको देखते ही ब्राह्मण चिल्लाया — "सर ऊँट जी सर ऊँट जी। तुम मेरी बात सुनो और अपना फैसला सुनाओ।"

ऊँट बोला — "मुझे किस बात पर फैसला देना है।"

ब्राह्मण बोला — "इस चीते ने कहा कि मुझे पानी पीना है मुझे इस कटघरे में से निकाल दो। इसने वायदा किया कि अगर मैंने इसे निकाल दिया तो यह मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचायेगा। पर अब जब मैंने इसे निकाल दिया है तो यह मुझे खाना चाहता है। इसका मेरे साथ ऐसा करना क्या ठीक है?"

ऊँट बोला — "जब मैं जवान था और ताकतवर था तब मैं बहुत काम किया करता था तब मेरा मालिक मेरी बहुत अच्छी तरह से देखभाल करता था और मुझे बहुत अच्छा खाना खिलाता था।

पर अब जब मैं बूढ़ा हो गया हूँ और मेरी ताकत चली गयी है तब वह मुझ पर और ज़्यादा बोझा लादता है और मुझे भूखा भी रखता है। बेरहमी से मारता भी है। यह आदमी की जाति बड़ी बेरहम और अन्यायी है इसलिये चीते तुम आदमी को खा सकते हो।"

चीते ने एक बार फिर आदमी को खा लिया होता पर आदमी बोला — "इतनी जल्दी नहीं क्योंकि हमको छह फैसले सुनने हैं।"

सो वे फिर और आगे चले। कुछ दूर चलने के बाद उनको एक बैल दिखायी दिया जो सड़क के किनारे ही पड़ा हुआ था।

ब्राह्मण ने उससे भी कहा — "तुम मेरी बात सुनो और अपना फैसला सुनाओ।"

बैल बोला — "मुझे किस बात पर फैसला देना है।"

ब्राह्मण बोला — "इस चीते ने कहा कि मुझे पानी पीना है मुझे इस कटघरे में से निकाल दो। इसने वायदा किया कि अगर मैंने इसे निकाल दिया तो यह मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचायेगा। पर अब जब मैंने इसे निकाल दिया है तो यह मुझे खाना चाहता है। इसका मेरे साथ ऐसा करना क्या ठीक है?"

बैल बोला — "जब मैं काम करने के लायक था तो मेरा मालिक मुझे बहुत अच्छी तरह से रखता था पर अब जब मैं बूढ़ा हो गया हूँ तब वह मेरे सारे किये कामों को बिल्कुल ही भूल गया है। वह मुझे यहाँ सड़क पर छोड़ गया है। चीते तुम आदमी को खा लो क्योंकि आदमी के मन में दया नहीं होती।"

अब तक तीन फैसले ब्राह्मण के खिलाफ जा चुके थे फिर भी ब्राह्मण ने आशा नहीं छोड़ी थी। उसने तीन और फैसले सुनने का फैसला कर लिया था। सो वे दोनों और आगे चले।

आगे चल कर उनको हवा में उड़ता हुआ एक गरुड़ मिला।

ब्राह्मण बोला — "गरुड़ गरुड़। तुम मेरी बात सुनो और अपना फैसला सुनाओ।"

गरुड़ बोला — "मुझे किस बात पर फैसला देना है।"

ब्राह्मण बोला — "इस चीते ने कहा कि मुझे पानी पीना है मुझे इस कटघरे में से निकाल दो। इसने वायदा किया कि अगर मैंने इसे निकाल दिया तो यह मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचायेगा। पर अब जब मैंने इसे निकाल दिया है तो यह मुझे खाना चाहता है। इसका मेरे साथ ऐसा करना क्या ठीक है?"

गरुड़ बोला — "जब भी कोई आदमी मुझे देखता है तो मुझे मारने की कोशिश करता है। वे चट्टानों पर चढ़ जाते हैं और मेरे बच्चों को चुरा लेते हैं। चीते तुम आदमी को खा लो क्योंकि आदमी तो जमीन का एक अत्याचारी प्राणी है।"

अब तो चीते ने दहाड़ना शुरू कर दिया था। वह बोला — "सारे लोग तुम्हारे खिलाफ ही फैसला दे रहे हैं ब्राह्मण। अब में तुम्हें जरूर खाऊँगा।"

पर ब्राह्मण ने उससे विनती की — "अभी पूरे छह नहीं हुए हैं। अभी तुम्हें कुछ देर और रुकना होगा। अभी दो और लोगों से पूछना बाकी है।" सो वे फिर आगे चले।

इस बार उनको एक मगर मिला। ब्राह्मण ने बड़ी आशा के साथ उससे भी अपना सवाल किया कि शायद उसको अपने जैसा

जवाब मिल जाये — "मगर जी मगर जी। तुम मेरी बात सुनो और अपना फैसला सुनाओ।"

मगर बोला — "मुझे किस बात पर फैसला देना है।"

ब्राह्मण बोला — "इस चीते ने कहा कि मुझे पानी पीना है मुझे इस कटघरे में से निकाल दो। इसने वायदा किया कि अगर मैंने इसे निकाल दिया तो यह मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचायेगा। पर अब जब मैंने इसे निकाल दिया है तो यह मुझे खाना चाहता है। इसका मेरे साथ ऐसा करना क्या ठीक है?"

मगर बोला — "जब भी मैं अपनी नाक पानी से बाहर निकालता हूँ तो लोग मुझे सताते हैं और मुझे मारने की कोशिश करते हैं। चीते तुम आदमी को खा सकते हो क्योंकि जब तक ये आदमी ज़िन्दा हैं तब तक हमें आराम नहीं है।"

यह सुन कर आदमी का दिल डूब गया था। पाँच लोग उसके खिलाफ बोल चुके थे बस अब आशा की एक छोटी सी किरन उसे दिखायी दे रही थी – छठा जज। उसने चीते से विनती की कि "बस एक जज और। और अगर उसने भी मेरे खिलाफ फैसला दिया तो मैं तुम्हारा।"

यह कह कर वे दोनों फिर आगे चले। आगे चल कर उन्हें कौन मिला? एक गीदड़। ब्राह्मण ने उसे भी अपनी कहानी सुनायी और उसका फैसला माँगा — "गीदड़ मामा गीदड़ मामा बताओ क्या यह ठीक है?"

गीदड़ बोला — "ऐसे तो मैं कोई फैसला नहीं दे सकता जब तक मैं यह न देख लूँ कि जब यह झगड़ा शुरू हुआ तो तुम लोग किस तरह खड़े हुए थे। इसलिये पहले मुझे वह जगह दिखाओ जहाँ तुम लोग पहली बार मिले थे।"

सो ब्राह्मण और चीता गीदड़ को साथ ले कर अपनी उस जगह लौटे जहाँ वे पहली बार मिले थे। वहाँ पहुँच कर गीदड़ ने आदमी से पूछा — "अब मुझे तुम वह जगह बताओ जहाँ तुम खड़े थे?"

आदमी बोला — "वहाँ।"

गीदड़ बोला — "वहाँ कहाँ। मुझे वहाँ खड़े हो कर बताओ कि तुम कहाँ खड़े थे।" आदमी वहाँ जा कर खड़ा हो गया।

गीदड़ ने फिर पूछा — "और उस समय चीता कहाँ था?"

जवाब चीते ने दिया — "कटघरे में।"

गीदड़ बोला — "यह आप क्या कह रहे हैं चीते जी? आप और कटघरे में? और आप देख किस तरफ रहे थे?"

चीता बोला — "इस बात से तुम्हारा क्या मतलब है कि मैं किस तरफ देख रहा था। मैं कटघरे में खड़ा हुआ था बस।"

कह कर वह कटघरे में चढ़ गया और बोला "और मेरा सिर इस तरफ था।"

गीदड़ बोला — "यह तो ठीक है पर बिना यह देखे कि कटघरे का दरवाजा उस समय बन्द था खुला सारा मामला मैं ठीक से नहीं समझ पा रहा हूँ।"

ब्राह्मण बोला — "दरवाजा बन्द था और उसकी चटखनी लगी हुई थी।"

गीदड़ बोला — "तब दरवाजा बन्द करो और उसकी चटखनी लगाओ।"

जब ब्राह्मण ने यह कर दिया तब गीदड़ चिल्लाया — "ओ कृतघ्न चीते। जब इस भले ब्राह्मण ने तुम्हें खोला तो क्या इसलिये निकाला था कि बदले में तुम इसे ही खा जाओगे। अब तुम ज़िन्दगी भर यहीं रहो। अब तुम्हें यहॉ से कोई नहीं निकालेगा। और दोस्त ब्राह्मण अब आप जहॉ जा रहे हो जाइये मैं अपने रास्ते जा रहा हॅू।"

यह कह कर गीदड़ एक दिशा में भाग गया और ब्राह्मण अपने रास्ते चला गया।

15 स्वार्थी चिड़िया और बेघर कौए[14]

एक बार एक छोटी चिड़िया ने अपने लिये एक घर बनाया। उसमें उसने ऊन बिछायी। उसे डंडियों से सुरक्षित किया ताकि वह गर्मी जाड़ा और बरसात तीनों मौसमों में सुरक्षित रह सके।

पास में ही एक कौवी रहती थी। उसने भी अपना एक घर बनाया पर वह इतना अच्छा नहीं था। उसने तो कैक्टस के पौधों की हैज[15] के ऊपर बस कुछ डंडियाँ एक के ऊपर एक रख कर उसे बना लिया था।

इसका नतीजा यह हुआ कि एक दिन बहुत ज़ोर की बारिश आयी तो कौवी का घर तो टूट कर बह गया जबकि चिड़िया के घर को कोई नुकसान नहीं पहुँचा।

यह देख कर कौवी अपने कौए के साथ चिड़िया के घर गयी और बोली — "चिड़िया चिड़िया हमारे ऊपर दया करो। हमें शरण दो। क्योंकि हवा बहुत तेज़ बह रही है। बारिश बहुत ज़ोर से पड़ रही है। कैक्टस के काँटे हमारी आँखों में चुभ रहे हैं।"

---

[14] The Selfish Sparrow and the Houseless Crows. (Tale No 15).

[15] This is one kind of Cactus or prickly pears hedge. See its picture above.

पर चिड़िया उस समय खाना बना रही थी। वह बोली — "अभी मैं खाना बना रही हूँ अभी मैं तुम्हें घर के अन्दर नहीं आने दे सकती। तुम फिर बाद में आना।"

उस समय तो कौए चले गये पर थोड़ी देर बाद वे फिर लौटे और बोले — "चिड़िया चिड़िया हमारे ऊपर दया करो। हमें शरण दो। क्योंकि हवा बहुत तेज़ बह रही है। बारिश बहुत ज़ोर से पड़ रही है। कैक्टस के काँटे हमारी आँखों में चुभ रहे हैं।"

चिड़िया फिर बोली — "अभी मैं खाना खा रही हूँ मैं अभी तुम्हें अन्दर नहीं बुला सकती तुम बाद में आना।"

कौए फिर चले गये पर कुछ देर बाद वे फिर लौट कर आये और फिर बोले — "चिड़िया चिड़िया हमारे ऊपर दया करो। हमें शरण दो। क्योंकि हवा बहुत तेज़ बह रही है। बारिश बहुत ज़ोर से पड़ रही है। कैक्टस के काँटे हमारी आँखों में चुभ रहे हैं।"

इस बार चिड़िया बोली — "अभी मैं अपने बर्तन धो रही हूँ इसलिये अभी मैं तुम्हें अन्दर नहीं बुला सकती तुम बाद में आना।"

कौए फिर चले गये पर कुछ देर बाद वे फिर लौट कर आये और फिर बोले — "चिड़िया चिड़िया हमारे ऊपर दया करो। हमें शरण दो। क्योंकि हवा बहुत तेज़ बह रही है। बारिश बहुत ज़ोर से पड़ रही है। कैक्टस के काँटे हमारी आँखों में चुभ रहे हैं।"

इस बार चिड़िया बोली — "अभी मैं अपना फर्श साफ कर रही हूँ इसलिये अभी मैं तुम्हें अन्दर नहीं बुला सकती तुम बाद में आना।"

कौए फिर चले गये पर कुछ देर बाद वे फिर लौट कर आये और फिर बोले — "चिड़िया चिड़िया हमारे ऊपर दया करो। हमें शरण दो। क्योंकि हवा बहुत तेज़ बह रही है। बारिश बहुत ज़ोर से पड़ रही है। कैक्टस के काँटे हमारी आँखों में चुभ रहे हैं।"

इस बार चिड़िया बोली — "अभी मैं अपना बिस्तर ठीक कर रही हूँ इसलिये अभी मैं तुम्हें अन्दर नहीं बुला सकती तुम बाद में आना।"

इस तरह से उसने कई बहाने बना कर उनकी सहायता करने के लिये टाल दिया। जब चिड़िया और उसके बच्चों ने खाना खा लिया तब चिड़िया ने बचा हुआ खाना अगले दिन के लिये उठा कर रख दिया बच्चों को सुला दिया तब उसने चिल्ला कर कौओं को बुलाया कि अब तुम यहाँ आ सकते हो।

कौए आये पर इतनी देर तक बारिश और हवा में रहने की वजह से वे बहुत थके और परेशान थे।

जब चिड़िया और उसके बच्चे सो गये तो एक कौए ने दूसरे कौए से कहा — "इस चिड़िया ने हमारे ऊपर बिल्कुल भी दया नहीं दिखायी। जब तक यह और इसके बच्चे आराम से सो नहीं गये तब

तक इसने न तो हमको अन्दर आने दिया न इसने हमें खाना दिया अब हम इसको इसकी सजा देंगे।"

कह कर उन दोनों कौओं ने चिड़िया का अगले दिन के लिये बना कर रखा हुआ खाना उठाया और वहाँ से उड़ गये।

16 बहादुर कुम्हार[16]

एक बार की बात है कि एक बहुत ज़ोर के बिजली तूफान और बारिश की रात में एक चीता उससे बचने के लिये शरण ढूँढ रहा था। वह इससे बचने के लिये एक बुढ़िया की पुरानी झोंपड़ी के पास जा कर बैठ गया।

यह बुढ़िया बहुत गरीब थी। उसकी झोंपड़ी भी बहुत टूटी फूटी थी। कई तरफ से उसकी छत से बारिश का पानी टपक टपक कर अन्दर गिर रहा था। इससे वह बहुत परेशान थी। बारिश के टपके से बचने के लिये कभी वह इधर जाती कभी उधर जाती। कभी कोई चीज़ इधर खिसकाती कभी कोई चीज़ उधर खिसकाती।

और जब वह ऐसा कर रही थी तो कुछ कुछ बुदबुदाती जाती "उफ़ मेरे लिये यह कितनी मुश्किल का काम है। मुझे पूरा विश्वास है कि अगर यह सब ऐसे ही चलता रहा तो मेरी झोंपड़ी जल्दी ही गिर जायेगी।

अगर कोई हाथी शेर चीता भी मेरी झोंपड़ी में आ जाये तो भी मुझे उससे इसका आधा भी डर नहीं लगेगा जितना मुझे इस लगातार टपके से लग रहा है।"

फिर वह अपनी चारपायी और झोंपड़ी की दूसरी चीज़ें खिसकाने में लग जाती ताकि वह उन्हें बारिश के पानी से भीगने से

[16] The Valiant Chattee-maker. (Tale No 16).

बचा सके। चीता जो झोंपड़ी के बराबर में ही सिकुड़ा खड़ा था यह सब सुन रहा था।

उसने कहा यह स्त्री कह रही थी कि यह किसी हाथी शेर और चीते से उसका आधा भी नहीं डरेगी जितना वह इस "लगातार टपके" से डरती है। यह "लगातार टपका" क्या होता है। लगता है कि यह इन सबसे कुछ ज़्यादा ही भयानक चीज़ होती होगी।

उसने उसको फिर सुना कि वह अपनी झोंपड़ी की चीज़ें इधर से उधर खिसका रही थी। उफ़ यह क्या आवाज आ रही है। यह जरूर ही "लगतार टपके" की ही आवाज होगी।

इसी समय एक कुम्हार वहॉ से अपने गधे को ढॅूढता हुआ गुजरा। रात बहुत ठंडी थी सो उसने जरूरत से कुछ ज़्यादा ही ताड़ी[17] पी रखी है। रात में कुछ दिखायी नहीं दे रहा था। एक बार बिजली चमकी तो उसे बुढ़िया की झोंपड़ी के पास एक बड़ा सा जानवर लेटा हुआ दिखायी दिया।

उसने समझा कि वह उसका गधा था जिसे वह ढॅूढ रहा था। सो वह उसी की तरफ दौड़ पड़ा और उसके कान पकड़ कर उसने उसे मारना पीटना शुरू कर दिया।

वह चिल्लाया — "ओ नीच जानवर। क्या इस तरह से मालिक की सेवा की जाती है। इस ॲधेरी रात और भारी बारिश में तूने मुझे घर से बाहर निकलवा कर अपने आपको ढॅूढने पर लगाया। चल

[17] Translated for the words "Palm Wine".

उठ जल्दी उठ वरना मैं तेरी हड्डी हड्डी तोड़ कर रख दूँगा।" और वह चीते को डॉटता और फटकारता ही रहा। उसको बहुत गुस्सा आ रहा था।

चीते की समझ में ही नहीं आया कि यह हो क्या रहा था सो वह बहुत डर गया। उसने सोचा "यही "लगातार टपका" होगा। कोई आश्चर्य नहीं कि वह बुढ़िया किसी हाथी शेर या चीते की बजाय इस "लगातार टपके" से इतना डरती है क्योंकि यह तो मुझे भी बहुत ज़ोर से मार रहा है।

इस तरह कुम्हार ने चीते को उठाया उसकी पीठ पर बैठा और उसे जबरदस्ती घर ले गया। क्योंकि वह तो अब तक यही समझ रहा था कि वह अपने गधे पर सवार था। उसे घर ले जा कर उसने अपने घर के सामने वाले लट्ठे से बाँध दिया और अन्दर जा कर सो गया।

अगली सुबह जब कुम्हार की पत्नी जागी और उसने अपनी खिड़की में से झाँका तो उसने क्या देखा कि एक बहुत बड़ा चीता उसके घर के सामने वाले लट्ठे से बँधा हुआ है जिससे वे अक्सर अपना गधा बाँधा करते थे।

वह तुरन्त घर के अन्दर भागी गयी और पति पर चिल्लायी — "क्या तुम्हें मालूम भी हे कि कल रात तुम कौन से जानवर को बाँध कर लाये हो?"

"हॉ हॉ मुझे मालूम है। मैं अपना गधा ले कर आया हूँ।"

पत्नी बोली — "ज़रा बाहर आ कर देखो तो।"

और उसने उसको एक बड़ा सा चीता लट्ठे से बॅधा हुआ दिखा दिया। कुम्हार तो यह देख कर अपनी पत्नी से भी ज़्यादा आश्चर्य में पड़ गया। उसने अपने आपको देखना शुरू किया कि कहीं चीते ने उसे कहीं घायल न कर दिया हो।

पर नहीं। वह तो वहॉ बिल्कुल सुरक्षित खड़ा हुआ था। और उधर चीता लट्ठे से उसी तरह बॅधा खड़ा था जैसे उसे उसने कल रात बॉधा था।

कुम्हार की अब यह खबर तो सारे गॉव में फैल गयी। गॉव के सारे लोग उसे देखने आने लगे कि उसने कैसे तो चीता पकड़ा और फिर कैसे उसे पकड़ कर बॉध दिया।

उनको यह इतना अच्छा लगा कि उन्होंने कुछ आदमी एक चिट्ठी लिख कर यह बताने के लिये राजा के पास भेजे कि किस तरह से उनके गॉव के एक कुम्हार ने अकेले बिना किसी हथियार के एक चीता पकड़ कर अपने घर में बॉध रखा है।

राजा ने भी जब यह सुना तो उसको भी आश्चर्य हुआ। उसने अपनी ऑखों से यह देखने का विचार किया। उसने अपने घोड़े गाड़ियॉ बुलवायीं। दरबारी और नौकर बुलवाये और वे सब कुम्हार के घर यह तमाशा देखने चले।

अब यह चीता तो बहुत बड़ा था और इसने सारे देश को परेशान कर रखा था। इससे यह मामला और भी असाधारण हो गया था।

इस घटना से प्रभावित हो कर राजा कुम्हार को बहुत तरह के इनाम देना चाहता था। सो राजा ने उसको कई घर दिये कई जमीनें दीं और कुँआ भर कर पैसे दिये। उसको अपने दरबार में दरबारी बना लिया। साथ में उसके नीचे दस हजार घोड़े रख दिये।

कुछ समय बाद की बात है कि एक पड़ोसी राजा जिसकी इस राजा से बहुत दिनों से दुश्मनी चली आ रही थी इस राजा से युद्ध की घोषणा कर दी।

साथ में यह भी खबर मिली कि वह दुश्मन राजा इस राजा की सीमा पर अपने सेना डाले बैठा था और उसकी सेना बस अपने मालिक के हुक्म पर किसी भी पल हमला करने के लिये तैयार थी।

ऐसी हालत में किसको क्या करना चाहिये यह किसी को पता नहीं था। राजा ने अपने सारे जनरल बुलाये और उनसे पूछा कि उनमें से कौन सा जनरल उसकी सेना को सँभालने वाला था।

सबने कहा कि उनका देश इस तरह के हालात के लिये बिल्कुल तैयार नहीं था और ऐसे समय में तो उनकी हार निश्चित थी। इसलिये उनमें से कोई भी इस समय सेना का बोझ नहीं सँभाल सकता था। अब राजा नहीं जानता था कि वह इस समय किसको अपना जनरलों का सरदार नियुक्त करे।

तब उसके कुछ लोगों ने उसको सलाह दी — "आपने अभी अभी एक कुम्हार को दस हजार सिपाहियों की सेना सौंपी है। आप उसी को जनरलों का सरदार क्यों नहीं बना देते।

एक आदमी जो अकेला बिना किसी हथियार के इतना बड़ा चीता पकड़ कर अपने घर में बाँध सकता है उसको तो सबसे ज़्यादा बहादुर और अक्लमन्द योद्धा होना ही चाहिये।"

सो उसने कुम्हार को बुलवाया और कहा — "मैं अपने पूरे राज्य की बागडोर तुम्हारे हाथों में सौंपता हूँ। अब तुम्हारा काम यह है कि तुम हमारे दुश्मन को यहाँ से भगाओ।"

कुम्हार बोला — "जैसी आपकी इच्छा। पर इससे पहले कि मैं अपनी सारी सेना दुश्मन के सामने ले जाऊँ आप मुझे दुश्मन की सेना को देखने की इजाज़त दीजिये। और हो सके तो मुझे उनकी संख्या और ताकत जानने की भी इजाज़त दीजिये।"

राजा ने इजाज़त दे दी। कुम्हार अपने घर अपनी पत्नी के पास आया और बोला — "राजा ने मुझे अपने जनरलों का सरदार बना दिया है और यह काम तो मेरे लिये बहुत मुश्किल है क्योंकि इस काम करने के लिये मुझे सारी सेना के आगे आगे जाना पड़ेगा।

और तुम्हें पता है कि मैं तो कभी घोड़े पर चढ़ा नहीं। इसके लिये मैंने राजा से कुछ समय खरीद लिया है। राजा ने मुझे पहले अकेले वहाँ जाने की इजाज़त दे दी है ताकि मैं दुश्मनों की सेना का अन्दाजा लगा सकूँ।

क्या तुम मुझे एक बहुत ही शान्त टट्टू दे सकती हो जिस पर चढ़ कर मैं चला जाऊँ क्योंकि तुम्हें मालूम है कि मुझे घोड़े की सवारी तो आती नहीं। मैं कल सुबह चला जाऊँगा।"

लेकिन इससे पहले कि कुम्हार वहाँ जाता राजा ने उसके लिये एक बहुत ही शानदार घोड़ा जो बहुत कीमती साज सज्जा से सजा हुआ था भेज दिया और उससे विनती की कि वह जब सेना को देखने जाये तो उसी घोड़े पर बैठ कर जाये।

कुम्हार तो उसको देख कर बहुत परेशान हो गया क्योंकि वह घोड़ा जो राजा ने उसके लिये भेजा था वह तो बहुत तेज़ और ताकतवर था। उसको यकीन था कि वह उस पर कभी बैठ तक नहीं पायेगा। और अगर किसी तरह बैठ भी गया तो तुरन्त ही वह उस पर से गिर पड़ेगा।

फिर भी वह राजा को मना तो नहीं कर सकता था क्योंकि वह राजा की भेंट को स्वीकार न करके राजा को गुस्सा करना नहीं चाहता था।

सो उसने राजा को एक धन्यवाद का सन्देश भेजा और अपनी पत्नी से कहा — "मैं अब टट्टू पर नहीं जा सकता क्योंकि राजा ने मेरे लिये यह घोड़ा भेजा है। पर इस पर मैं सवारी कैसे करूँ।"

पत्नी बोली — "इतना मत डरो। तुम बस इस पर बैठ जाना मैं तुम्हें इससे कस कर बाँध दूँगी ताकि तुम इससे गिरो नहीं। और

अगर तुम रात को जाओगे तो तुम्हें कोई देख भी नहीं पायेगा कि तुम घोड़े से बँधे हुए हो।"

कुम्हार बोला — "यह ठीक है।"

सो उस रात उसकी पत्नी वह घोड़ा ले कर दरवाजे पर आयी जिसे राजा ने उसके लिये भेजा था।

कुम्हार ने घोड़े को देखते ही कहा — "अरे यह तो बहुत ऊँचा है मैं इस पर बैठूँगा भी कैसे।"

पत्नी ने कहा — "तुम इस पर कूद कर बैठ जाओ।"

कुम्हार ने उसके ऊपर कई बार कूद कर बैठने की कोशिश की पर हर बार वह उस पर से गिर जाता था। कुम्हार बोला — "मैं जब भी कूदता हूँ तो मैं भूल जाता हूँ कि इस पर बैठने के लिये मुझे किस तरफ घूमना चाहिये।"

पत्नी बोली — तुम्हारा मुँह घोड़े के मुँह की तरफ रहना चाहिये।"

और फिर वह एक ही कूद में घोड़े के ऊपर बैठ गया पर उसका मुँह घोड़े की पूँछ की तरफ था। उसकी पत्नी ने कहा "ऐसे बिल्कुल नहीं चलेगा।" कह कर उसने उसको नीचे उतारा और कहा कि वह उस पर बिना कूदे चढ़े।

वह फिर बोला — "जब मैं अपना बाँया पाँव पायदान पर रखता हूँ तो बिल्कुल मुझे याद नहीं रहता कि मुझे दाँये पैर का क्या करना है या उसे कहाँ रखना है।"

पत्नी बोली — "उसको दूसरे पायदान पर जाना चाहिये। देखो मैं तुम्हारी सहायता करती हूँ।"

क्योंकि घोड़ा नया था सो वह टिक कर खड़ा नहीं हो पा रहा था सो बहुत कोशिशों के बाद कई बार नीचे गिरने के बाद कुम्हार उस घोड़े पर बैठ सका। जैसे ही वह घोड़े पर बैठा तो वह चिल्लाया "मुझे जल्दी से घोड़े से बाँधो नहीं तो मैं गिर जाऊँगा।"

सो वह एक मजबूत रस्सी ले कर आयी और उससे उसके दोनों पैर पायदान से बाँधे। दोनों पायदानों को एक साथ बाँधा। एक और रस्सी उसने उसकी कमर में बाँधी एक रस्सी उसने उसकी गरदन में बाँधी और फिर दोनों को घोड़े के शरीर गरदन और पूँछ से बाँध दिया।

उधर जब घोड़े ने अपने चारों तरफ रस्सी बँधी महसूस की तो उसकी समझ में नहीं आया कि कौन सा अजीब सा प्राणी उसके ऊपर बैठ गया है। उसने तुरन्त ही हिनहिनाना कूदना और पैर फेंकना शुरू कर दिया। अन्त में वह कुलाचें भरता हुआ देश में से हो कर दौड़ चला।

कुम्हार चिल्लाया — "प्रिये प्रिये। तुम मेरे हाथ बाँधना तो भूल ही गयीं।"

पत्नी बोली — "कोई बात नहीं। तुम उसे उसकी गर्दन के बालों से पकड़ लो।"

सो उसने घोड़े को उसकी गर्दन के बालों से पकड़ लिया।

उधर घोड़ा भागता गया साथ में उसके भागता गया कुम्हार। गड्ढों के ऊपर हैजेज़ के ऊपर पहाड़ियों के ऊपर खेतों से हो कर। बिजली की गति से भागता हुआ वहाँ आ पहुँचा जहाँ दुश्मन का कैम्प लगा हुआ था।

कुम्हार को घोड़े की यह सवारी बिल्कुल अच्छी नहीं लगी और जब उसने देखा कि वह कहाँ आ कर खड़ा हो गया तो वह जगह तो उसको और भी खराब लगी।

उसने फिर एक कोशिश की वह घोड़े से आजाद हो सके क्योंकि उसको लगा कि अभी दुश्मन उसको पकड़ लेगा और उसको मार देगा। सो इस आशा में कि शायद वह किसी पेड़ को पकड़ने से अपनी रस्सियाँ खोल सके उसने रास्ते में हाथ बढ़ा कर एक छोटे से बरगद के पेड़ को पकड़ना चाहा।

पर घोड़ा बहुत तेज़ गति से भाग रहा था और वह मिट्टी जिसमें वह पेड़ लगा हुआ था ढीली थी सो बजाय उसकी रस्सी खुलने के वह पेड़ ही उखड़ आया और अब वह पेड़ हाथ में लिये घोड़े पर सवार चला जा रहा था।

दुश्मन के कैम्प वालों ने सुना कि राजा ने उनके खिलाफ अपनी सेना उनकी तरफ भेज दी है। और फिर जब देखा कि एक आदमी हाथ में पेड़ लिये उनकी तरफ चला आ रहा है तो उनको लगा कि उस सेना का सेनापति चला आ रहा होगा। वह बहुत तेज़ी से आ रहा था।

उन्होंने आपस में कहा — "देखो यह यह आदमी तो इतनी तेज़ी से जंगल के पेड़ उखाड़ते हुए चला आ रहा है। यह दुश्मन का ही आदमी लग रहा है। सारी सेना इसके बस पीछे ही होगी। अगर इसकी सारी सेना ऐसी ही होगी जैसा कि यह खुद है तो बस हम तो मर गये समझो।"

सो उनमें से कुछ राजा के पास भागे गये — "राजा। दुश्मन की सेना आ रही है। सेना के सिपाही बहुत बड़े साइज़ के लोग हैं। सब बहुत ही ताकतवर घोड़ों पर चढ़े हुए हैं। वे गुस्से में भरे हुए जंगल के पेड़ उखाड़ते चले आ रहे हैं। हम लोग आदमियों से तो लड़ सकते हैं पर इतने बड़े साइज़ के लोगों से नहीं।"

तभी कुछ और लोग आ पहुँचे। उन्होंने भी कहा कि ये लोग सच कह रहे हैं। तब तक कुम्हार उनके और पास आ चुका था। सो वे चिल्लाये "भागो भागो।" सो सारी सेना कैम्प छोड़ कर वहाँ से भाग ली। उन लोगों ने जिनको इसमें कोई डर नहीं लग रहा था केवल इसलिये भाग गये क्योंकि दूसरे लोग भाग रहे थे।

कैम्प छोड़ देने के बाद दुश्मन राजा को राजा को अपनी सील लगा कर अपने दस्तखत कर के एक दोस्ती का सन्देश भेजना पड़ा कि "हम आपसे दोस्ती चाहते हैं।"

कैम्प से दुश्मन लोग बस भाग कर गये ही थे कि कुम्हार अपने घोड़े पर सवार बरगद का पेड़ लिये हुए वहाँ आ पहुँचा। वह तो थकान की वजह से अधमरा हो रहा था।

जब वह कैम्प पहुँचा तो उसकी रस्सियाँ ढीली हो कर खुल गयीं थीं सो वह नीचे गिर पड़ा। घोड़ा भी थक गया था सो वह भी खड़ा रह गया। आगे नहीं जा सका।

जब कुम्हार को होश आया तो उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि सारा कैम्प खाली पड़ा था। पर वहाँ उसे बहुत सारे कीमती हथियार कपड़े और दूसरा सामान मिल गया। सबसे मुख्य वाले टैन्ट में एक चिट्ठी मिली जो दुश्मन राजा ने सुलह के लिये लिखी हुई थी।

उसने वह चिट्ठी उठायी और घर वापस आ गया। सारे रास्ते वह उसकी रास पकड़ कर पैदल ही आया क्योंकि यहाँ उसकी पत्नी तो थी नहीं जो उसे घोड़े पर सवार करा देती।

अबकी बार वह सीधे रास्ते से गया तो घर जल्दी ही पहुँच गया। पिछली बार वह लम्बे रास्ते से आया था ताकि वह वहाँ आधी रात के समय पहुँचे। उसको जल्दी ही वापस आया देख कर उसकी पत्नी उससे मिलने के लिये बाहर दौड़ी आयी।

जैसे ही कुम्हार ने अपनी पत्नी को देखा तो बोला — "ओह प्रिये। जब से मैं तुमसे आखिरी बार मिला था तबसे तो मैं दुनियाँ घूम आया हूँ। बड़े भयानक और आश्चर्यजनक घटनाओं का सामना किया है मैंने। पर अभी उनकी बात करने की कोई बात नहीं है अभी तो तुम इस चिट्ठी को और इस घोड़े को राजा के पास भेजने का इन्तजाम करो।

इस घोड़े को थका हुआ देख कर वह अपने आप ही समझ जायेंगे कि मैं कितनी लम्बी यात्रा कर के आया हूँ। अगर यह बात हम उनको पहले ही बता दें तो मुझे उतनी सुबह को उनके दरबार में उनके सामने जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी जैसे कि मैं रोज जाता हूँ।

सो उसकी पत्नी ने वह चिट्ठी और घोड़ा दोनों राजा के पास भिजवा दिये और कहलवाया कि उसका पति अगले दिन सुबह ही दरबार में हाजिर होगा क्योंकि अभी बहुत रात हो गयी है।

जैसा उसने कहा था अगले दिन वह वहाँ गया। लोगों ने उसे आते देखा तो बोले — "अरे यह आदमी तो बहादुर होने के साथ साथ कितना शालीन भी है कि दुश्मन को अकेले भगा कर भी यह कितनी सादगी से दरवाजे से चला आ रहा है। ऐसा नहीं है कि जैसे ऐसा करने के बाद कोई भी शान से यहाँ आता यह उस ढंग से आया हो। यह तो अपने साधारण ढंग से ही आया है।"

17 राक्षस का महल[18]

यह बहुत पुरानी बात है कि एक राजा था। उसकी पत्नी दो छोटी बच्चियों को छोड़ कर मर गयी थी। अपनी पत्नी के चले जाने के जल्दी ही बाद उसने दूसरी शादी कर ली थी। उसकी दूसरी पत्नी अपने सौतेले बच्चों को बिल्कुल भी प्यार नहीं करती थी और अक्सर ही उनके साथ बेरहमी का व्यवहार करती थी।

राजा के पास इतनी फुरसत नहीं थी कि वह अपनी पहली पत्नी के बच्चों को देखे भाले इसलिये उसकी दूसरी पत्नी ही उन्हें देखती भालती थी जैसे भी वह चाहती। इससे बेचारी दोनों छोटी बच्चियाँ बहुत ही खराब ज़िन्दगी बिता रही थीं।

एक दिन एक बच्ची ने दूसरी बच्ची से कहा — "अब हमको यहाँ और ज़्यादा नहीं रहना चाहिये। चलो यहाँ से हम जंगल भाग चलते हैं क्योंकि यहाँ तो हमारी कोई परवाह करता नहीं सो किसी को इस बात से क्या मतलब है कि हम यहाँ रहें या यहाँ से कहीं और चले जायें।"

सो दोनों वहाँ से जंगल चली गयीं और वहाँ बहुत दिनों तक जंगल में लगे फलों पर रहीं।

[18] Rakshas' Palace. (Tale No 17).

आखिर जब वे वहाँ बहुत दिनों तक घूमती रहीं तो वे एक बहुत सुन्दर महल के पास आयीं जो एक राक्षस का था। पर जब वे वहाँ पहुँचीं तो राक्षस और उसकी पत्नी दोनों घर से बाहर थे।

एक राजकुमारी ने दूसरी से कहा — "जंगल के बीच में बना हुआ यह इतना बढ़िया महल तो निश्चित रूप से किसी राक्षस का ही हो सकता है। पर लगता है कि इसका मालिक कहीं बाहर गया हुआ है। चलो इसके अन्दर चलते हैं और देखते हैं कि इसमें हमें कुछ खाने को लिये मिल सकता है या नहीं।"

सो वे दोनों राक्षस के महल में चली गयीं। वहाँ उनको कुछ चावल मिल गये तो उन्होंने उन्हें उबाल कर खा लिया। फिर उन्होंने कमरा साफ किया और घर का फर्नीचर सफाई से सजा दिया।

यह काम अभी उन्होंने मुश्किल से खत्म किया होगा कि राक्षस और राक्षस की पत्नी घर वापस आ गये। उनको देख कर दोनों राजकुमारियाँ इतनी डरीं कि वह उस महल की सबसे ऊपर की मंजिल की तरफ भागी और जा कर छत पर छिप गयीं। वहाँ से वे एक तरफ घर का आँगन देख सकती थीं और दूसरी तरफ खुला देश देख सकती थीं।

महल की छत राक्षस और उसकी पत्नी की बहुत प्रिय जगह थी। यहाँ वे लोग गर्मियों की शाम में बैठा करते थे अपना अनाज साफ किया करते थे अपने कपड़े सुखाया करते थे। यहाँ दोनों लड़कियों को अनाज की बालों के ढेर के पीछे छिपने के लिये अच्छी

खासी जगह मिल गयी। इन बालियों में से अभी अनाज निकाला जाना था।

जब राक्षस घर के अन्दर आये तो पति ने घर में चारों तरफ देखा और अपनी पत्नी से कहा — "लगता है कि किसी ने हमारा घर ठीक किया है। हर चीज़ बड़ी साफ और ठीक ढंग से रखी हुई है। क्या यह तुमने किया है।"

पत्नी बोली — "नहीं मैंने तो नहीं किया। कौन कर सकता है यह।"

राक्षस आगे बोला — "किसी ने हमारा ऑगन भी बुहारा है। क्या तुमने ऑगन में झाड़ू लगायी।"

पत्नी बोली — "नहीं मैंने तो नहीं लगायी। मुझे नहीं मालूम किसने किया यह।"

यह सुन कर राक्षस घर में चारों तरफ अपनी नाक ऊँची करके घूमने लगा जैसे सूँघ कर कुछ पता लगाने की कोशिश कर रहा हो। वह बोला — "यहाँ कोई तो है। मुझे आदमी के खून और माँस की खुशबू आ रही है। कहाँ हो सकते है वे।"

उसकी पत्नी चिल्लायी — "तुम बेकार की बात कर रहे हो। तुमको माँस और खून की बू आ रही है। मालूम है क्यों। क्योंकि अभी तुमने लाखों लोग मारे और खाये हैं। अगर तुम्हें खून और माँस की बू नहीं आती तब मुझे आश्चर्य होता।"

इस तरह वे इस बारे में आपस में ही झगड़ते रहे। आखिर राक्षस बोला — "चलो छोड़ो जाने दो। मुझे मालूम नहीं कैसे पर मुझे बहुत प्यास लगी है। मुझे थोड़ा पानी पिलाओ।"

सो राक्षस और उसकी पत्नी पास के एक कुँए पर गये और उसमें से पानी खींचने के लिये बर्तन उसमें डाल कर खींचना और पीना शुरू किया।

राजकुमारियाँ जो घर की छत पर थीं उन्होंने उनको देखा। छोटी वाली राजकुमारी बहुत अक्लमन्द थी। जब उसने राक्षस और उसकी पत्नी को कुँए के पास देखा तो उसने अपनी बहिन से कहा — "अब मैं कुछ ऐसा करने वाली हूँ जो हम दोनों के लिये फायदेमन्द होगा।"

कह कर वह छत से नीचे की तरफ भाग गयी। वह कुँए पर गयी और उसने देखा कि राक्षस और राक्षसी दोनों के शरीर आधे कुँए की तरफ थे सो उसने उनके पैर पकड़ कर उनको कुँए में हल्के से धक्का दे दिया जिससे वे दोनों कुँए में गिर पड़े और डूब कर मर गये।

राजकुमारी उनको कुँए में धक्का दे कर तुरन्त ही अपनी बहिन के पास लौटी और बोली — "मैंने उन दोनों राक्षसों को मार दिया है।"

बहिन बोली — "क्या कहा तुमने? क्या तुमने अकेली ने दोनों राक्षसों को मार दिया?"

छोटी बहिन बोली — “हॉ मैंने दोनों राक्षसों को मार दिया।”

बड़ी बहिन ने आश्चर्य से पूछा — “अब वे कभी वापस नहीं आयेंगे न?”

“नहीं।”

राक्षसों को मार कर दोनों बहिनें अब उस महल की मालकिन बन बैठीं और वहॉ बहुत दिनों तक रहीं। वहॉ उनको ढेरों बढ़िया कीमती कपड़े मिले सोना चॉदी और जवाहरात मिले जो उसने लोगों को मार कर उनसे इकट्ठा किये थे।

उस महल के चारों तरफ चिड़ियों के बैठने की जगह थी जानवरों के रहने के शैड बने हुए थे जो उस राक्षस के ही थे।

रोज सुबह सुबह छोटी राजकुमारी चिड़ियों और जानवरों को खाना खिलाने के लिये बाहर ले जाती और शाम को वापस ले आती जबकि बड़ी राजकुमारी घर में रह कर खाना बनाती और घर की देखभाल करती।

छोटी बहिन अक्सर अपनी बड़ी बहिन को कहती कि वह भी कभी कभी बाहर जाया करे। कभी किसी अजनबी को अपने घर के आसपास देखे तो उसका ख्याल रखे चाहे वह आदमी हो या स्त्री या बच्चा। अगर कोई अजनबी दिखायी दे तो छिप जाये ताकि किसी को यह शक न हो कि हम यहॉ रह रहे हैं।

अगर कोई पीने के लिये पानी मॉगे या कोई भिखारी खाना मॉगे तो ध्यान रखे कि उसे वह फटे कपड़े पहन कर ही दे। अपना चेहरा

भी कोयले से मल कर छिपा कर रखे और अपने आपको जितना बदसूरत दिखा सके दिखाये। उसका कहना था कि अगर वे तुम्हें सुन्दर देख लेंगे तो वे तुम्हें चुरा कर ले जायेंगे और फिर हम कभी नहीं मिल पायेंगे।

तो बड़ी राजकुमारी कहती "ठीक है मैं ध्यान रखूँगी।"

उन लोगों को वहाँ रहते हुए बहुत दिन बीत गये और वहाँ कोई नहीं आया। आखिर एक दिन जब छोटी राजकुमारी रोज की तरह चिड़ियों और जानवरों को ले कर उन्हें खिलाने के लिये गयी हुई थी कि एक पड़ोस के देश के राजा का नौजवान बेटा उधर आ निकला।

वह राजकुमार उस जंगल में कई दिनों से शिकार करने के लिये निकला हुआ था। उस समय वह और उसके साथी कुछ प्यासे थे सो पानी की तलाश में जंगल में इधर उधर भटक रहे थे कि उधर आ निकले।

राजकुमार ने जंगल में एक अकेला महल खड़ा देखा तो उसे भी बहुत आश्चर्य हुआ और उसके मुँह से निकला "क्यों किसी को जंगल के इतने भीतर महल बनवाना चाहिये। चलो इसके अन्दर चलते हैं। इसमें रहने वाले हमको पानी जरूर ही पिलायेंगे।"

उसके नौकर बोले — "नहीं नहीं राजकुमार आप अन्दर न जाइये। ऐसा लगता है कि यह मकान तो किसी राक्षस का है।"

राजकुमार बोला — “ऐसा लगता तो है पर देखते हैं। मुझे ऐसा नहीं लगता कि यहाँ कोई भयानक आदमी रहता है क्योंकि यहाँ न तो कोई अवाज आ रही है और न ही कोई ज़िन्दा प्राणी नजर आ रहा है।”

सो उसने दरवाजा खटखटाया।

दरवाजे में चटखनी लगी हुई थी सो एक बार उसने फिर ज़ोर से दरवाजा खटखटाया और बोला — “क्या इस महल में रहने वाला दूसरों के साथ भलाई करने के लिये मुझे और मेरे साथियों को पानी पिलायेगा?”

किसी ने भी जवाब नहीं दिया क्योंकि राजकुमारी जिसने उसकी आवाज सुन ली थी अपने ऊपर वाले कमरे में कुछ कर रही थी। असल में यह आवाज सुन कर वह अपने चेहरे पर कोयला लगा रही थी अपनी कीमती पोशाक के ऊपर फटे हुए कपड़े पहन रही थी जैसा कि उसकी छोटी बहिन ने उससे करने के लिये कहा था।

इतनी देर तक दरवाजा न खुलने पर राजकुमार अपना धीरज खो बैठा और उसने गुस्से से दरवाजा ज़ोर से हिलाया और बोला — “तुम जो कोई भी हो मुझे अन्दर आने दो। अगर तुम दरवाजा नहीं खोलोगे तो मैं दरवाजा तोड़ दूँगा।”

यह सुन कर बेचारी राजकुमारी तो बहुत डर गयी। अपने चेहरे को काला कर के और अपने आपको जितना बदसूरत बना सकती थी बना कर वह एक घड़ा पानी ले कर नीचे दौड़ी आयी। आ कर

उसने दरवाजा खोला और राजकुमार के हाथ में घड़ा पकड़ा दिया पर वह बोली कुछ नहीं क्योंकि वह बहुत डरी हुई थी।

राजकुमार एक बहुत ही होशियार आदमी था। जैसे ही उसने पानी का घड़ा पानी पीने के लिये अपने मुँह तक उठाया तो उसने उस लड़की को ध्यान से देखा तो उसको लगा कि यह लड़की जो मेरे लिये पानी का घड़ा ले कर आयी है कुछ अजीब सी लड़की है।

यह लड़की तो बहुत सुन्दर हो सकती थी पर लगता है कि इसके चेहरे को धोने की जरूरत है। और इसकी पोशाक भी बहुत ही गन्दी है। यह काला काला इसके चेहरे और हाथों पर क्या लगा हुआ है। यह तो कुछ अस्वाभाविक सा है।

यह सोचते हुए पानी को बजाय पीने के उसने राजकुमारी के चेहरे पर फेंक दिया। राजकुमारी एक चीख के साथ थोड़ा पीछे को हट गयी। पर उस पानी से उसके चेहरे का थोड़ा सा रंग बह गया और उसके नीचे से उसकी गोरी चमकीली मुलायम खाल चमकने लगी।

राजकुमार ने उसका हाथ पकड़ लिया और उससे पूछा — "अब तुम मुझे सच बताओ कि तुम कौन हो। तुम यहाँ कहाँ से आयी हो। तुम्हारे माता पिता कौन हैं। और तुम यहाँ जंगल में अकेली क्यों हो। मुझे इन सब बातों का जवाब दो वरना मैं तुम्हारी गर्दन काट दूँगा।"

राजकुमारी तो इतना डर गयी थी कि उसके मुँह से तो बोली ही नहीं निकल रही थी। फिर भी उससे उसे जितनी अच्छी तरह से समझाया जा सका उतनी अच्छी तरह समझाया कि वह भी एक राजा की बेटी है और अपनी बेरहम सौतेली माँ से तंग हो कर इस जंगल में आ गयी थी।

तभी से वह इस मकान में रह रही थी कह कर उसने अपनी कहानी खत्म की।

राजकुमार बोला — "सुन्दरी। मेरी धृष्टता को माफ करना। पर तुम डरो नहीं। मैं तुम्हें अपने घर ले जाऊँगा और तुम्हें अपनी पत्नी बना लूँगा।"

वह जितना ज़्यादा बोल रहा था राजकुमारी उतनी ही ज़्यादा डर रही थी और इतनी ज़्यादा डर रही थी कि उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह क्या कह रहा है। उसको लगा कि वह उसे मार देगा सो वह रोने लगी।

उसने अभी तक राजकुमार को यह नहीं बताया था कि उसकी एक बहिन भी है और उसी के पास है क्योंकि उसको लगा कि कहीं वे उसको भी न मार डालें।

पर राजकुमार तो बहुत दयालु था। वह तो कभी यह सोच भी नहीं सकता था कि वह उन दोनों को अलग कर देगा जो इतने दिनों से साथ रह रही थीं। वह इस मामले को समझ ही नहीं रही थी। वह इतनी डरी हुई थी कि ऐसे मीठे शब्दों को भी नहीं समझ पा रही

थी। उसने अपने नौकरों से कहा कि वह उसको एक पालकी में बिठा दें और फिर घर चलें। नौकरों ने ऐसा ही किया।

जब राजकुमारी ने देखा कि वह तो पालकी में बन्द कर दी गयी है और वहाँ से ले जायी जा रही है। कहाँ। वह यह भी नहीं जानती। तो उसने सोचा कि जब उसकी बहिन घर लौटेगी और उसको घर में नहीं पायेगी तो उस पर क्या बीतेगी।

उसने सोचा उसको यह बताने के लिये कि वे उसको किस तरफ ले गये हैं अपनी कोई निशानी छोड़ जायेगी। उसके गले में मोती की कई मालाऐं पड़ी हुई थीं। उसने उनको खोल लिया।

उसने अपनी साड़ी फाड़ी और उसके छोटे छोटे टुकड़े किये उसके हर टुकड़े में एक एक मोती बाँधा ताकि वह इतना भारी हो जाये कि सीधा जा कर जमीन पर गिरे।

सारे रास्ते जब तक वह राजकुमार के महल तक पहुँची एक एक मोती गिराती गयी। उसका आखिरी मोती महल के फाटक के पास जा कर गिरा।

बूढ़े राजा और रानी इतनी सुन्दर राजकुमारी को देख कर बहुत खुश हुए जिसे उनका बेटा ले कर आया था। जब उन्होंने उसकी कहानी सुनी तब तो उनको उससे और भी अधिक सहानुभूति हो गयी।

वे बोले — "उफ़ कितनी दुखभरी कहानी है इसकी। खैर अब जब यह हमारे पास आ ही गयी है तो हम इसके लिये जो कुछ भी कर पायेंगे करेंगे।"

उन्होंने उसकी शादी बड़ी धूमधाम से अपने बेटे से कर दी। उन्होंने उसको बहुत सारे कीमती बढ़िया कपड़े और गहने दिये। वे उस पर बहुत दयालु थे।

पर राजकुमारी बहुत उदास और दुखी रहती थी क्योंकि वह हमेशा ही अपनी छोटी बहिन के बारे में सोचती रहती थी लेकिन उसको हिम्मत नहीं हुई कि वह राजकुमार या राजा से उसे यहाँ महल में लाने के लिये कह दे।

इस बीच छोटी बहिन जो चिड़ियों और जानवरों के साथ बाहर थी राजकुमार के उसकी बहिन को ले जाने के बाद घर लौटी। जब वह वापस आयी तो उसने देखा कि घर का दरवाजा तो खुला पड़ा है। वहाँ कोई उसके इन्तजार में नहीं खड़ा।

उसको यह बहुत अजीब सा लगा क्योंकि उसकी बहिन रोज उसके आने पर दरवाजे पर उसका स्वागत करती थी। वह ऊपर गयी उसकी बहिन वहाँ भी नहीं थी। सारा घर खाली पड़ा था।

अब उसको वहाँ अकेला ही रहना था क्योंकि रात होने वाली थी और इस समय वह उसको ढूँढने के लिये कहीं नहीं जा सकती थी। सारी रात वह रोती रही और घर में ही घूमती रही। "यहाँ

कोई तो जरूर आया था और वह मेरी बहिन को चुरा कर ले गया है।

अगली सुबह सवेरे ही वह उठी और अपनी बहिन को ढूँढने लगी। रास्ते में उसको अपनी बहिन का उसकी साड़ी के एक छोटे से टुकड़े में बॅधा हुआ एक मोती गिरा हुआ मिला। वह कुछ और आगे चली तो उसे वैसा ही साड़ी के टुकड़े में बॅधा हुआ एक और मोती मिला। ऐसे उसे उस सड़क पर जिससे राजकुमार उसको ले कर गया था कई मोती मिले।

बहिन समझ गयी कि उसकी बहिन ने उसके लिये यह निशानी छोड़ दी है ताकि वह उसे यह बता सके कि वह किस रास्ते गयी है। अब वह बहुत तेज़ तो चल नहीं सकती थी इसके अलावा ज़्यादा चलना उसको थका देता था। अगला मोती उसको कभी कभी **2–3** दिन चलने पर मिलता था।

आखिर वह एक बड़े शहर आ गयी। उसको लगा कि उसकी बहिन शायद वहीं ले जायी गयी होगी।

यहाँ आ कर उसने सोचा कि अगर उसकी बहिन को उठाने वालों ने उसको देख लिया तो वे उसको भी उठा कर ले जायेंगे और फिर तो मैं उसे कभी नहीं ढूँढ पाऊँगी। सो उसने अपना वेश बदलने की सोची।

जब वह यह सोच रही थी तो उसने पास में ही एक गरीब भिखारिन का ढॉचा पड़ा देखा। लग रहा था कि वह भूख और कमी

की वजह से मर गयी थी। उसका शरीर सिकुड़ा हुआ सा था क्योंकि उसके अन्दर अब हड्डी और खाल के सिवाय और कुछ नहीं था।

राजकुमारी ने उसकी खाल निकाली साफ की और उसको अपने सुन्दर चेहरे पर पहन लिया जैसे कोई अपने हाथ पर दस्ताना पहन लेता है। फिर उसने एक लम्बी सी डंडी ली और लॅगड़ाती सी शहर की तरफ चलने लगी।

बुढ़िया की खाल तो बहुत ही सिकुड़ी हुई थी सो जो लोग उसके पास से गुजर रहे थे वे सोचते थे "यह कितनी बदसूरत स्त्री है।" उन्होंने तो यह कभी सपने में भी नहीं सोचा होगा कि इस बदसूरत खाल के नीचे कोई बहुत सुन्दर नौजवान लड़की छिपी होगी।

इस तरह वह एक एक मोती चुनते हुए महल के दरवाजे तक जा पहुँची जहाँ उसने आखिरी मोती उठाया। यहाँ आ कर उसे लगा कि उसकी बहिन यहीं कहीं पास में ही होनी चाहिये। पर कहाँ। यह उसे नहीं मालूम था।

उसकी बहुत इच्छा हुई कि वह महल में जाये और उसके बारे में पूछे पर कोई पहरेदार उस जैसी बुढ़िया को महल के अन्दर नहीं घुसने दे रहा था। वह उनको अन्दर जाने के लिये कोई मोती भी नहीं दे सकती थी क्योंकि वे सोचते कि इतनी गरीब बुढ़िया के पास मोती कहाँ से आये। कहीं यह चोर तो नहीं।

सो उसने महल के आसपास ही रहने और तब तक वहीं रहने का तय किया जब तक उसकी किस्मत साथ नहीं देती कि उसको अपनी बहिन के बारे में कुछ पता चल जाये।

महल के सामने ही एक किसान का छोटा सा घर था। राजकुमारी उधर गयी और वहाँ जा कर खड़ी हो गयी। किसान की पत्नी ने उसे देखा तो बोली — "ओ गरीब बुढ़िया तुम कौन हो। तुम्हें क्या चाहिये। तुम यहाँ क्यों आयी हो। क्या तुम्हारा कोई दोस्त नहीं है।"

राजकुमारी बोली — "अफसोस कि नहीं है। मैं एक बहुत ही गरीब बुढ़िया हूँ। मेरे माता पिता भी नहीं है और न कोई बेटा बेटी ही है। कोई भाई बहिन भी नहीं है जो मेरी देखभाल कर सके। सब ऊपर चले गये। अब मैं दरवाजे दरवाजे भीख माँग कर अपना गुजारा करती हूँ।"

किसान की पत्नी बोली — "माता जी आप चिन्ता न करें। आ हमारे घर के दरवाजे के पास पोर्च में सो जायें। मैं आपको खाना दे दिया करूँगी।"

सो राजकुमारी उस रात को वहाँ सो गयी बल्कि वह वहाँ कई रात तक सोयी। दिन में किसान की पत्नी उसको खाना दे देती थी रात को वह उसके मकान के दरवाजे के पास पोर्च में सो जाती थी।

महल के पास ही एक बहुत बड़ा सा तालाब था जिसमें बहुत सुन्दर लाल कमल के फूल खिले हुए थे। राजा को ये फूल बहुत पसन्द थे और वह उनको बहुत कीमती समझता था।

क्योंकि यह तालाब किसान के घर के पास था सो राजकुमारी सुबह सवेरे दिन निकलने से भी पहले लगभग तीन बजे रोज वहाँ जाती थी। अपनी बुढ़िया वाली खाल निकालती थी नहाती धोती थी अपने लम्बे बालों में कंघी करती थी।

और फिर अपने बालों में लगाने के लिये एक कमल का फूल तोड़ती थी जैसा कि वह बचपन से करती चली आयी थी और कुछ देर वहीं बैठ कर अपनी पुरानी यादें ताजा करती थी। फिर जब बुढ़िया की खाल सूख जाती थी तो फूल निकाल कर फेंक देती थी और खाल पहन कर किसान के घर वापस आ जाती थी।

कुछ समय बाद राजा को पता चला कि कोई उसके प्रिय कमल के फूल तोड़ लेता था। उसने वहाँ पहरा बिठाया। राज्य के अक्लमन्द लोगों ने आपस में विचार किया कि चोर कौन हो सकता है पर चोर का कुछ पता नहीं चला।

आखिर यह बात और आगे बढ़ी तो राजा का दूसरा बेटा बोला कि मैं देखता हूँ कि ये फूल कौन चोरी कर रहा है। राजा का यह दूसरा बेटा उसी राजकुमार का छोटा भाई था जो राजकुमारी की बड़ी बहिन को उठा कर ले गया था।

तालाब के चारों तरफ बहुत सारे पेड़ लगे हुए थे तो एक शाम छोटा राजकुमार उनमें से एक पेड़ पर शाम से ही चढ़ कर बैठ गया। ओस से बचने के लिये अपने ऊपर उसने डंडियों और पत्तों से एक छत सी बना ली। वहाँ बैठ कर उसने सारी रात फूलों पर पहरा देने का निश्चय किया।

तालाब में कमल के फूल बिल्कुल शान्त खड़े हुए थे। चाँदनी फैल रही थी सो वे सब उसको दिखायी दे रहे थे। चोरी का कोई डर नहीं था सिवाय किसी तेज़ हवा के झोंके के जो उसको तोड़ देती।

कुछ देर बाद ही छोटे राजकुमार को नींद आने लगी।

उसने सोचा कि अब कोई चोर क्या आयेगा कि लो देखो सुबह सवेरे के समय में वहाँ कौन आया? वह बुढ़िया जिसको उसने महल के दरवाजे पास अक्सर देखा था।

उसको देखते ही छोटे राजकुमार के मुँह से निकला "तो यह है वह कमल चोर। पर इस बुढ़िया को यह कमल के फूल क्यों चाहिये।"

अब ज़रा उसका आश्चर्य देखो जब उसने देखा कि उसने अपनी बुढ़िया की खाल निकालनी शुरू की। उसने देखा कि उसके नीचे तो एक गोरे रंग की इतनी सुन्दर लड़की थी जैसी उसने पहले कभी देखी नहीं थी।

इतनी सुन्दर इतनी ताजा इतनी नौजवान और इतनी शान वाली लड़की। उसकी सुन्दरता की चमक ने तो छोटे राजकुमार की ऑखें चौंधियॉ दीं। उसके मुॅह से फिर निकला "यह कोई लड़की है या कोई आत्मा। कोई शैतान है या वेश बदले कोई देवदूत।"

लड़की ने अपने बाल ऊपर किये और एक लाल कमल का फूल तोड़ कर उनमें गूॅथ लिया। फिर वह तालाब में पैर लटका कर बैठ गयी और अपने गले में पड़ी मोती की माला से खेलने लगी। यह उन्हीं मोतियों की माला थी जो उसकी बहिन के थे।

फिर जैसे जैसे उजाला होने लगा तो उसने अपने बालों में लगा हुआ कमल का फूल निकाल कर फेंक दिया वह खाल फिर से पहन ली और वहॉ से जल्दी से चली गयी।

छोटा राजकुमार जब सुबह घर पहॅुचा तो सबसे पहले उसने अपने माता पिता से यही कहा — "मॉ पिता जी मैं उस बुढ़िया से शादी करना चाहता हूॅ जो हमारे महल के सामने वाले किसान के घर के सामने खड़ी रहती है।"

दोनों चिल्लाये — "क्या। तुम पागल हो गये हो। तुम उस पतली सी बुढ़िया से शादी करना चाहते हो। तुम राजकुमार हो तुम ऐसा नहीं कर सकते। क्या दुनियॉ में और राजकुमारियॉ नहीं हैं जिनमें से किसी से तुम शादी कर सको जो तुम उस बुढ़िया भिखारिन से शादी करना चाहते हो।"

छोटा राजकुमार बोला — "कुछ भी हो मैं उस बुढ़िया से ही शादी करूँगा। मैं हमेशा से ही आपका एक आज्ञाकारी बेटा रहा हूँ पर इस मामले में मैं चाहता हूँ कि आप मेरी बात मान लें।"

यह देख कर कि उनका बेटा वास्तव में उस बुढ़िया से शादी करना चाहता था और उनकी कोई भी बात उसको अपने इरादे से हिला नहीं रही थी उन्होंने उस बुढ़िया को लाने के लिये अपने पहरेदार भेज दिये।

उसके आने पर राजकुमार की शादी बिना किसी शोर शराबे के कर दी गयी क्योंकि राज परिवार को इस शादी से बहुत शर्म आ रही थी।

जैसे ही शादी की रस्में खत्म हो गयीं छोटे राजकुमार ने अपनी पत्नी से कहा — "प्रिये। अब मुझे ज़रा यह तो बता दो कि तुम्हें यह बुढ़िया की खाल और कितने दिनों तक पहननी पड़ेगी। अच्छा हो अब अगर तुम मेरे ऊपर मेहरबान हो कर इसे निकाल दो।"

राजकुमारी सोचने लगी कि राजकुमार को इस बात का पता कैसे चला। और या फिर उसका यह केवल अन्दाज ही था।

उसने सोचा "अगर मैंने यह खाल निकाल दी मेरे पति यह सोचेंगे कि मैं सुन्दर हूँ तो वह मुझे महल में ही बन्द कर लेंगे और यहाँ से बाहर जाने ही नहीं देंगे तो फिर मैं अपनी बहिन को कैसे ढूँढ पाऊँगी। तो इससे तो अच्छा यह है कि मैं अभी यह खाल न उतारूँ।"

सो वह जैसे बुढ़ियें बोलती हैं जिनके दाँत नहीं होते उसी ढंग से बुड़बुड़ाते हुए बोली — "मुझे मालूम नहीं आप क्या कह रहे हैं। मैं तो वही हूँ जैसा मुझे इन सालों ने बनाया है। कोई आदमी अपनी खाल नहीं बदल सकता।"

छोटे राजकुमार ने गुस्सा होने का नाटक किया — "तुम अपना यह छिपाने वाला वेश अभी अभी उतारो नहीं तो मैं तुम्हारी जान ले लूँगा।"

पर उसने सिर झुका कर कहा — "आपको मुझे मारना हो तो आप मार सकते हैं पर कोई अपनी खाल नहीं बदल सकता।"

यह सुन कर छोटा राजकुमार मन ही मन मुस्कुराया और बोला "देखता हूँ कि तुम्हारा यह नाटक कब तक चलता है।" इस तरह राजकुमारी अपनी बुढ़िया वाली खाल ओढ़े ही रही।

पर उसका सुबह सवेरे तीन बजे उठ कर नहाना धोना खाल धोना सुखाना आदि कार्यक्रम चलता रहा। कुछ दिन बाद छोटा राजकुमार सुबह सवेरे राजकुमारी के साथ साथ ही उठा और दूसरे कमरे तक उसके पीछे पीछे गया।

जब उसने खाल धो कर सूखने डाली तो उसने उसे वहाँ से उठा कर आग में डाल दी। अब तो राजकुमारी अपने असली रूप में प्रगट होने पर मजबूर हो गयी।

वह उस कमरे से अपने कमरे की तरफ चली। वह अपना वेश खो जाने पर बहुत दुखी थी। रास्ते में ही उसका पति मिल गया।

वह उससे मुस्कुरा कर बोला — "प्रिये अब तुम्हारी वह खाल कहाँ है। अब तुम इसे उतार नहीं सकतीं।"

जल्दी ही सारे महल में यह अच्छी खबर फैल गयी कि छोटे राजकुमार की पत्नी कोई बुढ़िया नहीं बल्कि एक बहुत सुन्दर नौजवान लड़की है।

सब उसे देख कर चिल्लाये "इस लड़की की शक्ल हमारे बड़े राजकुमार की पत्नी जंगल वाली लड़की की शक्ल से क्यों मिलती है।"

राजा और रानी भी अपनी छोटी बहू को देख कर बहुत खुश थे। वह उसे अपनी बड़ी बहू से मिलवाने के लिये ले गये। जैसे ही राजकुमारी अपनी जिठानी के कमरे में घुसी तो उसने देखा कि वहाँ तो उसकी अपनी बड़ी बहिन बैठी हुई है।

खुशी के मारे दोनों बहिनें एक दूसरे से लिपट गयीं। यह देख कर सभी लोग बहुत खुश थे पर सबसे ज़्यादा खुश तो दोनों बहिनें थीं। वे लोग फिर बहुत दिनों तक सुख शान्ति से साथ साथ रहे।

18 एक अन्धा, एक बहरा और एक गधा[19]

एक बार एक अन्धे और एक बहरे आदमी की दोस्ती हो गयी। बहरा आदमी अन्धे के लिये देखा करता था।

एक दिन दोनों नाच देखने गये। बहरा बोला — "नाचना तो बहुत अच्छा है पर संगीत अच्छा नहीं है।" जबकि अन्धा आदमी बोला — "तुम उलटा कह रहे हो। मुझे लगता है कि इसका संगीत बहुत अच्छा है पर इसका नाच देखने में बहुत अच्छा नहीं है।"

बहरे आदमी ने अन्धे आदमी से कहा — "भाई देखो यहॉ एक गधा है और धोबी का एक बड़ा सा बर्तन है। और इन दोनों का मालिक यहॉ है नहीं। हम इन दोनों को यहॉ से ले चलते हैं ये किसी दिन हमारे बहुत काम आयेंगे।"

अन्धा आदमी बोला — "ठीक है। हम इनको अपने साथ ले चलेंगे।"

यह कह कर उन्होंने गधे और बड़े बर्तन को साथ लिया और ऐसे ही बात करते हुए दोनों आगे चले गये।

आगे चल कर वे एक चींटी के घर के पास आये तो बहरे आदमी ने अन्धे आदमी से कहा — "यहॉ बहुत सुन्दर काली काली चींटियॉ हैं। जितनी भी मैंने अब तक चींटियॉ देखी हैं ये उनमें सबमें

[19] The Blind Man, the Deaf Man and the Donkey. (Tale No 18).

बड़ी हैं। हम इनमें से कुछ चींटियाँ अपने दोस्तों को दिखाने के लिये ले चलते हैं।"

अन्धे आदमी ने कहा ठीक है। हम इनको अपने दोस्तों को भेंट में दे देंगे। सो बहरे आदमी ने अपनी जेब से अपना चाँदी का सुँघनी का बक्सा निकाला और **4–5** मोटी मोटी चींटियाँ उसमें रख लीं। वे फिर अपने रास्ते चल दिये।

पर वे बहुत दूर नहीं जा पाये थे कि एक भयानक तूफान आ गया। बादल गरजने लगे बिजली कड़कने लगी और बारिश होने लगी। तूफान इतना तेज़ था जैसे धरती आसमान आपस में लड़ रहे हों।

बहरा आदमी चिल्लाया "उफ़ उफ़। यह बिजली कितनी भयानक है। जल्दी जल्दी चलो ताकि हम जल्दी से किसी सुरक्षित जगह पहुँच सकें।"

अन्धा आदमी बोला — "कहाँ मुझे तो कहीं कुछ दिखायी नही दे रहा। पर हाँ यह बिजली तो वाकई बहुत ही भयानक है। हमको जल्दी ही कोई सुरक्षित जगह ढूँढनी चाहिये।"

पास में ही वहाँ एक बहुत बड़ी इमारत थी जो एक सुन्दर मन्दिर की इमारत जैसी लग रही थी। बहरे आदमी ने उसे देखा और अन्धे आदमी ने रात वहाँ गुजारने का फैसला किया। सो वे उस तरफ चल दिये।

वहाँ पहुँचने पर वे दरवाजे से उसके अन्दर घुस गये और दरवाजा बन्द कर लिया। गधा और बड़ा बर्तन भी उनके साथ ही थे। पर यह इमारत जिसे उन्होंने गलती से मन्दिर समझ लिया था वास्तव में कोई मन्दिर वन्दिर नहीं था बल्कि यह तो एक बहुत ही ताकतवर राक्षस का महल था।

और जैसे ही अन्धा आदमी बहरा आदमी और गधा उसमें अन्दर घुसे और दरवाजा बन्द किया वैसे राक्षस जो बाहर गया हुआ था वापस अपने घर लौटा। अपने ही घर का दरवाजा अन्दर से बन्द देख कर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने घर के अन्दर चलने फिरने की आवाजें भी सुनीं।

वह चिल्लाया — “लगता है कुछ लोग मेरे घर के अन्दर घुस गये हैं। दरवाजा खोलो वरना मैं तुरन्त ही उनको मसल कर रख दूँगा। मुझे मेरे घर में आने दो ओ नीच लोगों।” कह कर उसने दरवाजे में एक ठोकर मारी साथ में एक घूँसा भी मारा।

हालाँकि उसकी आवाज तो बहुत ज़ोर की थी ही पर उसकी शक्ल सूरत और भी भयानक थी। बहरा आदमी जो एक दीवार की झिरी से उसको देख रहा था उसको देख कर इतना डर गया कि उसकी समझ में ही नहीं आया कि वह क्या करे।

पर अन्धा आदमी बहुत बहादुर था क्योंकि उसको तो दिखायी नहीं देता था। वह दरवाजे की तरफ गया और ज़ोर से बोला —

“तुम कौन हो। और तुम्हारे इस तरह दरवाजा पीट कर अन्दर आने का क्या मतलब है। और वह भी रात को इस समय।”

राक्षस गुस्से में बोला — “मैं राक्षस हूँ। यह मेरा घर है। मुझे इसी पल अन्दर आने दो नहीं तो मैं तुम्हें मार दूँगा।”

इस समय बहरा आदमी जो राक्षस को देख रहा था डर के मारे काँप रहा था। पर अन्धा आदमी बहुत बहादुर था क्योंकि वह देख नहीं सकता था।

वह फिर चिल्लाया — “क्या तुम राक्षस हो। ठीक है अगर तुम राक्षस हो तो मैं बाक्षस हूँ।”

राक्षस ज़ोर से चिल्लाया — “बाक्षस बाक्षस। ये बाक्षस क्या होते हैं। बाक्षस जैसी कोई चीज़ नहीं होती।”

अन्धा आदमी बोला — “बाक्षस राक्षसों जैसे ही होते हैं। चले जाओ यहाँ से। और अब यहाँ कोई बखेड़ा खड़ा करने की कोशिश भी मत करना। कहीं ऐसा न हो कि मुझे तुम्हें सजा देनी पड़े। क्योंकि बस तुम यह जान लो कि मैं बाक्षस हूँ और बाक्षस राक्षसों के भी बाप होते हैं।”

राक्षस बोला — “मेरा बाप। मैंने तो धरती और आसमान में बाक्षस जैसी कोई चीज़ सुनी नहीं। और तुम मेरे बाप अन्दर हो। मैं नहीं जानता कि मेरा बाप बाक्षस कहलाता हो।”

अन्धा आदमी बोला — “हाँ हाँ। मैं तुम्हारा बाप बाक्षस हूँ मेरा कहा मानो और बस अब तुम यहाँ से तुरन्त ही चले जाओ।”

अब राक्षस कुछ डरने लगा था सो बोला — “ठीक है। पर अगर तुम मेरे बाप हो तो कम से कम मुझे अपना चेहरा तो देखने दो।” क्योंकि उसको लग रहा था कि वे लोग उसे धोखा दे रहे थे।

अब अन्धा और बहरा दोनों आदमियों को ही यह समझ नहीं आ रहा था कि वे क्या करें।

पर आखिर उन्होंने दरवाजा खोला पर एक बहुत छोटी सी दरार जितना ही खोला और उसमें से गधे की नाक बाहर निकाल दी। जब राक्षस ने उस देखा तो अपने मन में सोचा “भगवान मेरी रक्षा करे। कितना बदसूरत चेहरा है मेरे बाप का।”

वह चिल्लाया — “ओ मेरे बाप बाक्षस। तुम्हारा चेहरा तो बहुत बड़ा और भयानक है पर कभी कभी लोगों का बहुत बड़ा सिर होता है और छोटा शरीर होता है। पर मैं विनती करता हूँ कि मुझे जाने से पहले अपना सिर दिखाने के साथ साथ अपना शरीर भी दिखाओ।”

दोनों आदमियों ने दरवाजे की झिरी के सामने से भयानक गरज के साथ धोबी का बर्तन लुढ़का दिया।

राक्षस यह सब दरवाजे की झिरी से देख रहा था। उसको वह बड़ी सी काली चीज़ फर्श के ऊपर लुढ़कती देख कर बहुत आश्चर्य हुआ। उसने सोचा “यह तो वाकई मेरे बाप का बहुत बड़ा शरीर है। यह तो इतना बड़ा है कि यह तो मुझे भी खा जायेगा।”

सो वह फिर बोला — “ओ मेरे बाप बाक्षस। तुम्हारा तो बहुत बड़ा सिर है बहुत बड़ा शरीर है पर अब ज़रा मुझे अपनी चिल्लाहट की आवाज तो सुनने दो।” क्योंकि सारे राक्षस डर कर चिल्लाते हैं।

सो उस चालाक बहरे आदमी ने जो अब राक्षस से कम डर रहा था अपनी जेब से एक एक कर के चींटियॉ निकालनी शुरू कीं। एक चींटी उसने गधे के एक कान में डाली फिर दूसरी चींटी दूसरे कान में डाली। फिर दूसरी फिर तीसरी... ।

चींटियों ने गधे के कानों में ज़ोर ज़ोर से काटना शुरू किया तो गधा बेचारा इतना डर गया कि उसने बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाना शुरू कर दिया। गधे की इतनी ज़ोर की चिल्लाने की आवाज सुन कर राक्षस डर गया और बोला — “बस करो बस करो । मेरे बाप बाक्षस। ओह ओह। तुम्हारी आवाज तो अच्छे अच्छे बच्चों को कहना मानना सिखा देगी।”

और वह चिल्लाता हुआ वहॉ से भाग गया। जैसे ही वह वहॉ से भागा तो बहरे आदमी ने गधे के कानों में से चींटियॉ निकाल लीं और दोनों आदमियों ने वह रात राक्षस के महल में शान्ति से बितायी।

अगले दिन सुबह बहरा आदमी उठा उसने अन्धे आदमी को जगाया — “उठो भाई उठो। हम तो बहुत खुशकिस्मत हैं। यह सारा फर्श तो सोने चॉदी और कीमती जवाहरातों से ढका हुआ है।”

और सचमुच में ही ऐसा था क्योंकि राक्षस के पास तो बहुत सारा खजाना था। उसका सारा घर उसी से भरा हुआ था।

अन्धा आदमी बोला — "यह तो बड़ी अच्छी बात है। पर मुझे ज़रा दिखाओ तो वह है कहाँ। तो मैं उसको समेटने में तुम्हारी सहायता करूँगा। उन दोनों ने मिल कर उतना खजाना इकट्ठा किया जितना उनसे किया जा सका।

उन्होंने उसकी चार गठरियाँ बनायीं। अन्धे आदमी ने एक बड़ी गठरी ले ली। बहरे आदमी ने दूसरी गठरी ले ली। बाकी की दो गठरियाँ उन्होंने गधे पर लाद लीं और वे घर वापस चल दिये।

पर वह जो राक्षस जिसे उन्होंने पिछली रात डराया था वह बहुत दूर नहीं गया था। वह इन्तजार कर रहा था यह देखने का कि उसका बाप दिन के उजाले में कैसा लगता था।

सो वह राक्षस बाहर खड़ा ध्यान से देख रहा था कि कब उसका बाप बाहर निकलने वाला था। उसने देखा कि दो आदमी और एक गधा जिनके सबके ऊपर खजाना लदा था उसके घर से बाहर निकले। यह देख कर तो राक्षस को बहुत गुस्सा आया। उसने तुरन्त ही अपने छह दोस्तों को बुलाया ताकि वे उन दोनों आदमियों और गधे को मार सकें।

बहरे आदमी ने देखा कि सात राक्षस खड़े हैं जिनके बाल ही गज गज भर लम्बे थे। उनके दाँत भी हाथी के दाँत जैसे थे। तो

उसकी तो सिट्टी पिट्टी ही गुम हो गयी। पर अन्धा आदमी बहुत बहादुर था क्योंकि वह देख नहीं सकता था।

उसने बहरे आदमी से पूछा — "भाई तुम पीछे क्यों रह गये।"

तो बहरा आदमी बोला — "भाई वहाँ सात राक्षस हैं जिनके हाथी के दाँत जैसे दाँत हैं। वे हमें मारने आ रहे हैं। अब हम क्या करें।"

अन्धा आदमी बोला — "हमको अपना यह खजाना किसी झाड़ी में छिपा देना चाहिये। और तुम मुझे किसी पेड़ के पास ले चलो। सो उस पर पहले मैं चढ़ जाऊँगा बाद में तुम चढ़ जाना। इस तरह से हम उनकी नजरों से बच जायेंगे।"

बहरे आदमी को अन्धे आदमी की यह सलाह पसन्द आयी सो उसने खजाना और गधा एक झाड़ी में छिपा दिये और अन्धे आदमी को एक बड़े से सुपारी के पेड़[20] की तरफ ले गया जो पास में ही उग रहा था। पर वह बहरा आदमी एक बहुत ही चालाक आदमी था।

सो इस बहरे आदमी ने क्या किया कि अन्धे आदमी को पहले चढ़ने देने की बजाय वह खुद पहले पेड़ पर चढ़ गया और इस तरह अपने दोस्त से पहले ही किसी भी मुसीबत से दूर हो गया।

[20] Betel Nut Tree. See its picture above.

जब राक्षस लोग उस जगह पर आये तो उन्होंने देखा कि वे दोनों तो उनकी पहुँच से बहुत दूर सुपारी के पेड़ पर बैठे हुए हैं। सो उन सातों ने सोचा कि एक के कन्धे पर दूसरा चढ़ कर दूसरे के कन्धे पर तीसरा चढ़ कर ऊपर तक पहुँचा जा सकता है और उनको नीचे लाया जा सकता है।

सो एक राक्षस झुक कर खड़ा हो गया। दूसरा उसके कन्धे पर चढ़ा तीसरा दूसरे के कन्धे पर चढ़ता गया। सातवाँ राक्षस वह वाला राक्षस था जिसने उन सबको बुलाया था। जब वह सातवाँ राक्षस चढ़ रहा था तो बहरे आदमी ने जो ऊपर से अन्धे आदमी को देख रहा था इतना डर गया कि उसने अपने दोस्त की बाँह पकड़ ली और बोला — "वे आ रहे हैं। वे आ रहे हैं।"

अब अन्धे आदमी की जगह तो बहुत सुरक्षित नहीं थी। वह आराम से बैठा हुआ था। उसको तो यह भी पता नहीं था कि वे उससे कितनी दूर थे।

इसका नतीजा यह हुआ कि बहरे आदमी ने उसको एक ऐसा धक्का दिया कि वह सँभल नहीं सका और सातवें राक्षस की गर्दन पर गिर पड़ा जिसने अभी अभी चढ़ना शुरू किया था।

अन्धे आदमी को यह भी पता नहीं था कि वह था कहाँ। उसको लगा कि वह शायद किसी दूसरे पेड़ की शाख पर गिर गया है। सो उसने सहारे के लिये अपने हाथ बढ़ा कर डाल को पकड़

लेना चाहा। हाथ बढ़ाने पर डाल तो पकड़ आयी नहीं पर हॉ राक्षस के दोनों कान उसकी पकड़ में आ गये।

आश्चर्यचकित होते हुए उसने उन कानों को ज़ोर से पकड़ लिया। उधर राक्षस भी यह नहीं सोच सका कि ऐसा उसके ऊपर से क्या गिरा पर अन्धे आदमी के वजन से वह सॅभल नहीं पाया और छठे पॉचवें चौथे तीसरे दूसरे और पहले राक्षस पर से लुढ़कता हुआ नीचे आ गिरा। इस तरह से सारे राक्षस नीचे एक ढेर से में गिर पड़े और किसी को यह पता नहीं चला कि हुआ क्या।

उधर अन्धे आदमी ने अपने दोस्त से कहा — "मैं कहॉ हूॅ। यह क्या हुआ। मैं कहॉ हूॅ।"

बहरा आदमी जो पेड़ पर सुरक्षित था बोला — "तुमने बहुत अच्छा किया। तुमने बहुत अच्छा किया। डरो नहीं। तुम बिल्कुल ठीक हो बस उसे ज़रा कस कर पकड़ कर रखो। मैं आ रहा हूॅ। मैं आ रहा हूॅ।"

जितना ज़्यादा बहरा आदमी चिल्लाता जा रहा था अन्धा आदमी राक्षस के कान और ज़ोर से पकड़े जा रहा था। उसको लग रहा था कि उसने कोई ताड़ की शाख पकड़ रखी है।

दूसरे छह राक्षस जो बहुत मेहनत कर के किसी तरह अपने पैरों पर खड़े हो चुके थे उन्होंने सोचा कि "बस अब तक हमने अपने दोस्त की सहायता काफी कर ली अब यहॉ से भागना चाहिये।" सो वे वहॉ से जितनी जल्दी हो सकता था भाग लिये।

उन सबको भागते देख कर सातवें राक्षस ने समझा कि खतरा उतना हल्का नहीं जितना उसने सोचा था और यह सोच कर कि यह कौन अजीब सा जानवर उसकी पीठ पर बैठा है उसने अपने दोनों हाथों से अन्धे को पीछे को धक्का दे दिया।

और फिर बिना पीछे देखे कि उसकी पीठ पर कौन बैठा था अपने छहों साथियों की तरह से तुरन्त ही भाग गया।

जैसे ही सारे राक्षस वहाँ से भागे बहरा आदमी पेड़ से नीचे उतर कर आया और अन्धे आदमी को उठाते हुए और अपने गले से लगाते हुए बोला — "तुमने बहुत अच्छा किया मेरे दोस्त। मैं इससे अच्छा नहीं कर सकता था। तुमने हमारे सारे दुश्मनों को डरा कर भगा दिया। पर देखो न मैं तुम्हारी सहायता के लिये जितनी जल्दी हो सका उतनी जल्दी आ गया।"

उसके बाद उन्होंने झाड़ी में से अपने गधे को और अपनी गठरियों को निकाला एक एक गठरी खुद और अन्धे आदमी ने ली बाकी की दो गठरियाँ गधे पर लादीं और अपने घर चल दिये।

पर जैसे ही वे जंगल से बाहर निकले बहरे आदमी ने अन्धे आदमी से कहा — "अगर हम यह सारा खजाना अभी अपने साथ गाँव ले जायेंगे तो हमें इस खजाने के लूटे जाने का खतरा रहेगा। इससे अच्छा तो यह है कि हम लोग इसका आधा आधा यहीं कर लेते हैं। तुम अपना हिस्सा ले जाओ मैं अपना हिस्सा ले जाऊँ।

फिर हम अपना अपना हिस्सा जंगल में या कहीं और छिपा लेंगे जहॉ जिसको जैसी सुविधा हो।"

अन्धा आदमी बोला — "ठीक है। तुम उसे दो बराबर हिस्सों में बॉटो जो गठरियों में है। एक आधा तुम रख लेना और दूसरा आधा मुझे दे देना।"

पर चालाक बहरा आदमी उसे उसका आधा हिस्सा नहीं देना चाहता था सो पहले उसने अपनी गठरी उठायी और उसे एक झाड़ी में छिपा दी। उसके बाद उसने गधे पर लदी दोनों गठरियॉ लीं और उनको भी झाड़ी में छिपा दिया।

फिर उसने अन्धे आदमी की गठरी में से काफी सारा खजाना निकाल लिया और उसे भी छिपा दिया। अब केवल बहुत ही थोड़ा सा खजाना बच गया था उसने उसी को बराबर बराबर दो हिस्सों में बॉट दिया।

एक आधा हिस्सा अन्धे आदमी के सामने रखते हुए वह बोला — "लो भाई यह तुम्हारा हिस्सा है अब तुम इसका जो चाहो सो करो।"

अन्धे आदमी ने हाथ बढ़ा कर अपना हिस्सा देखा तो उसको महसूस कर के बोला — "अरे यह तो बहुत थोड़ा सा है। यह तो ठीक नहीं है। तुम मुझे धोखा दे रहे हो। तुमने तो करीब करीब सारा ही खजाना अपने पास रख लिया है और मुझे तो बहुत थोड़ा सा ही दिया है।"

बहरा आदमी बोला — "मेरे दोस्त ऐसा कैसे हो सकता है। तुम ऐसा सोच भी कैसे सकते हो। पर अगर तुम मेरा विश्वास नहीं करते तो लो यह देखो। मेरा ढेर तुम्हारे ढेर से बिल्कुल भी बड़ा नहीं है।"

अन्धे आदमी ने यह महसूस करने के लिये फिर से हाथ बढ़ाया कि उसके दोस्त ने अपने लिये कितना रखा हुआ है पर बहरे आदमी के सामने भी वैसा ही एक ढेर रखा हुआ था। वह उसके अपने ढेर से बड़ा नहीं था।

इस बात पर वह बहुत गुस्सा हो गया और बोला — "ऐसे नहीं चलेगा। तुम क्या समझते हो कि तुम मुझे इस तरह से धोखा दे लोगे क्योंकि मैं अन्धा हूँ। मैं अन्धा जरूर हूँ पर मैं बेवकूफ नहीं हूँ। मैंने बहुत बड़ी बड़ी गठरियाँ खजाने से भरी थीं जो इन दोनों ढेरों को मिला कर भी उससे बड़ी थीं।

और दो गठरियाँ तो हमने गधे पर ही लादी थीं। क्या तुम यह कहना चाहते हो कि इन दो छोटे छोटे ढेरों के अलावा हमने कोई और खजाना इकट्ठा नहीं किया। नहीं नहीं यह सच नहीं है। मुझे अच्छी तरह से मालूम है।"

बहरा आदमी बोला — "अपना सामान उठाओ और जाओ।"

"तुम मुझसे झगड़ा करना चाहते हो पर मैं तुम्हें झगड़ा नहीं करने दूँगा।"

और वे इस तरह से एक दूसरे को डॉटते रहे बुरा भला कहते रहे कि एक बार अन्धे आदमी को बहुत गुस्सा आ गया उसने बहरे आदमी के कान पर ज़ोर का एक घूँसा मार दिया। उसका यह घूँसा इतनी ज़ोर का था कि बहरा आदमी तो सुनने लगा।

बहरे आदमी ने भी पलट कर अन्धे आदमी के चेहरे पर मारा जिससे उसकी देखने की ताकत वापस आ गयी। अब बहरा आदमी सुन भी सकता था और देख भी सकता था और अन्धा आदमी अब देख भी सकता था और सुन भी सकता था।

इसने दोनों को इतना आश्चर्य में डाला कि वे फिर से अच्छे दोस्त हो गये। बहरे आदमी ने स्वीकार कर लिया कि उसने बहुत सारा खजाना छिपाया था। वह फिर सारा खजाना झाड़ी में से निकाल कर लाया। उसको ठीक से आधा आधा बॉटा और दोनों अपना अपना हिस्सा ले कर घर चले गये और खुश खुश रहे।

19 मच्छी लाल[21]

एक बार की बात है एक राजा और रानी थे जिनके कोई बच्चा नहीं था। बहुत दिनों से उनको एक बच्चे की इच्छा थी। उन्होंने उसके लिये प्रार्थना भी की थी कि भगवान उनको एक बेटा दे दे पर सब बेकार।

एक दिन राजा के खाने के लिये शाही रसोईघर में बहुत सारी मछलियॉ लायी गयीं। उनमें से बाकी सब तो मर गयी थीं पर एक बहुत छोटी सी मछली थी जो अभी मरी नहीं थी।

महल की एक दासी ने उसे देखा तो उसे एक पानी के बर्तन में रख दिया। कुछ देर बाद ही उसे रानी ने देखा तो उसे लगा कि वह मछली तो बहुत ही सुन्दर है तो उसे उसने अपने पालतू जानवर की तरह से पाल लिया। और क्योंकि उसके कोई बच्चा नहीं था सो वह अपना सारा प्यार उस मछली पर लुटाने लगी।

वह उसको अपने बेटे की तरह प्यार करती थी सो दूसरे लोग भी उसको मच्छी राजा कह कर पुकारते थे। कुछ दिनों में मच्छी राजा उस छोटे से बर्तन के लिये बहुत बड़ा हो गया तो उसको किसी दूसरे बड़े बर्तन में रखना पड़ा।

कुछ समय बाद मच्छी राजा और बड़ा हो गया तो रानी को उसके लिये एक तालाब बनवाना पड़ा। तालाब में वह बहुत खुशी

[21] Muchie-lal. Tale No 19.

खुशी रहता था। रानी उसको दो बार उबले हुए चावल खिलाने के लिये जाती थी।

लोग तो यह सोचते थे कि मच्छी राजा तो केवल एक मछली ही था पर वास्तव में ऐसा नहीं था। वास्तव में वह एक बहुत बड़ा राजा था जिसने देवताओं को नाराज कर दिया था सो उन्होंने उसको सजा देने के लिये एक मछली बना कर नदी में फेंक दिया था।

एक सुबह जब रानी उसके लिये उसका रोज का खाना यानी उबले हुए चावल ले कर आयी तो मच्छी राजा ने उससे कहा — "रानी माँ रानी माँ। यहाँ केवल मैं ही हूँ तो मैं बहुत अकेलापन महसूस करता हूँ। क्या आप मेरे लिये एक पत्नी नहीं ला सकतीं?"

रानी ने उससे वायदा किया कि वह कोशिश करेगी। उसने चारों तरफ जिन जिनको वह जानती थी उनके पास अपने दूत भेजे कि क्या उनमें से कोई ऐसा था जो अपने बच्चे की शादी उसके बेटे से कर देता।

पर उन सबने एक ही जवाब दिया कि वे अपनी छोटी सी बेटी को मछली के खाने के लिये नहीं दे सकते। उसने अपने दूत दोबारा भेजे पर इस बार उसने साथ में एक लाख सोने की मुहरों का थैला भी भेजा।

और साथ में उनको चेतावनी भी दी कि वे धरती के हर कोने में जायें और उसके मच्छी राजा के लिये एक दुलहिन खोज कर

लायें। और जो कोई भी अपनी बच्ची को मच्छी रानी बनने के लिये दे दे वे उसे उस सोने की मुहरों का थैला दे दें।

दूत लोग फिर अपनी खोज में निकले। कुछ समय तक तो उन्हें कोई ऐसा नहीं मिला जो अपनी बेटी एक मछली को देने के लिये तैयार हो। यहॉ तक कि कोई भिखारी भी इतने सारे पैसे के लिये एक मछली को अपनी बेटी देने के लिये तैयार नहीं था।

आखिर दूत एक गॉव में आये जहॉ एक फकीर रहता था। उसकी पहली पत्नी मर गयी थी और उसने दूसरी शादी कर ली थी। उसकी पहली पत्नी एक छोटी सी बच्ची छोड़ गयी थी और उसकी दूसरी पत्नी एक बच्ची ले कर आयी थी।

अब जैसा कि होता है उसकी दूसरी पत्नी अपनी सौतेली बेटी को बिल्कुल नहीं चाहती थी। वह हमेशा उसको खूब मेहनत वाले काम दे दिया करती थी और खाना बहुत कम देती थी। वह उसको अपने रास्ते से हटाना चाहती थी। वह नहीं चाहती थी कि वह उसकी बेटी की प्रतिद्वन्द्वी बने।

सो जब उसने सुना कि दूत लोग किस काम के लिये घूम रहे हैं तो जब फकीर बाहर गया हुआ था उसने उन दूतों को बुलाया और उनसे कहा कि वे वह पैसे उसे दे दें और वह अपनी बेटी की शादी मछली से करने के लिये तैयार है।

उसने सोचा कि वह बड़ी मछली यकीनन उस लड़की को खा जायेगी और उसके रास्ते का कॉटा निकल जायेगा।

उसने अपनी सौतेली बेटी से कहा — "बेटी जाओ नदी पर जा कर अपनी साड़ी धो लो ताकि तुम इन लोगों के लायक हो सको। ये लोग तुम्हें रानी जी के पास ले जायेंगे।"

यह सुन कर बेचारी लड़की बहुत दुखी हो कर नदी पर गयी। उसके पास बच कर भाग जाने का कोई रास्ता नहीं था क्योंकि उसका पिता तो बाहर गया हुआ था।

जब वह अपनी साड़ी धोने के लिये नदी में झुकी तो वह बहुत ज़ोर से रो पड़ी। उसके कुछ ऑसू एक सात सिर वाले कोबरा सॉप के बिल में गिर पड़े। कोबरा एक अक्लमन्द जानवर था। लड़की को देख कर उसने अपना सिर बाहर निकाला और उससे पूछा — "बेटी तुम क्यों रो रही हो।"

लड़की रोते रोते बोली — "सर मैं बहुत दुखी हूँ क्योंकि मेरे पिता घर पर नहीं हैं और मेरी सौतेली मॉ ने मुझे रानी मॉ को एक मछली की दुलहिन बना कर बेच दिया है। वह मछली बहुत बड़ी है। मुझे यकीन है कि वह मुझे देखते ही खा जायेगी।"

कोबरा बोला — "तुम डरो नहीं मेरी बच्ची। ये तुम तीन पत्थर मुझसे ले जाओ और इन्हें अपनी साड़ी के पल्लू में बॉध लेना।" यह कह कर उसने लड़की को तीन गोल पत्थर दिये।

फिर वह आगे बोला — "वह मच्छी राजा जिससे तुम्हारी शादी होगी वह वास्तव में कोई मछली नहीं है बल्कि एक राजा है जिस पर जादू डाल कर मछली बना दिया गया है।

तुम्हारा घर एक छोटा सा कमरा होगा जिसे रानी ने तालाब की दीवार में बनवाया है। जब तुम उस कमरे में पहुँच जाओ तो वहाँ तुम इन्तजार करना सो मत जाना नहीं तो मच्छी राजा वहाँ आयेगा और निश्चित रूप तुम्हें खा लेगा।

जैसे ही तुम उसके भाग कर आने की आवाज सुनो तो तुम उसको एक पत्थर मारना। इससे वह तालाब की तली में पहुँच जायेगा। जब वह दोबारा आये तो तुम दूसरा पत्थर फेंकना। इस बार भी वह तालाब की तली में बैठ जायेगा।

जब वह तीसरी बार आये तब तुम उसके ऊपर तीसरा पत्थर फेंकना तो वह तुरन्त ही अपने आदमी के रूप में आ जायेगा।"

यह कह कर कोबरा फिर से अपने बिल में चला गया। कोबरा की बातों पर हालाँकि उसको विश्वास नहीं था पर फिर भी इसके अलावा उसके पास और कोई रास्ता भी तो नहीं था।

सो फकीर की बेटी ने तीनों पत्थर अपनी साड़ी के पल्लू में बाँधे और घर चली गयी और वही करने का इरादा किया जैसा कि कोबरा ने उससे करने के लिये कहा था।

जब वह महल पहुँची तो रानी ने उसके साथ बहुत ही दया का बर्ताव किया। दूतों से उसने कहा कि उन्होंने उस लड़की को ला कर बहुत अच्छा काम किया है और वह बड़ी प्यारी बेटी थी।

फिर उसने हुक्म दिया कि उस लड़की को एक टोकरी में बिठा कर तालाब में नीचे बने छोटे कमरे में उतार दिया जाये जो उसी के

लिये तैयार किया गया था। जब फकीर की बेटी वहाँ पहुँची तो उसको लगा कि इतनी सुन्दर जगह तो उसने कभी देखी ही नहीं है। रानी ने अपनी बहू के लिये उस कमरे को बहुत सुन्दर सजाया था।

फकीर की बेटी खुश भी बहुत थी कि कम से कम वह अब अपनी सौतेली माँ के चंगुल से और मेहनत वाला काम करने से बाहर निकल आयी थी। अगर यह काला काला सा पानी नहीं होता और मछली राजा का डर नहीं होता तब तो वह बहुत ही खुश होती।

कुछ समय तक इन्तजार करने के बाद उसने किसी के दौड़ने की आवाज सुनी और पानी की छोटी छोटी लहरें उसके कमरे के दरवाजे तक आने लगीं। वे तेज़ी और तेज़ी से आती जा रही थीं।

तभी उसने पानी के ऊपर मच्छी राजा का सिर देखा। मच्छी राजा उसकी तरफ मुँह खोले बढ़ा चला आ रहा था। फकीर की बेटी ने तुरन्त ही अपनी साड़ी के पल्लू में बँधा एक पत्थर निकाला और उसे मच्छी राजा के ऊपर फेंक दिया। मच्छी राजा तुरन्त ही तालाब की तली में चला गया।

वह फिर दोबारा आया तो लड़की ने दूसरा पत्थर निकाला और फिर उसके ऊपर फेंक दिया। मच्छी राजा फिर तालाब की तली में चला गया। तीसरी बार वह और भी भयानक रूप से लड़की की तरफ दौड़ा कि लड़की ने तीसरा पत्थर भी निकाल कर उसके ऊपर फेंक दिया। जैसे ही तीसरा पत्थर उसके शरीर से छुआ कि उसका जादू टूट गया और वह एक सुन्दर राजकुमार बन गया।

बेचारी गरीब फकीर की बेटी तो उसको देख कर इतनी भौंचक्की रह गयी कि उसको रोना आ गया।

राजकुमार बोला — “ओ सुन्दर लड़की। तुम डरो नहीं। तुमने मुझे एक बड़ी भारी मुसीबत से बचाया है। तुम्हारे लिये उसके लिये मेरा कोई भी धन्यवाद काफी नहीं है। पर अगर तुम मच्छी रानी बनने को तैयार हो तो हम कल ही शादी कर लेंगे।”

उसके बाद वह अपनी किस्मत के बारे में सोचने के लिये कमरे की देहरी पर बैठ गया।

अगली सुबह बहुत सारे उत्सुक लोग यह देखने के लिये आये कि मछली राजा ने उस बेचारी लड़की के साथ क्या किया। वे डर रहे थे कि उसने तो उस बेचारी को खा ही लिया होगा।

पर उनके आश्चर्य की तो सीमा ही नहीं रही जब उन्होंने तालाब के चारों तरफ की दीवार के ऊपर से तालाब में देखा कि वहाँ तो मछली राजा नहीं था बल्कि एक बहुत सुन्दर राजकुमार बैठा हुआ था।

जल्दी ही यह खबर महल में पहुँची तो राजा भी भागे आये रानी भी भागी आयी बहुत सारे नौकर चाकर भी वहाँ भागे आये। सबने मिल कर राजकुमार और फकीर की बेटी को तालाब से बाहर निकाला। और जब उन्होंने लड़की की कहानी सुनी तब तो उन सबने बहुत खुशियाँ मनायी गयीं।

रानी बोली — “सो मुझे आखिर एक बेटा मिल ही गया।”

सारे लोग अपने नये राजकुमार और राजकुमारी को देख कर इतने खुश थे कि उन्होंने तालाब से ले कर महल तक का रास्ता फूलों से ढक रखा था। साथ में वे चिल्लाते जा रहे थे कि "आओ और हमारे इस दैवीय राजकुमार और राजकुमारी के जोड़े को देखो।" महल पहुँच कर दोनों की शादी कर दी गयी।

वे वहाँ कुछ समय खुशी खुशी रहे कि मच्छी रानी की सौतेली माँ ने सुना कि उसके साथ क्या हुआ। यह खबर सुन कर वह अब अपनी सौतेली बेटी के पास अक्सर आने लगी और ऊपर से दिखावा करती रही कि वह बहुत खुश थी।

मच्छी रानी इतनी अच्छी थी कि उसने अपनी सौतेली माँ के सब बुरे बर्तावों को भुला कर उसे माफ कर दिया था। वह जब भी उसके पास आती तो वह हमेशा उसका बहुत प्यार से स्वागत करती।

एक दिन मच्छी रानी ने अपने पति से कहा — "मुझे अपने पिता को देखे हुए बहुत समय हो गया है। मैं अपने गाँव जा कर उन्हें फिर से देखना चाहती हूँ।"

मच्छी राजा बोला — "ठीक है। तुम जाओ मगर तुम वहाँ बहुत समय तक मत रहना क्योंकि जब तक तुम लौट कर नहीं आओगी तब तक मैं बेचैन ही रहूँगा।"

उसने कहा कि "ठीक है।" और वह चली गयी। उसका पिता उसे देख कर बहुत खुश हुआ। पर उसकी सौतेली माँ हालाँकि यही

दिखाती रही कि वह उसके आने से बहुत खुश है पर वह उसको अपने काबू में करने की कोशिश करती रही। वह चाहती थी कि वह अब वहाँ से कभी वापस महल न जाये।

सो एक दिन उसने अपनी बेटी से कहा — "यह बड़ा कठिन काम है कि तुम्हारी सौतेली बहिन बजाय मछली के खा जाने के सारे देश की रानी बन गयी है जबकि हमें केवल एक लाख सोने की मुहरों का ही फायदा हुआ है। पर अब जैसा मैं कहती हूँ तुम वैसा ही करो ताकि उसकी बजाय तुम रानी बन जाओ।"

फिर उसने अपनी बेटी को बताया कि कैसे वह उसे नदी के किनारे बुलाये और उससे उसके गहने पहन कर देखने के लिये माँगे। और जब वह गहने पहन ले तो उसे नदी में धक्का दे दे।

लड़की मान गयी और जब वह नदी के किनारे खड़ी हुई थी तब उसने अपनी सौतेली बहिन रानी से कहा — "बहिन क्या मैं तुम्हारे गहने पहन कर देख सकती हूँ। मैं नदी के पानी में यह देखना चाहती हूँ कि मैं उन्हें पहन कर कैसी लगती हूँ।"

अपने गले का हार उतार कर जब उसने अपनी सौतेली बहिन के गले डाला तो सौतेली बहिन ने उसको नदी में धक्का दे दिया। वह पीछे को नदी में गिर पड़ी। लड़की ने पक्का किया कि उसका शरीर वापस ऊपर नहीं आया तो वह दौड़ कर घर वापस आयी।

उसने अपनी माँ से कहा — "माँ लो ये सब गहने लो और अब वह हमको कभी तंग नहीं करेगी।"

पर जिस समय लड़की अपनी सौतेली बहिन रानी को नदी में धक्का दे रही थी तो रानी का दोस्त सात सिर वाला कोबरा वहाँ से गुजर रहा था। छोटी रानी को पानी में डूबते देख कर वह उसको अपनी पीठ पर लाद कर अपने बिल तक ले गया।

अब इस बिल के जिसमें यह कोबरा अपनी पत्नी बच्चों के साथ रहता था दो दरवाजे थे। एक तो जमीन के नीचे से नदी तक जाता था और दूसरा पानी के ऊपर था जो मैदानों तक जाता था।

कोबरा रानी को अपने जमीन वाले रास्ते से ले गया और वहाँ उसने और उसकी पत्नी ने बहुत सेवा की। रानी वहीं कुछ समय तक रही।

इस बीच फकीर की नीच पत्नी अपनी बेटी को रानी के गहने पहना कर महल ले गयी और मच्छी राजा से बोली — "मच्छी राजा मैं आपकी पत्नी को वापस सुरक्षित ले आयी हूँ।"

मच्छी राजा ने उसे देखा तो अपने मन में कहा "यह तो मेरी पत्नी नहीं लगती।" उस समय कमरे में अँधेरा था और लड़की ने भी अपने आपको अच्छी तरह छिपा रखा था तो उसको लगा कि शायद उसी को गलती लग गयी हो।

अगले दिन उसने कहा — "मुझे बड़ा अफसोस कि मेरी पत्नी बदल गयी है। यह मेरी पत्नी नहीं हो सकती। वह तो हमेशा खुश रहा करती थी। वह हमेशा प्यारे प्यारे और खुशी के शब्द बोलती थी पर यह स्त्री तो अपने होठ ही नहीं खोलती।"

इस सबके बावजूद वह अपनी पत्नी पर अविश्वास भी नहीं करना चाहता था। वह हमेशा यही कह कर दिल को तसल्ली देता रहा कि "हो सकता है कि वह लम्बी यात्रा की वजह से थकी हुई हो।"

पर तीसरे दिन उसके सब्र का बॉध टूट गया। अब उसने यह देखने का निश्चय कर ही लिया कि वह कौन थी। उसके गहने उतारते समय उसने देखा वह चेहरा तो उसकी छोटी सी पत्नी का नहीं था बल्कि यह तो कोई और ही स्त्री थी।

वह इतना गुस्सा हुआ कि उसने उस लड़की को बाहर निकाल दिया — "भाग जा यहॉ से। लगता है कि मेरे साथ किसी ने छल किया है। किसी ने तुझे मुहरा बना कर भेजा है। जा भाग मैंने तेरी जान बख्शी।"

पर फकीर की पत्नी के लिये उसने अपने पहरेदारों को हुक्म दिया कि वे फकीर की पत्नी को तुरन्त ही पकड़ कर लायें क्योंकि वही जानती है कि उसकी पत्नी कहॉ है। अगर वह मुझे नहीं बतायेगी तो मैं उसको फॉसी पर लटकवा दूॅगा।

इस बीच फकीर की पत्नी को पता चल गया कि मच्छी राजा ने उसकी बेटी को घर से बाहर निकाल दिया है सो उसके डर की वजह से वह छिप गयी और किसी को नहीं मिली।

इस बीच मच्छी रानी को यही पता नहीं था कि वह घर कैसे पहुँचे सो वह सात सिर वाले कोबरा के बिल में ही रहती रही। कोबरा और उसका पूरा परिवार उसके साथ बहुत ही दयालु था।

उसके परिवार वाले उसको ऐसे ही प्यार करते थे जैसे वह उनके परिवार में से ही कोई हो। वहाँ उसके एक छोटा सा बेटा पैदा हुआ। उसने उसका नाम उसके पिता के नाम पर रखा "मच्छी लाल"। मछली लाल माने मछली का बेटा।

मच्छी लाल एक खुश और बहादुर बच्चा था। उसके खेलने के साथी थे केवल कोबरा के बच्चे। जब वह तीन साल का हो गया तो उधर एक चूड़ी बेचने वाला आ निकला। मच्छी रानी ने उससे कुछ चूड़ियाँ खरीदीं और उन्हें अपने बेटे के हाथों और पैरों में पहना दीं। पर अगले ही दिन खेलते समय वे सब टूट गयीं।

मच्छी रानी को वह चूड़ी बेचने वाला फिर से दिखायी दे गया तो उसने उसे बुला कर फिर से कुछ चूड़ियाँ खरीद लीं। इस तरह से मच्छी रानी उससे रोज मच्छी लाल के लिये चूड़ियाँ खरीदती रही और चूड़ी बेचने वाला भी अपनी इस बिक्री से अब बहुत पैसे वाला हो गया था।

क्योंकि कोबरा का घर बहुत सारे खजाने से भरा था तो वह मच्छी रानी को जितना पैसा भी वह चाहती उतना उसके रोज के खर्चे के लिये दे देता था। ऐसी कोई चीज़ नहीं थी जो वह चाहती हो और वह उसे न मिलती हो।

बस केवल एक ही चीज़ ऐसी थी जिसको वह बढ़ावा नहीं देता था और वह था उसके पति के घर का रास्ता ढूँढना जो उसको सबसे ज़्यादा चाहिये था।

जब भी वह वहाँ से जाने के लिये कहती तो कोबरा कहता — “नहीं। मैं तुम्हें यहाँ से नहीं जाने दूँगा। अगर तुम्हारा पति यहाँ तुम्हें लेने के लिये आता है तब तो ठीक है नहीं तो मैं तुम्हें जगह जगह अकेले उसकी खोज में नहीं भटकने दूँगा।” इसलिये उसको वहीं रहना पड़ा रहा था जहाँ वह थी।

इस सारे समय मछली राजा सब जगह मछली रानी की खोज करता रहा पर वह उसे कहीं नहीं मिली। उसे लगा कि वह खो गयी है। यह सोच कर वह बहुत निराश हो गया। अब उसका किसी काम में मन नहीं लगता था। वह चारों तरफ यही कहता घूमता रहता था “वह चली गयी। वह चली गयी।”

जब उसने काफी दिनों तक उसे इस तरह खोज लिया उसके अपने गाँव में भी खोज लिया तो एक दिन उसे एक चूड़ी बेचने वाला मिला। उसने उससे पूछा — “तुम कहाँ से आ रहे हो।”

चूड़ी बेचने वाले ने कहा — “मैं अभी अभी नदी के किनारे रह रहे कोबरा के घर में रहने वाले कुछ लोगों को चूड़ी बेच कर आ रहा हूँ।”

मच्छी राजा ने पूछा — “लोग, कैसे लोग।”

चूड़ी बेचने वाले ने जवाब दिया — "एक स्त्री और एक बच्चा। बच्चा तो इतना सुन्दर है कि मैंने आज तक इतना सुन्दर बच्चा नहीं देखा। वह करीब करीब तीन साल का है। हमेशा दौड़ता भागता रहता है और अपनी चूड़ियाँ तोड़ता रहता है और उसकी माँ उसके लिये रोज ही मुझसे नयी नयी चूड़ियाँ खरीदती रहती है।"

"क्या तुम्हें बच्चे का नाम पता है।"

"हाँ हाँ। वह स्त्री बच्चे को मच्छी लाल के नाम से बुलाती रहती है।"

मच्छी राजा को लगा कि यही उसकी पत्नी होनी चाहिये। सो उसने चूड़ी बेचने वाले से कहा — "ओ भले चूड़ी बेचने वाले। मैं इन भले चूड़ी खरीदने वालों को देखना चाहता हूँ। क्या तुम मुझे वहाँ ले जा सकते हो।"

चूड़ी बेचने वाला बोला — "अभी तो नहीं। अभी तो दिन खत्म हो गया है। अगर हम अभी वहाँ जायेंगे तो वे डर भी सकते हैं। पर कल मैं वहाँ फिर जाऊँगा तब आप मेरे साथ चल सकते हैं। इस बीच आप चाहें तो रात मेरे घर गुजार सकते हैं क्योंकि आप तो बहुत ही थके हुए लग रहे हैं जैसे अभी अभी बेहोश हो जायेंगे।"

राजा तैयार हो गया और उसके घर चला गया। अगली सुबह राजा ने बहुत सुबह ही चूड़ी बेचने वाले का जगाया और कहा — "चलो मुझे वहाँ ले चलो जहाँ वे लोग रहते हैं।"

चूड़ी बेचने वाला — "अभी थोड़ी देर रुकिये। अभी बहुत जल्दी है। मैं वहाँ नाश्ते से पहले नहीं जाता।"

सो राजा को तब तक इन्तजार करना पड़ा जब तक वह जाने के लिये तैयार हुआ। आखिर वे चले और जब वे वहाँ पहुँचे तो राजा ने देखा कि एक बहुत सुन्दर बच्चा कोबरा के बच्चों के साथ खेल रहा है।

जैसे ही चूड़ी बेचने वाला अपनी चूड़ियाँ खनकाता हुआ वहाँ आया तो कोबरा के बिल में से एक मीठी सी आवाज आयी — "आओ मेरे मच्छी लाल यहाँ आओ और अपने लिये चूड़ियाँ पहन कर देखो।"

यह सुन कर मच्छी राजा ने बिल के छेद में अन्दर झाँक कर देखा और कहा — "ओ सुन्दरी ज़रा अपना चेहरा तो दिखाओ।"

मच्छी रानी ने अपने पति की आवाज पहचान ली। वह तुरन्त ही चिल्लाती हुई बिल में से बाहर आयी — "प्रिय तुम आ गये। तुमने मुझे ढूँढ लिया।"

फिर उसने उसको अपनी कहानी सुनायी कि किस तरीके से उसकी बहिन ने उसको डुबोने की कोशिश की। फिर कैसे कोबरा ने

उसकी जान बचायी और उसकी और उसके बच्चे की देखभाल की।

मछली राजा ने पूछा — "क्या अब तुम मेरे साथ घर चलना पसन्द करोगी।"

फिर उसने बताया कि किस तरह कोबरा ने उसको बाहर जाने की इजाज़त नहीं दी। सो अब उसको कोबरा को पहले मच्छी राजा के बारे में बताना पड़ेगा क्योंकि वह मेरे पिता के समान हैं।

यह कह कर उसने कोबरा को आवाज लगायी — "पिता कोबरा पिता कोबरा। मेरे पति मुझे लेने आ गये हैं। क्या मैं अब उनके साथ जा सकती हूँ।"

पिता कोबरा बाहर निकल कर आया और बोला — "अगर तुम्हारा पति तुम्हें लेने आया है तब तुम जा सकती हो।"

कोबरा की पत्नी बोली — "विदा प्रिय बेटी। हम लोग तुम्हारे यहाँ से जाने के बाद बहुत दुखी होंगे क्योंकि हम तुम्हें अपनी बेटी की तरह प्यार करते हैं।" कोबरा के बच्चे भी अपने खेल के साथी के चले जाने से दुखी थे।

तब कोबरा ने मच्छी राजा मच्छी रानी और मच्छी लाल को अपने खजाने में से बहुत सारी कीमती भेंटें दीं और इस तरह उन्हें विदा किया। वे सब अपने घर चले गये। घर पहुँच कर वे सब खुशी खुशी रहे। ऐसे ही तुम भी रहो।

20 चन्दन राजा[22]

एक बार की बात है कि एक राजा और रानी अपने सात बेटे और एक बेटी को छोड़ कर मर गये। सातों बेटों की शादी हो चुकी थी। उनमें से छह बड़े भाइयों की पत्नियाँ बेटी से बहुत ही बेरहमी का व्यवहार करती थीं। पर सबसे छोटे भाई की पत्नी उसे बहुत प्यार करती थी। जब भी कोई उसके खिलाफ बोलता तो वह उसी की तरफ से बोलती।

वह कहती — "वह तो बड़ी बेचारी सी है। उसकी तो ज़िन्दगी ही बहुत दुखी है। उसकी माँ की कितनी इच्छा थी कि उनकी कोई बेटी हो और जब यह बेटी पैदा हुई तो वह खुद चली गयीं। उन्होंने तो अपनी बेटी को देखा भी नहीं। वह तो किसी से यह भी नहीं कह सकीं कि वह उसकी देखभाल कर ले।"

यह सुन कर छहों बड़े भाइयों की पत्नियाँ कहतीं — "तुम उसकी तरफदारी केवल हमको नीचा दिखाने के लिये ही लेती हो।"

फिर जब उनके पति घर में नहीं होते तो वे अपनी ननद के बारे में कोई नीच किस्म की कहानी बनाती और उनके लौटने पर उनको सुनातीं। उनके पति अपनी पत्नियों का विश्वास करते बजाय अपनी बहिन का विश्वास करने के। वे उस पर खूब गुस्सा होते और उसे घर से बाहर निकाल देते।

---

[22] Chundun Raja. (Tale No 20).

पर सातवें भाई की पत्नी उनकी बातों पर ज़रा भी विश्वास नहीं करती और हमेशा है छोटी राजकुमारी के लिये दयावान रहती। वह अपने खाने में से जितना ज़्यादा से ज़्यादा हो सकता उतना खाना उसको भेज देती।

एक बार जब छहों राजकुमारों ने उसको घर से बाहर निकाला तो उनकी पत्नियों ने कहा — "जा ओ नीच लड़की जा और फिर कभी हमें अपना चेहरा मत दिखाना जब तक तुम चन्दन राजा से शादी न कर लो।

जब तुम हमें शादी में बुलाओगी और हमें बैठने के लिये छह सामान्य लकड़ी के सबसे ऊँचे स्टूल दोगी और अपनी सबसे छोटी भाभी को पन्ने की कुर्सी दोगी जो हमेशा तुम्हारी तरफदारी करती है तब हम तुम्हारा विश्वास करेंगे कि तुम बेकुसूर हो और जिनका तुम पर इलजाम लगाया गया है तुमने उनमें से कोई बुरा काम नहीं किया। पर उससे पहले नहीं।"

ऐसा उन्होंने उसको नाराजी से देखते हुए और डॉटते हुए कहा क्योंकि यह चन्दन राजा जिसके बारे में वे बात कर रही थीं वह एक पड़ोसी देश का राजा था जो कई महीने पहले मर गया था।

राजकुमारी यह सुन कर घर से निकल गयी और महीनों तक जंगलों में घूमती रही। वह एक जंगल से निकलती तो दूसरे में घुस जाती। दूसरे में से निकलती तो तीसरे में घुस जाती।

जैसे जैसे वह आगे बढ़ती जाती जंगल और घना होता जाता। अब तो उसे आसमान दिखायी देना भी बन्द हो गया था। पास में कोई गाँव या कोई घर भी उसे दिखायी नहीं दे रहा था। खाना भी जे उसकी छोटी भाभी ने दिया था वह भी करीब करीब खत्म हो गया। अब उसको यह भी पता नहीं था कि वह और खाना कहाँ से लाये।

कई दिन की यात्रा के बाद वह एक तालाब के पास आयी। उस तालाब के पास एक घर था जो किसी राक्षस का था। वह बहुत थक गयी थी तो थोड़ा सुस्ताने के लिये तालाब के चारों तरफ बनी दीवार पर बैठ गयी और बचे हुए चावल के मुरमुरे निकाल कर उन्हें खाने लगी।

उन्हें खाते खाते वह सोचने लगी "यह घर तो यकीनन किसी राक्षस का लगता है जो अगर मुझे देख लेगा तो मुझे मार डालेगा और खा जायेगा। पर क्योंकि मेरी कोई परवाह करने वाला नहीं है और न मेरा कोई घर है और न कोई दोस्त है तो मेरी तो ज़िन्दगी ही सस्ती है। फिर मुझे इसकी क्या परवाह।"

उस समय राक्षस बाहर गया हुआ था और उसके घर में कोई नहीं था सिवाय एक छोटी बिल्ली और कुत्ते के जो उसके नौकर थे।

कुत्ते का काम यह था कि वह राक्षस की केसर की देखभाल करता जिससे राक्षस कुछ खास दिनों पर अपना चेहरा रंगता था।

और बिल्ली उसके काजल का ख्याल रखती थी जिसे वह अपनी आँखों में लगाता था।

अभी राजकुमारी को वहाँ बैठे हुए बहुत देर नहीं हुई थी कि राक्षस की बिल्ली ने उसे देख लिया। वह उसके पास दौड़ी आयी और बोली — "बहिन बहिन। मुझे बहुत ज़ोर की भूख लगी है मुझे भी कुछ खाने को दे दो।"

राजकुमारी बोली — "अगर मैं तुम्हें अपना खाना दे दूँगी तो मैं तो फिर भूखी ही रह जाऊँघी। पर अगर मैं तुम्हें कुछ दे दूँगी तो बदले में तुम मुझे क्या दोगी।"

बिल्ली बोली — "मैं राक्षस के काजल की रखवाली हूँ जिसे वह अपनी आँखों में लगाता है। तो मैं तुम्हें उसमें से थोड़ा सा काजल दे दूँगी।"

कह कर वह घर के अन्दर भाग गयी और एक छोटा सा बर्तन भर कर काजल ले आयी जो उसने राजकुमारी को चावल के बदले में दे दिया।

जब कुत्ते ने यह देखा तो वह भी तालाब पर भागा गया और राजकुमारी से बोला — "मैडम मैडम मुझे भी कुछ चावल दो। मुझे भी बहुत भूख लगी है।"

राजकुमारी बोली — "अब मेरे पास बहुत थोड़ा सा ही चावल रह गया है और अगर मैं यह सारा चावल तुम्हें दे दूँगी तो मैं तो

भूखी ही रह जाऊँगी। अगर मैं अपना थोड़ा सा खाना मैं तुम्हें दे दूँ तो बदले में तुम मुझे क्या दोगे।"

कुत्ता बोला — "मैं राक्षस की केसर का रखवाला हूँ जिसे वह अपना चेहरा रंगने के लिये इस्तेमाल करता है। अगर तुम मुझे कुछ खाना दे दोगी तो मैं उसकी कुछ केसर तुम्हें दे दूँगा।"

सो यह कह कर वह भी घर के अन्दर भाग गया और काफी सारी केसर ले आया। राजकुमारी ने उससे केसर ले ली और उसको कुछ चावल दे दिये। फिर राजकुमारी ने काजल और केसर अपनी साड़ी के पल्लू में बाँधे और अपने रास्ते चली गयी।

वह तीन चार दिन तक जंगल में चलती रही तो उसने देखा कि वह तो जंगल पार कर जंगल के दूसरी ओर निकल आयी है। अब जंगल भी इतना घना नहीं रह गया था। तभी दूर उसे एक इमारत दिखायी दी जो उसे किसी का मकबरा जैसी लगी।

राजकुमारी ने सोचा कि वह इस इमारत तक जायेगी और देखेगी कि वह क्या है और क्या वहाँ कोई ऐसा भी है जो उसको खाना दे सके। क्योंकि अब उसका चावल खत्म हो चुका था और उसको भूख लग आयी थी। और अब रात भी होने वाली थी।

जिस तरफ राजकुमारी बढ़ी जा रही थी वह चन्दन राजा की कब्र थी पर वह यह नहीं जानती थी।

चन्दन राजा कई महीने हुए मर गये थे और उसके माता पिता और बहिनें जो उससे बहुत प्यार करते थे वह यह नहीं चाहते थे कि

उसको ठंडी जमीन के नीचे दफ़नाया जाये सो उन्होंने उसके लिये एक सुन्दर मकबरा बनवा दिया था।

उसके अन्दर उन्होंने एक सुन्दर बिस्तर पर राजा का शरीर रख कर उसके ऊपर एक छतरी लगवा दी थी। आश्चर्य की बात थी कि चन्दन राजा की लाश बिल्कुल खराब नहीं हुई थी बल्कि ऐसा लगता था जैसे वह अभी अभी मरा हो और उसे वहॉ अभी अभी वहॉ रखा हो।

चन्दन राजा की मॉ बहिनें वहॉ रोज आतीं और सुबह से शाम तक रोती रहतीं। रात को वे अपने घर लौट जातीं। उस मकबरे के पास ही एक मन्दिर था और एक छोटा सा मकान था जिसमें एक ब्राह्मण रहता था। वह उस जगह को देखता भालता था।

दूर और पास सभी जगह से लोग अपने राजा को देखने के लिये लोग वहॉ आते रहते और यह जादू देखते कि किस तरह से इतने महीनों के मरने के बाद भी राजा का शरीर अब तक ताजा रखा हुआ है। कोई भी नहीं जानता कि ऐसा कैसे था।

जब राजकुमारी उस जगह के पास पहॅुची तो एक भारी तूफान सा आया जिसमें वह बारिश में भीग गयी। इतना ॲधेरा हो गया कि उसको यह भी दिखायी नहीं पड़ रहा था कि वह कहॉ जा रही है।

अगर वह यह जानती कि वह चन्दन राजा के मकबरे में जा रही है तो वह बहुत डर जाती पर जैसा होना था। तूफान इतना भारी था और रात होने वाली थी कि वह दौड़ कर उसी मकबरे में पहॅुच

गयी। वह कॉपती हुई एक कोने में जा कर बैठ गयी। दीवार मे एक छेद था जिसमें एक दिया जल रहा था।

उस दिये की मद्धम रोश्नी में उसने छतरी के नीचे लेटे हुए राजा के शरीर को देखा। उसने देखा कि उसका शरीर एक बहुत सारे जवाहरात से जड़ी हुई चादर से ढका हुआ था। उसके चारों ओर कीमती साज सज्जा लटकी हुई थी। वह ऐसा लग रहा था जैसे केवल सोया हुआ ही हो। उससे उसको डर नहीं लगा।

रात को **12** बजे राजा के शरीर में जैसे जान पड़ गयी हो। वह उठा और जब उसने लड़की को कॉपते हुए एक कोने में बैठे हुए देखा तो उसने वह दिया उठाया और आ कर उससे पूछा "तुम कौन हो?"

राजकुमारी बोली — "मैं एक गरीब अकेली लड़की हूँ। मैं यहॉ केवल तूफान से बचने के लिये आ गयी हूँ। मुझे बहुत ठंड और भूख लग रही है।"

और फिर उसने उसे अपनी सारी कहानी सुना दी कि किस तरह उसकी भाभियों ने उस पर झूठा इलजाम लगा कर उसे घर से बाहर निकाल दिया था और जंगल की तरफ खदेड़ दिया था।

उन्होंने उससे यह भी कहा कि जब तक वह चन्दन राजा से शादी न कर ले वह उनको अपना मुॅह न दिखाये। और चन्दन राजा तो महीनों पहले ही मर चुका है। और फिर कैसे उसकी सबसे छोटी भाभी ने उसको कुछ खाना दिया था जो अभी तक चल रहा था।

राजा ने राजकुमारी की बात सुनी। उसे उसकी बातों पर विश्वास हो गया कि वह जंगल की कोई सामान्य भिखारिन नहीं थी। हालाँकि उसने फटे पुराने कपड़े पहन रखे थे फिर भी वह एक शाही घराने की लड़की लग रही थी और अँधेरे में एक तारे की तरह चमक रही थी।

हाँ उसकी आँखें काजल लगाने से कुछ काली नजर आ रही थीं। उसके चेहरे पर केसर लगी हुई थी जैसे कि किसी राजकुमारी के चेहरे पर लगी रहती है।

चन्दन राजा को उस पर दया आ गयी। वह उससे बोला — "तुम बिल्कुल डरो नहीं क्योंकि अबसे मैं तुम्हारी देखभाल करूँगा।"

कह कर वह अपनी ओढ़ने की चादर वहाँ खींच लाया और उसको ओढ़ा दी ताकि वह कुछ गर्म महसूस कर सके। फिर वह ब्राह्मण के घर गया जो वहीं पास में ही था और वहाँ से कुछ चावल ले कर आया ताकि वह कुछ खा सके।

वह फिर बोला — "मैं ही चन्दन राजा हूँ जिसके बारे में तुमने सुना है। मैं रोज मर जाता हूँ पर हर रात कुछ देर के लिये मैं ज़िन्दा हो जाता हूँ।"

राजकुमारी बोली — "क्या तुम्हारे परिवार में से इस बात को कोई जानता है? और अगर कोई जानता है तो तुम इस मकबरे में क्यों रहते हो?"

चन्दन राजा बोला — “नहीं इस बात को कोई नहीं जानता बस केवल यह ब्राह्मण जानता जो यहाँ की देखभाल करता है। क्योंकि मैं ऐसे ही अपंग हो गया हूँ तो किसी को बताने से क्या फायदा। उस समय उनको मेरे मरने की बात से ज़्यादा दुख होगा।

इसलिये मैंने ब्राह्मण को भी मना कर दिया है कि वह यह बात उनसे न कहे। इसके अलावा मेरे माता पिता यहाँ केवल दिन में आते हैं इसलिये उनको यह बात पता भी नहीं है। हो सकता है कि जब तक मैं पूरी तरीके से ठीक न हो जाऊँ तब तक मैं इसी तरह से चुप रहूँ।”

उसके बाद उसने ब्राह्मण को बुलाया जो मकबरे और मन्दिर की देखभाल करता था। वही राजा के लिये कुछ खाना भी रखता था ताकि राजा जब ज़िन्दा हो जाये तो वह उसे खा ले।

उसने उससे कहा कि अगले दिन से वह मन्दिर में पहले जितना खाना रखता था उसका दोगुना खाना रखा करे और इस लड़की का ख्याल रखे। अगर मैं कभी ठीक हो गया तो यह मेरी रानी बनेगी।

यह कह कर वह फिर मर गया।

ब्राह्मण राजकुमारी को अपने घर ले गया और अपनी पत्नी से कहा कि उसकी सब जरूरतों का ख्याल रखे। उसे किसी चीज़ की कमी न होने दे। अगले सारे दिन वह वहीं आराम करती रही।

सुबह सवेरे ही चन्दन राजा की माँ और बहिनें उसके मकबरे पर आयीं पर वे राजकुमारी को नहीं देख सकीं। और शाम को जब सूरज डूबने वाला हो गया तो वे वहाँ से चली गयीं।

उस रात जब चन्दन राजा ज़िन्दा हुआ तो उसने ब्राह्मण को बुलाया और उससे पूछा कि क्या राजकुमारी अभी भी वहीं थी।

ब्राह्मण बोला — "हाँ वह अभी भी यहीं है क्योंकि वह अपनी यात्रा से बहुत थक गयी है और जाने के लिये उसका कोई घर भी नहीं है।"

राजा बोला — "क्योंकि उसकी न तो कोई दोस्त है और न कोई घर है तो अगर वह मुझसे शादी कर ले तो आप उससे मेरी शादी करा दें। इस तरह से वह शरण माँगने के लिये इधर उधर नहीं भटकती फिरेगी।"

सो ब्राह्मण ने अपनी किताबें निकालीं अपने परिवार को बुला कर उनके सामने राजा की शादी राजकुमारी से करा दी। उसने उनके सिरों पर चावल और फूल फेंक कर उन दोनों को आशीर्वाद दिया। इस तरह राजकुमारी वहाँ कुछ समय तक रही।

राजकुमारी बहुत खुश थी। उसे अब और कुछ नहीं चाहिये था। ब्राह्मण और उसकी पत्नी भी उसकी उतनी है देखभाल करते थे जितनी वे अपनी बेटी की करते। वह दिन में रोज मकबरे के बाहर इन्तजार करती पर शाम के बाद अपने पति के ज़िन्दा हो जाने का इन्तजार करती।

एक रात उसने अपने पति से कहा — "प्रिय। मुझे बहुत खुशी है कि मैं तुम्हारी पत्नी हूँ। रात को दो तीन घंटों के लिये मैं तुम्हारा हाथ पकड़ती हूँ तुमसे बातें करती हूँ। बजाय इसके कि मैं किसी बड़े ज़िन्दा राजा से शादी करती और उसके साथ सौ साल रहती।

पर यह कितनी खुशी की बात होती अगर तुम पूरे ज़िन्दा हो जाते। क्या तुम्हें मालूम है कि तुम्हारे रोज मरने की क्या वजह है। और वह क्या चीज़ है जो तुम्हें रात को **12** बजे ज़िन्दा कर देती है?"

चन्दन राजा बोला — "हॉ मुझे मालूम है। मुझसे मेरा चन्दन हार ले लिया गया है जिसमें मेरी आत्मा थी। एक बार मैं अपने महल के बागीचे में टहल रहा था कि बहुत सारी पंखों वाली लड़कियॉ मेरे ऊपर से उड़ीं।

उनमें से एक ने मुझे देखा तो उसे मुझसे प्यार हो गया। उसने मुझसे शादी करने के लिये कहा तो मैंने उसे मना कर दिया। इस पर वह गुस्सा हो गयी और वह मेरा चन्दन हार निकाल कर ले गयी। उसके मेरे गले से चन्दन हार निकालते ही मैं मर कर गिर पड़ा।

मेरे माता पिता ने फिर मेरे शरीर को इस मकबरे में रख दिया। पर हर रात वह परी आती है और वह चन्दन हार अपने गले में से निकाल कर मुझे पहनाती है तो मैं ज़िन्दा हो जाता हूँ। वह मुझे अपने साथ आने के लिये कहती है अपने साथ शादी करने के लिये कहती है।

दो तीन घंटे तक वह चन्दन हार मेरे गले में ही पड़ा रहता है और वह हर रात इस बात का इन्तजार करती है कि मैं हॉ कर दूँगा। पर जब वह देखती है कि मैं हॉ नहीं कर रहा तो वह फिर से मेरे गले में से चन्दन हार निकाल लेती है और उड़ जाती है। उसके बाद मैं मर जाता हूँ।"

चन्दन रानी ने पूछा — "क्या उस परी को पकड़ा नहीं जा सकता?"

चन्दन राजा बोला — "नहीं। मैंने कई बार अपने हार को पकड़ कर रखने की कोशिश की है ताकि मैं अपनी ज़िन्दगी पूरे तरीके से पा सकूँ पर वह परी अदृश्य हो कर आती है और उसको साथ ले कर उड़ जाती है। दुनियॉ के किसी भी आदमी के लिये उसे पकड़ना नामुमकिन काम है।"

यह सुन कर चन्दन रानी बहुत दुखी हुई क्योंकि अब उसके पास आशा की कोई किरन नहीं थी जिससे वह राजा को हमेशा के लिये ज़िन्दा कर सकती। इससे वह इतनी ज़्यादा दुखी और निराश हुई कि जब उसके एक बेटा हुआ तो वह भी उसको बहुत ख़ुशी नहीं दे सका।

क्योंकि वह बस अब यही सोचती रहती कि "उसका बेटा यहॉ इस अकेली जगह में रह कर बड़ा होगा। दिन में उसका कोई पिता नहीं होगा जो उसे वह सब सिखा सके जो और दूसरे बच्चे अपने अपने पिताओं से सीखते हैं।

बल्कि वह उन्हें केवल रात को ही थोड़ी देर के लिये देखेगा। हम सब परी की ही दया पर निर्भर रहेंगे जो कभी भी चन्दन हार को ले कर दूर उड़ जाये और फिर न भी लौटे, क्या पता।"

ब्राह्मण ने महसूस किया कि रानी बहुत उदास रहती है तो एक दिन उसने चन्दन राजा से कहा — "चन्दन रानी तो यहाँ मर जायेगी अगर उसको कहीं और न भेज दिया गया जहाँ उसकी यहाँ से भी अधिक देखभाल की जा सके। क्योंकि मेरे गरीब घर में मैं और मेरी पत्नी उसकी देखभाल कर तो रहे हैं पर मुझे लगता है कि वह काफी नहीं है।

आपकी माँ और बहिनें बहुत अच्छे दिल वाली हैं तो उसको वहाँ जाने दें जहाँ वे उसकी देखभाल यहाँ से अधिक अच्छी तरह से करेंगी।"

अब ऐसा हुआ कि महल में सफेद संगमरमर का एक बहुत बड़ा पत्थर लगा हुआ था जिस पर चन्दन राजा तेज़ गर्मियों के दिनों में आराम किया करते थे।

वह पत्थर चन्दन राजा को इतना अच्छा लगता था कि राजा और रानी ने चन्दन राजा के मरने के बाद उसके लिये यह कह रखा था कि उसकी बहुत अच्छे से देखभाल की जाये और उसे किसी को भी न छूने दिया जाये।

चन्दन राजा को जब इस बात का पता चला तो उसने चन्दन रानी से कहा — "तुम्हारी तबियत ठीक नहीं रहती। मैं चाहता हूँ

कि तुम महल जाओ जहाँ मेरी माँ और बहिनें तुम्हारी बहुत अच्छे से देखभाल करेंगी।

तुम वहाँ जाओ हमारे बच्चे को भी वहीं ले जो। वहाँ जा कर तुम महल के आँगन में लगे संगमरमर के पत्थर पर उसके साथ जरूर बैठना। वह पत्थर मुझे बहुत प्रिय था इसी लिये उन्होंने उसको इतना सुरक्षित रखा हुआ है।

यकीनन वे लोग तुम्हें देख लेंगे और वहाँ से जाने के लिये कहेंगे पर अगर तुम उनसे यह कहोगी कि तुम बीमार हो तो वे तुम्हारे ऊपर दया करेंगे और तुमसे दोस्ती कर लेंगे।"

चन्दन रानी ने वैसा ही किया जैसा चन्दन राजा ने उससे करने के लिये कहा था। उसने अपने बच्चे को संगमरमर के पत्थर पर लिटा दिया और उसके पास ही बैठ गयी।

चन्दन राजा की बहन जो अपनी खिड़की से यह देख रही थी चिल्लायी — "माँ देखो एक स्त्री है और एक बच्चा है जो मेरे भाई के संगमरमर के पत्थर पर आराम कर रहा है। मैं उनको वहाँ से जाने के लिये बोलती हूँ।"

सो वह तुरन्त ही वहाँ दौड़ी गयी पर जब उसने वहाँ जा कर चन्दन रानी और छोटे बच्चे को देखा तो उनको देख कर तो वह आश्चर्यचकित रह गयी।

चन्दन रानी तो कितनी सुन्दर और प्यारी सी थी और बच्चा तो बिल्कुल उसके भाई की शक्ल का ही था। वह तुरन्त ही वापस माँ

के पास आयी और बोली — “मॉ जो लड़की सफेद संगमरमर के पत्थर पर बैठी है वह तो कितनी सुन्दर है। हमें उस पर कोई इलजाम नहीं लगाना चाहिये।

वह कह रही थी कि वह बहुत थकी हुई और बीमार है। और उसका बच्चा तो मुझे अपने मरे हुए भाई की शक्ल का ही लगता है।”

यह सुन कर रानी मॉ और परिवार के दूसरे लोग उन दोनों को देखने के लिये बाहर गये। चन्दन रानी को देख कर उनका दिल पिघल गया और वे उन दोनों को महल के अन्दर ले आये। वे सब उससे बहुत दया का बर्ताव करते थे और उसकी देखभाल करते थे।

कुछ ही दिनों में उसकी तबियत फिर से अच्छी होने लगी। अब वह कम दुखी रहा करती थी। चन्दन बेटा भी उन सबका बहुत दुलारा हो गया था क्योंकि सभी उसकी चन्दन राजा के चेहरे से समानता देख कर उसकी तरफ बहुत आकर्षित थे।

कुछ समय बाद उन्होंने चन्दन रानी को रहने के लिये महल के पास ही एक छोटा सा घर दे दिया थ जहॉ वे लोग भी अक्सर मिलने जाया करते थे।

उधर चन्दन राजा भी हर रात ज़िन्दा हो जाता और अपनी पत्नी और बेटे के पास बात करने के लिये जाता और दो तीन घंटे बाद

चला जाता। हालाँकि चन्दन राजा ने अभी भी उसे अपने माता पिता से कुछ भी कहने के लिये मना कर रखा था।

समय गुजर रहा था। बेटा बड़ा हो रहा था। एक दिन बेटे ने चन्दन राजा की एक बहिन से यह कह दिया कि हर रात कोई उनके घर उसकी माँ के साथ हँसने और बात करने के लिये और उसके साथ खेलने के लिये आया करता था और फिर चला जाया करता था।

राजकुमारी ने भी चन्दन रानी के घर से हँसने और बोलने की आवाजें सुनीं और इसके अलावा वहाँ उस समय रोशनी भी देखी जब कि वहाँ सब लोगों को गहरी नींद में सोते रहना चाहिये था।

उसने इस बारे में अपनी माँ को बताया और कहा — "माँ कल रात हमको वहाँ जा कर देखना चाहिये कि इस सबका क्या मतलब है। हो सकता है कि यह स्त्री जिसको हम गरीब समझ रहे हों और जिससे हम अच्छा व्यवहार कर रहे हों कोई धोखेबाज हो और हमारे खर्चे पर आनन्द मना रही हो।"

सो अगली शाम वे दबे पाँव उस स्त्री के घर गये तो वहाँ उन्होंने क्या देखा? कि वहाँ कोई अजनबी नहीं था जैसी कि उन्होंने आशा की थी बल्कि बरसों का खोया अपना चन्दन राजा था।

अब तो वह बच नहीं सकता था सो उसने उन्हें सब बता दिया कि किस तरह से वह रात को दो तीन घंटे के लिये ज़िन्दा हो जाता था पर सारा दिन मरा हुआ पड़ा रहता।

वे सब उसे दोबारा ज़िन्दा देख कर बहुत खुश हुए और उसे डॉटा कि उसने उनको यह कभी क्यों नहीं बताया कि वह ज़िन्दा था चाहे वह इतने थोड़े समय के लिये ही होता हो।

फिर उसने उनको बताया कि किस तरह से उसने चन्दन रानी से शादी की और उन्हें उसकी देखभाल करने के लिये धन्यवाद दिया।

इसके बाद वह हर रात उन सबके साथ बात करने के लिये वहॉ आता पर हर रात वह मर जाता। वे कोई ऐसा उपाय नहीं ढूँढ पा रहे थे जिससे वे उस परी से उसका चन्दन हार वापस ले लेते जिससे वह हमेशा के लिये ज़िन्दा हो जाता।

आखिर एक दिन जब वे सब हॅस रहे थे और बात कर रहे थे सबसे छिप कर सात परियॉ उड़ती हुई उस कमरे में आयीं। उनमें से एक जिसने चन्दन राजा का चन्दन हार लिया था उसे अपने हाथों में पकड़े हुए थी।

सारी परियों को चन्दन राजा और चन्दन रानी का बेटा बहुत अच्छा लगता था क्योंकि उसमें उन्हें चन्दन राजा और चन्दन रानी दोनों की सुन्दरता की छवि दिखायी देती थी। वे अक्सर वहॉ आतीं और उसके साथ खेलतीं।

वह सुबह की तरह सुन्दर था। जब वह उन्हें आते देखता तो बहुत खुश होता और ताली बजाता। हालॉकि आदमी और स्त्रियॉ परियों को नहीं देख सकते पर बच्चे तो उन्हें देख ही सकते हैं।

जब परियाँ उस कमरे में आयीं चन्दन राजा अपने बेटे को उछाल रहा था। बच्चा बहुत ज़ोर से हँस रहा था। परियों ने राजा और बच्चे के चारों तरफ एक चक्कर लगाया। वह परी जिसके हाथ में चन्दन हार था उसने उसे राजा के सिर पर घुमाया।

बच्चे ने चमकती हुई चीज़ देखी तो उसने अपना हाथ बढ़ा कर उसे पकड़ लिया। जैसे ही उसने उसे पकड़ा तो वह खिंचा तो उसका धागा टूट गया। उसके सारे मोती फर्श पर बिखर गये। यह देख कर सातों परियाँ डर गयीं और वहाँ से उड़ गयीं।

चन्दन रानी तुरन्त उठी और उसने सारे मोती बीन कर उसकी फिर से माला बना ली और राजा के गले में डाल दी। सब लोग यह देख कर बहुत खुश हुए क्योंकि उसको अपना हार मिल गया था। रोज मरने का शाप जो उस पर पड़ा हुआ था वह अब टूट गया था।

खुशी की यह खबर सारे राज्य में फैल गयी। सारे लोग बहुत खुश हुए। “हम अपने प्यारे राजा को बहुत समय से खो चुके थे अब बच्चा राजा उसको अपने साथ वापस ले आये हैं।”

चन्दन राजा के माता पिता ने सोचा कि अब चन्दन राजा की शादी चन्दन रानी से धूमधाम से दोबारा कर दी जाये। सो उन्होंने सब राजाओं को इस बात की खबर की कि “हमारे चन्दन राजा अब ज़िन्दा हो गये हैं। हमारी आपसे प्रार्थना है कि आप उनकी शादी में जरूर आयें।”

यह बुलावा चन्दन रानी के सातों भाइयों और उनकी पत्नियों के पास भी गया। उन्होंने इसे स्वीकार किया।

उसकी छह भाभियॉ जो उसके साथ बड़ी बेरहमी का व्यवहार करती रही थीं जिन्होंने उसको जंगल जाने पर मजबूर कर दिया था चन्दन रानी ने उनके लिये छह सामान्य लकड़ी के स्टूल बनवाये।

पर उसने अपनी सबसे छोटी भाभी जो उसको बहुत प्यार करती थी पन्ने का सिंहासन बनवाया। और पन्ने जड़ा पैर रखने का स्टूल बनवाया।

जब सब रानियॉ अपनी अपनी जगह बैठने वाली थीं छहों बड़ी रानियों ने शिकायत की — "यह क्या बात है। हम छहों को तो सादा से स्टूल दिये गये हैं और सबसे छोटी को पन्ने का सिंहासन और पन्ना जड़ा पैर रखने का स्टूल दिया गया है।"

यह सुन कर चन्दन रानी उठी और सब मेहमानों के सामने अपनी कहानी बतायी। अपनी छहों बड़ी भाभियों के ताने बताये और कहा कि किस तरह उन्होंने उससे कहा था कि वह उनको तब तक अपना चेहरा न दिखाये जब तक वह चन्दन राजा से शादी न कर ले। उसने सबको यह भी बताया कि कैसे वे उसकी उसके भाइयों से गलत शिकायतें करती रही थीं।

जब रानियों ने यह सुना तो डर और शर्म से उनकी तो बोलती ही बन्द हो गयी। वे तो एक शब्द भी न बोल सकीं।

उनके पति भी यह सब सुन कर बहुत गुस्सा हुए कि किस तरीके से उनकी पत्नियों ने उनकी बहिन को मारने का प्लान बनाया था। इन नीच स्त्रियों को तो फॉसी पर लटका देना चाहिये। और वैसा ही किया गया।

उसी दिन जिस दिन चन्दन रानी की शादी दोबारा हुई उसके छहों भाइयों की भी शादी उनके दरबार की छह स्त्रियों से धूमधाम से हो गयी। फिर वे ज़िन्दगी भर सुख और शान्ति से रहे।

21 सुदेवा बाई[23]

यह बहुत दिनों पहले की बात है कि भारत में एक राजा और रानी रहते थे। उनके केवल एक ही बेटी थी और वह दुनियाँ की सबसे सुन्दर राजकुमारी थी। उसका चेहरा इतना सुन्दर और कोमल था जितनी की चाँदनी। उन्होंने उसका नाम रखा सुदेवा बाई[24]।

जब उसका जन्म हुआ तो उसके पिता ने अपने राज्य के बहुत सारे अक्लमन्द लोगों को बुला भेजा ताकि वे उसकी किस्मत के बारे में कुछ बता सकें।

उन्होंने बताया कि वह बड़ी हो कर किसी भी स्त्री से कहीं बहुत अमीर और खुशकिस्मत बनेगी। और फिर ऐसा ही हुआ। जैसे जैसे वह बड़ी होती गयी वह और बहुत अच्छी और बहुत प्यारी होती गयी।

जब भी वह कुछ बोलने के लिये मुँह खोलती तो उसके मुँह से मोती और जवाहरात जमीन पर गिरते। और जब वह चलती तो वे उसके रास्ते के दोनों तरफ बिखरते जाते।

इस तरह से उसका पिता राजा कुछ ही दिनों में दुनियाँ का सबसे अमीर राजा हो गया क्योंकि उसकी बेटी तो बिना जवाहरात नीचे गिराये अब कमरा भी पार नहीं कर सकती थी। और ये

---

[23] Sodeva Bai. (Tale No 21).

[24] Sodeva means “Good Fortune”

जवाहरात भी इतने सारे होते कि उनसे एक लड़की का अच्छा खासा दहेज दिया जा सकता था।

इसके अलावा सुदेवा बाई अपने गले में एक सोने का हार पहने पैदा हुई थी। सो राजा ने ज्योतिषियों से उसके बारे में भी पूछा तो उन्होंने कहा कि वह कोई मामूली बच्ची नहीं थी।

उसके गले का सोने का हार उसकी आत्मा थी इसलिये उनको उस हार की सब तरह से रक्षा करनी चाहिये। क्योंकि अगर वह हार उतार लिया गया और किसी दूसरे ने पहन लिया तो यह मर जायेगी।

इसलिये रानी ने उस हार को उसके गले से कस कर बाँध दिया ताकि वह उसके गले से निकल ही न सके। और जैसे ही वह इतनी बड़ी हो गयी कि वह समझदार हो गयी तो उसको उसने उसके बारे में सब कुछ बता दिया। और उससे कहा कि वह किसी भी हालत में उस हार को उतरने न दे।

अब इसकी कहानी शुरू होती है। सुदेवा बाई **14** साल की हो गयी थी पर अभी तक वह कुँआरी ही थी। क्योंकि उसके माता पिता ने यह सोच रखा था कि वह उसकी शादी तब तक नहीं करेंगे जब तक उसकी अपनी इच्छा नहीं होगी।

हालाँकि बहुत सारे राजा और कुलीन लोग उसका हाथ माँगने आये पर उसने उन सबको मना कर दिया था।

एक बार सुदेवा बाई के पिता ने सुदेवा बाई के जन्मदिन पर उसे एक बहुत सुन्दर जवाहरातों से जड़े सोने के जूते दिये। उसका वह एक एक जूता **100–100** हजार मुहरों का था। ऐसा जूता तो दुनियाँ भर में कोई दूसरा नहीं था।

सुदेवा बाई इन जूतों की बहुत कद्र करती थी। जब भी वह बाहर जाती तो पत्थरों से अपने पैरों को बचाने के लिये वह इन्हीं को पहन कर जाती थी।

एक दिन जब वह अपनी सहेलियों और दासियों के साथ उस पहाड़ पर घूम रही थी खेल रही थी फूल चुन रही थी जिस पर उसका किला बना हुआ था तो उसका पैर फिसल गया और उसका एक जूता उस पहाड़ की ढलान पर नीचे की तरफ गिरता चला गया। वह चट्टानों और पत्थरों पर से फिसलता हुआ नीचे जंगल में जा गिरा।

सुदेवा बाई ने अपनी एक दासी को उस जूते की खोज में भेजा। उधर राजा ने भी अपने मुनादी पीटने वालों को यह मुनादी पीटने को लिये कह दिया कि वह शहर भर में यह कह दें कि जो कोई भी सुदेवा बाई का वह जूता ढूँढ कर लायेगा उसको बहुत भारी इनाम दिया जायेगा।

पर उस जूते को दूर में और पास में ऊँचाई पर और नीचाई में सब जगह ढूँढा गया पर वह जूता तो मिल कर ही नहीं दिया।

इत्तफाक से कुछ समय बाद एक राजकुमार जो मैदानों में रहता था शिकार खेलने के लिये निकला तो उसी जंगल में पहुँच गया जहाँ सुदेवा बाई का जूता पड़ा हुआ था जो पहाड़ की ऊँचाई से नीचे जंगल में गिर पड़ा था।

उस छोटे से सुन्दर से जूते को देख कर उसने वह जूता उठा लिया और घर ले जा कर उसे अपनी माँ को दिखाया और बोला — "माँ वह कितनी सुन्दर होगी जिसका यह जूता होगा।"

"हाँ मेरे बच्चे। यह तो सचमुच में ही किसी सुन्दर सी राजकुमारी का जूता होना चाहिये। क्या तुम ऐसी ही सुन्दर पत्नी पा सकते हो?"

इस पर उन्होंने राज्य भर में यह जानने के लिये अपने आदमी भेज दिये कि वे यह पता लगा कर लायें कि वह जूता किसका था। पर वह लड़की उन्हें कहीं नहीं मिली।

आखिरकार कई महीने बीतने के बाद कुछ यात्रियों ने राजा को यह खबर ला कर दी कि बहुत दूर देश में एक ऊँचे से पहाड़ के ऊपर एक बहुत सुन्दर राजकुमारी रहती है जिसका एक जूता खो गया है।

और उसके पिता ने उसको बहुत बड़ा इनाम देने का वायदा किया है जो कोई भी उसकी बेटी का जूता ला कर उसको देगा। उन लोगों ने जो कुछ भी उसके बारे में बताया उससे सबको ऐसा लगा कि यह वही राजकुमारी है जिसकी राजकुमार को तलाश थी।

तब उसकी माँ बोली — "मेरे बेटे, मुझे यकीन है कि यह जूता पहाड़ पर रहने वाली उसी राजकुमारी का है।

सो तुम इस जूते को उसके पास ले जाओ और जब राजा तुमसे कोई इनाम माँगने के लिये कहे तो तुम उससे न तो सोना माँगना न चाँदी माँगना बल्कि उससे उस लड़की का हाथ माँग लेना। इस तरह तुम उसको अपनी पत्नी के रूप में पा सकोगे।"

राजकुमार ने वैसा ही किया जैसा उसकी माँ ने उससे करने के लिये कहा था।

और जब एक लम्बी यात्रा के बाद वह सुदेवा बाई के पिता के दरबार में पहुँचा तो उसने वह जूता उसको दिया और बोला — "मैंने आपकी बेटी का जूता ढूँढ लिया है और उसे आपको देने के लिये अब मैं अपना इनाम चाहता हूँ।"

राजा ने पूछा — "बोलो तुम्हें क्या चाहिये? मैं तुम्हें क्या दूँ? घोड़े सोना चाँदी?"

राजकुमार बोला — "नहीं, इनमें से मुझे कुछ नहीं चाहिये। मैं एक राजा का बेटा हूँ जो मैदानों में रहता है। और मैंने यह जूता जंगलों में पाया है जहाँ मैं शिकार के लिये गया हुआ था।

मैंने कई थकान भरे दिन इसको यहाँ लाने में लगाये हैं। मैं इसके लिये केवल आपकी बेटी का हाथ माँगता हूँ। अगर इसमें आपकी खुशी हो तो आप मुझे अपना दामाद स्वीकार कर लें।"

राजा बोला — "मैं तुमसे इसका वायदा तो नहीं कर सकता क्योंकि मैंने यह फैसला किया है कि मैं अपनी बेटी की इच्छा के खिलाफ उसकी शादी किसी से नहीं करूँगा। इसलिये यह बात तो केवल वही बता सकती है कि वह तुमसे शादी करना चाहती है या नहीं। अगर वह तुमसे शादी करना चाहेगी तो मैं उसकी शादी तुमसे कर दूँगा पर यह बात मैं नहीं बता सकता यह तो वही बतायेगी।"

अब हुआ यह कि सुदेवा बाई ने अपनी खिड़की से राजकुमार को महल के दरवाजे तक आते देख लिया था।

और जब उसे इस बात का पता चला कि वह उसका जूता ले कर वहाँ आया है तो उसने अपने पिता से कहा — "मैंने राजकुमार को देख लिया है पिता जी और मैं उससे शादी करने के लिये तैयार हूँ।"

सो उन दोनों की शादी बड़ी धूमधाम से हो गयी।

जब सुदेवा बाई के दूसरे उम्मीदवारों ने उसकी पसन्द के बारे में सुना तो वे बड़े चकित हुए और साथ में गुस्सा भी हुए।

उन्होंने कहा — "सुदेवा बाई ने उस राजकुमार में क्या देखा जो उससे शादी कर ली। वह तो कोई बहुत सुन्दर भी नहीं है और वह तो गरीब भी बहुत है। यह तो सबसे ज़्यादा बेवकूफी की शादी है।"

पर वे सब शादी में आये और महल में उनका बहुत अच्छा स्वागत हुआ जहाँ शादी का उत्सव कई दिनों तक मनाया गया।

जब सुदेवा बाई और वह राजकुमार वहॉ कुछ दिन रह लिये तो राजकुमार ने अपने ससुर से कहा — "अब मैं अपने लोगों को देखना चाहता हूॅ तो आप मुझे मेरी पत्नी को मेरे घर ले जाने की इजाज़त दें।"

राजा बोला — "ठीक है। तुमको अपने घर जाना ही चाहिये। पर देखो तुम अपनी पत्नी की ठीक से देखभाल करना। उसको अपनी ऑख के तारे की तरह रखना।

और दूसरे यह कि उसके गले से यह सोने का हार कभी भी निकलने मत देना और किसी दूसरे को देना भी नहीं। क्योंकि अगर ऐसा कुछ हुआ तो यह मर जायेगी।"

राजकुमार ने इसके लिये राजा से वायदा किया कि वह ऐसा ही करेगा और सुदेवा बाई को ले कर अपने राज्य आ गया।

जब वे लोग वहॉ से जाने लगे तो पहाड़ के राजा ने उनको बहुत सारे जवाहरातों पैसा परदे कपड़े और कालीनों के अलावा बहुत सारे हाथी घोड़े ऊॅट और दास आदि भी दिये।

मैदान के राजा और रानी ने भी अपने बेटे और बहू का बड़े ज़ोर शोर के साथ स्वागत किया। वहॉ वे लोग बेरोक टोक के बहुत दिन तक शान्ति से रह सकते थे अगर वहॉ एक बहुत ही बदकिस्मत घटना न घटी होती...

इस राजकुमारी के पति रावजी की एक और पत्नी थी जिससे उसकी शादी उसके बचपन मे ही हो गयी थी। यह सुदेवा बाई का

जूता मिलने से बहुत समय पहले की बात है। इसलिये यह उसकी पहली और बड़ी रानी थी पर वह सुदेवा बाई को ज़्यादा प्यार करता था।

उधर रावजी के माता पिता भी अपनी बड़ी बहू की जगह सुदेवा बाई को ही ज़्यादा चाहते थे।

बड़ी रानी अपने अलावा किसी दूसरी स्त्री के रानी होने के बारे में सोच भी नहीं सकती थी खास कर के किसी दूसरी ऐसी स्त्री के बारे में जिसे लोग उससे ज़्यादा प्यार करें। इसलिये मन ही मन वह सुदेवा बाई से बहुत कुढ़ती थी और नफरत करती थी।

वह बाहर से तो यह दिखाती थी कि वह उसे बहुत चाहती है पर मन में वह उसको मारने की तरकीबें सोचती रहती थी।

रावजी के माता पिता को यह मालूम था कि उनकी बड़ी बहू सुदेवा बाई को नहीं चाहती इसलिये वे भी यह नहीं चाहते थे कि वे दोनों साथ साथ बैठें उठें।

पर क्योंकि उनका डर कुछ बेबुनियाद सा था और उनके पास उसका कोई पक्का सबूत नहीं था तो वे इससे ज़्यादा कुछ और नहीं कर सकते थे कि वे उनके ऊपर बराबर ध्यान रखे रहें।

सुदेवा बाई तो इस बारे में बिल्कुल ही अनजान थी सो जब भी उसके सास ससुर उसको बड़ी रानी से मिलने जुलने से मना करते तो वह उनका कहा नहीं मानती।

बल्कि वह यह कहती — "मुझे उनसे कोई डर नहीं है। मुझे तो लगता है कि मैं भी उन्हें प्यार करती हूँ और वह भी मुझे प्यार करती हैं। हम आपस में झगड़ा क्यों करें? हम दोनों बहिनें नहीं हैं क्या?"

एक दिन रावजी को अपने पिता के राज्य में किसी काम से दूर जाना पड़ा। वह सुदेवा बाई को अपने साथ ले नहीं जा सकता था सो वह उसको अपने माता पिता की देखभाल में छोड़ गया और उनसे वायदा कर गया कि वह जल्दी ही लौट आयेगा। उसके पीछे वह उसका ठीक से ख्याल रखें।

उन्होंने भी उससे वायदा किया कि वे उसका ठीक से ख्याल रखेंगे।

रावजी के जाने के थोड़ी देर बाद ही उसकी बड़ी रानी सुदेवा बाई के कमरे में गयी और उससे बोली — "रावजी तो अब चले गये हैं अब हम दोनों ही यहॉ अकेले रह गये हैं तो तुम मेरे पास अक्सर आ जाया करना और मैं भी तुम्हारे पास अक्सर आ जाया करूँगी। इस तरह से हम आपस में बात करके अपना समय अच्छे से गुजार सकेंगे।"

सुदेवा बाई राजी हो गयी। सुदेवा बाई उसको खुश करने के लिये अपने सारे जवाहरात आदि उसको दिखाने के लिये ले आयी।

जब वे उनको देख रही थीं तो बड़ी रानी ने सुदेवा बाई से पूछा — "मैं देखती हूँ कि तुम सोने के मोतियों का यह हार हमेशा ही

अपने गले में पहने रहती हो। ऐसी क्या बात है इसमें? क्या कोई खास बात है इस हार में कि वही हार तुम हमेशा ही पहने रहो?"

सुदेवा बाई ने बिना कुछ सोचे विचारे जवाब दिया — "हॉ। मेरा जन्म इस हार के साथ ही हुआ था तो अक्लमन्द लोगों ने मेरे माता पिता से कहा कि इस हार में मेरी आत्मा है और अगर किसी और ने इसे पहना तो मैं मर जाऊॅगी। इसलिये मैं इसे हमेशा ही पहने रहती हूॅ। मैंने इसको एक बार भी अपने गले से नहीं उतारा है।"

जब बड़ी रानी ने यह सुना तो वह बहुत खुश हुई फिर भी उन मोतियों के हार को चुराने में उसे डर ही लगा रहा। एक डर तो उसको यह था कि उसकी चोरी पकड़ी जायेगी और दूसरे यह था कि वह ऐसा कुछ अपने हाथ से नहीं करना चाहती थी।

घर लौटने के बाद उसने अपनी एक विश्वास की अफ्रीकन नौकरानी को बुलाया और उससे कहा — "आज शाम को तुम सुदेवा बाई के कमरे में जाना और जब वह सो रही हो तो उसके गले से सोने के मोतियों का हार निकाल लेना।

उसको अपने गले में पहन लेना और मेरे पास आ जाना। उन मोतियों में उसकी जान है तो जैसे ही तुम उनको पहनोगी वह मर जायेगी।"

वह नौकरानी वही करने के लिये राजी हो गयी जो बड़ी रानी ने उससे करने के लिये कहा था। क्योंकि उसको यह बहुत पहले से ही

पता था कि उसकी मालकिन सुदेवा से पहले से ही बहुत नफरत करती थी। वह केवल उसकी मौत चाहती थी।

सो उस रात वह नौकरानी बहुत ही हल्के कदमों से सुदेवा बाई के कमरे में गयी, उसका वह सोने का हार चुराया और अपने गले में पहन लिया।

इससे पहले कि कोई और जान पाता कि वहाँ क्या हुआ था वह उस कमरे से बाहर निकल आयी।

जैसे ही नौकरानी ने सुदेवा बाई का हार उतार कर अपने गले में पहना तो सुदेवा बाई तो मर गयी। उसकी आत्मा उसका शरीर छोड़ गयी।

अगले दिन राजा और रानी रोज की तरह जब अपनी छोटी बहू को देखने गये तो जा कर उन्होंने उसके कमरे का दरवाजा खटखटाया। किसी ने कोई जवाब नहीं दिया तो उन्होंने फिर से उसका दरवाजा खटखटाया।

पर उसके बाद भी जब किसी ने कोई जवाब नहीं दिया तो वे दरवाजा खोल कर अन्दर चले गये तो देखा कि वह तो वहाँ मरी पड़ी है बिल्कुल संगमरमर की तरह ठंडी।

हालाँकि जब उन्होंने उसको पहले दिन देखा था तब तो वह देखने में ठीक लग रही थी फिर रात भर में क्या हो गया उसको।

उन्होंने उसकी दासियों से पूछा जो उसके दरवाजे के ठीक बाहर सोती थीं कि क्या वह उस रात को बीमार हो गयी थी या फिर उसके कमरे में कोई गया था?

पर उन्होंने बताया कि उन्होंने उसके कमरे से कोई आवाज नहीं सुनी और न ही कोई उसके कमरे के पास गया था।

राजा और रानी ने यह देखने के लिये राज्य के सबसे अक्लमन्द डाक्टरों को बुलवाया कि क्या अभी भी उसके अन्दर ज़िन्दगी के कोई निशान बाकी थे पर सबने यही कहा कि छोटी रानी मर चुकी थी और अब उसके ज़िन्दा होने की कोई उम्मीद नहीं थी।

राजा और रानी दोनों दुख के सागर में डूब गये और ज़ोर ज़ोर से रोने लगे। वे दिल से चाहते थे कि रावजी एक बार आ कर अपनी पत्नी को फिर से देख ले।

सो उन्होंने उसके शरीर को दफ़न करने की बजाय एक तालाब के पास एक छत के नीचे एक कब्र में रख दिया। कब्र के ऊपर एक छत लगी हुई थी। वे उसको रोज देखने के लिये जाते थे और उसको देर तक देखते रहते।

और तब एक दिन एक ऐसा चमत्कार हुआ जैसा उस देश में पहले कभी नहीं हुआ था। सुदेवा बाई का शरीर न तो खराब हुआ न उसके चेहरे का रंग बदला।

एक महीने बाद जब उसका पति रावजी लौटा तब भी वह उतनी ही सुन्दर और प्यारी लग रही थी जितनी कि वह अपनी मौत

की रात को थी। उसके गालों और होठों का रंग अभी भी ताजा था। वह तो बस ऐसी लग रही थी जैसे केवल सोयी हुई हो।

रावजी ने जब उसकी मौत की खबर सुनी तो उसका दिल तो इतना टूट गया कि उसके माता पिता को लगा कि उसके दुख में वह भी मर जायेगा।

उसने अपनी बदकिस्मती के उस पल को कोसा जब वह उसके आखिरी शब्द भी नहीं सुन पाया था जो उसने उसको विदा करते समय कहे थे। अगर वह उसको न बचा पाया तो...

वह सुबह शाम उसकी कब्र पर जाता और रोता रहता। उसके रोने की आवाज से वहाँ की हवा भर जाती। वह उस जाली के अन्दर देखता रहता जिसके अन्दर वह कब्र के ऊपर लेटी हुई थी। उसके ऊपर छत अभी भी लगी हुई थी।

वह वहाँ जब भी जाता यही कहता — "मैं तुम्हारे चेहरे को एक बार आखिरी बार देख लूँ फिर कल चाहे तुमको मौत आ जाये, ओ मेरी प्यारी चमकीली पत्नी।"

यह सब देख कर राजा और रानी को यही डर लगा रहता कि या तो वह मर जायेगा या फिर पागल हो जायेगा सो उन्होंने उसका सुदेवा बाई के पास जाना बन्द करना चाहा पर कोई फायदा नहीं हुआ। ऐसा लग रहा था कि जैसे वह अपनी ज़िन्दगी में केवल उसी की चिन्ता करता था और किसी की नहीं।

उधर जिस नौकरानी ने सुदेवा बाई का हार चुराया था वह उसको सारे दिन तो पहने रखती पर हर रात कुछ रात बीत जाने पर उसको अगली सुबह तक के लिये उतार कर रख देती।

जब वह उसको उतार देती तब सुदेवा बाई की आत्मा उसमें से उड़ कर सुदेवा बाई के शरीर में पहुँच जाती।

इस तरह से सुदेवा बाई सारी रात ज़िन्दा रहती पर जब वह नौकरानी सुबह को फिर से वह हार पहन लेती तो वह फिर से मर जाती।

पर क्योंकि वह कब्र वहाँ के किसी भी घर से थोड़ी दूर थी और राजा और रानी और रावजी वहाँ केवल दिन में ही जाते थे किसी को इस बात का पता ही नहीं चल सका कि सुदेवा बाई वहाँ रात को ज़िन्दा हो जाती थी।

जब सुदेवा बाई पहली बार इस तरह ज़िन्दा हुई तो वह तो अपने आपको अँधेरे में अकेला पा कर बहुत डर गयी। उसको लगा कि वह जेल में बन्द है पर बाद में वह उसकी आदी हो गयी।

एक दिन रात को जब वह ज़िन्दा हुई तो उसने सोचा कि जब सुबह होगी तब वह अपने आस पास की जगह को देखेगी और अपने महल का रास्ता खोज लेगी और फिर महल में आ कर अपना हार भी ढूँढ लेगी जिसको कि वह सोचती थी कि शायद वह उससे खो गया है।

उस कब्र के चारों तरफ कुछ जंगल था और रात में उस जंगल में से हो कर जाना बहुत खतरनाक था। वहाँ वह सारी रात जंगली जानवरों की चीखें सुनती रहती थी जिनसे वह डरी डरी रहती।

पर सुबह तो कभी आयी ही नहीं क्योंकि जैसे ही सुबह होती तो वह नौकरानी वह हार फिर से पहन लेती और सुदेवा बाई फिर से मरे जैसी हो जाती।

खैर, हर रात जब रानी ज़िन्दा हो जाती तो वह अपनी कब्र के पास वाले तालाब पर जाती और ठंडा पानी पी कर वहाँ से वापस आ जाती पर उसके लिये खाना वहाँ कहीं नहीं था।

इसके अलावा अब उसके मुँह से मोती और जवाहरात भी नहीं गिरते थे क्योंकि इस समय उससे बात करने वाला भी कोई नहीं था। पर हर बार जब भी वह उस तालाब के पास जाती तो वह अपने रास्ते पर जवाहरात बिखेरती जाती।

एक दिन जब रावजी उसको देखने के लिये उसकी कब्र पर गया तो उसने देखा कि वहाँ तो जवाहरात बिखरे पड़े हैं। यह सोचते हुए कि यह तो एक बड़ा आश्चर्य है उसने तय किया कि वह यह देखेगा कि वे जवाहरात कहाँ से आये।

हालाँकि यह बात उसके दिमाग में सपने में भी नहीं आयी कि उसकी पत्नी ज़िन्दा भी हो सकती है।

सो वह सारे दिन वहीं बैठा रहा और देखता रहा पर यह पता नहीं लगा सका कि वे जवाहरात कहाँ से आये क्योंकि सारे दिन तो

सुदेवा बाई मरी जैसी पड़ी रहती। वह तो केवल रात को ही ज़िन्दा होती थी।

अब तक उसको वहॉ लेटे हुए दो महीने बीत चुके थे और रावजी उसको रोज केवल दिन में ही देख रहा था। कि उसने एक बेटे को जन्म दिया। जैसे ही वह बच्चा जन्मा दिन निकल आया और उसकी मॉ फिर मर गयी।

उस अकेले बच्चे ने रोना शुरू कर दिया पर वहॉ उसका रोना सुनने वाला कौन था। इत्तफाक की बात कि उस दिन रावजी भी उधर नहीं गया।

क्योंकि उसने सोचा कल तो मैंने वहॉ सारा दिन खर्च किया और फिर भी कुछ मिला नहीं इसलिये आज दिन में न जा कर मैं शाम का इन्तजार करता हूँ और तब देखता हूँ कि वे जवाहरात कहॉ से आये।

सो जब शाम हुई तब वह उधर गया तो उसने उस कब्र के अन्दर से एक बहुत हल्की सी रोने की आवाज सुनी पर वह क्या था यह वह नहीं जान सका। हो सकता है वह कोई बुरी आत्मा हो।

अभी वह यह सोच ही रहा था कि कब्र का दरवाजा खुला और सुदेवा बाई उसको तालाब की तरफ जाती हुई नजर आयी। उसकी गोद में एक बच्चा था। जैसे जैसे वह चलती जा रही थी जवाहरात उसके रास्ते पर दोनों तरफ बिखरते जा रहे थे। रावजी को लगा वह तो सपना देख रहा था।

पर जब उसने देखा कि रानी ने तालाब से पानी पिया और फिर कब्र की तरफ लौट आयी तो वह अपनी जगह से उछल पड़ा और उसके पीछे पीछे चल दिया।

सुदेवा बाई ने जब अपने पीछे किसी के आने की आवाज सुनी तो वह डर गयी और कब्र की तरफ भागी। अन्दर जा कर उसने कब्र का दरवाजा बन्द कर लिया।

रावजी बाहर से चिल्लाया — "दरवाजा खोलो मुझे अन्दर आने दो।"

रानी ने पूछा — "तुम कौन हो? क्या तुम कोई राक्षस हो या फिर कोई आत्मा हो?"

क्योंकि उसको लगा कि शायद वह कोई भयानक जीव हो और उसे और उसके बच्चे को मारना चाहता हो।

रावजी चिल्लाया — "नहीं नहीं मैं राक्षस नहीं हूँ। मैं तुम्हारा पति हूँ अगर तुम वाकई ज़िन्दा हो तो मुझे अन्दर आने दो ओ सुदेवा बाई।"

जैसे ही रावजी ने सुदेवा बाई का नाम लिया तो उसने उसकी आवाज पहचान ली और उसने उसके लिये दरवाजा खोल दिया और उसको अन्दर आने दिया।

जब रावजी ने देखा कि वह अपने बच्चे को गोद में ले कर कब्र पर बैठी हुई है तब उसको विश्वास हुआ कि वह सपना नहीं देख रहा था।

वह उसके पैरों पर गिर पड़ा और बोला — "मुझसे कहो सुदेवा बाई कि यह सपना नहीं है।"

सुदेवा बाई बोली — "नहीं यह सपना नहीं है। मैं वाकई ज़िन्दा हूँ। और यह हमारा बच्चा कल रात को ही पैदा हुआ है। पर मैं रोज दिन में मर जाती हूँ और रात को ज़िन्दा हो जाती हूँ। जब तुम यहाँ नहीं थे तो किसी ने मेरा हार चुरा लिया।"

तब पहली बार रावजी ने देखा कि सोने के मातियों का वह हार उसके गले में नहीं था। उसने उससे कहा कि वह डरे नहीं वह उसका हार ढूँढ कर ही रहेगा और उसको वापस ले कर आयेगा।

कह कर वह महल वापस चला गया। वह वहाँ सुबह सवेरे ही पहुँच गया। घर पहुँच कर उसने अपने सारे घर के लोगों को अपने सामने बुलाया।

जब सब वहाँ आ गये तो उसने देखा कि उसकी बड़ी रानी की अफ्रीकन नौकरानी के गले में वह हार पड़ा हुआ था। उसने तुरन्त ही वह हार उसके गले से निकाल लिया और उसको जेल में डलवा दिया।

वह नौकरानी डर गयी और उसने स्वीकार किया कि यह सब उसने बड़ी रानी के हुक्म पर किया था और साथ में यह भी बताया कि उसने यह सब कैसे किया।

जब रावजी को यह पता चला कि यह उसकी बड़ी रानी की चाल थी उसने उसको भी ज़िन्दगी भर के लिये जेल भेज दिया।

फिर राजा, रानी और रावजी सब कब्र पर गये और सुदेवा का हार उसके गले में पहनाया जिससे वह फिर हमेशा के लिये ज़िन्दा हो गयी। वे लोग अपनी बहू और पोते को ले कर खुशी खुशी घर लौटे।

यह खबर कि छोटी रानी किस तरह ज़िन्दा हो गयी सारे राज्य में फैल गयी और यह सुन कर सब लोग बहुत खुश हुए। राज्य में बहुत दिनों तक इसकी खुशियाँ मनती रहीं।

राजा रानी रावजी छोटी रानी जो अब बड़ी रानी बन गयी थी अपने बेटे के साथ बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

22 चन्द्रा का बदला[25]

एक बार एक साहूकार की पत्नी थी जिसके कोई बच्चा नहीं था। एक दिन वह रोती हुई अपने पति के पास गयी और बोली — "मैं कितनी बदनसीब स्त्री हूँ कि मेरे कोई बच्चा नहीं है। अगर मेरे भी कोई बच्चा मेरे साथ खेलने के लिये होता तो मुझे कितनी खुशी होती।

पति बोला — "तुम केवल इस वजह से दुखी क्यों होती हो। हालाँकि तुम्हारे कोई बच्चा नहीं है पर तुम्हारी बहिन के तो आठ नौ बच्चे हैं। तुम उनमें से किसी एक को उससे क्यों नहीं ले लेतीं।"

साहूकार की पत्नी राजी हो गयी। उसने अपनी बहिन का सबसे छोटा बेटा जो अभी छह महीने का ही था अपने बेटे की तरह ले लिया।

समय बीतता गया। एक दिन जब बच्चा स्कूल से घर लौट रहा था तो उसमें और उसके स्कूल के एक बच्चे में झगड़ा हो गया और दोनों लड़ने लगे। दूसरा बच्चा जो उम्र में बड़ा था और ज़्यादा ताकतवर भी था उसने साहूकार के बेटे के सिर में इतनी ज़ोर से मारा कि वह नीचे गिर गया और उसको चोट भी बहुत आयी।

लड़का रोता हुआ घर पहुँचा तो साहूकार की पत्नी ने उसका सिर धोया और उस पर पट्टी बाँध दी। पर उसने उस लड़के को

---

[25] Chandra's Vengeance. Tale No 22.

जिसने उसके बेटे को मारा था कोई सजा नहीं दी। उसने सोचा कि बच्चों को हर समय तो घर में बन्द कर के नहीं रखा जा सकता। और बच्चे तो लड़ते ही रहते हैं चोट भी खाते रहते हैं।

इस पर बच्चा बुड़बुड़ाता रहा “यह क्योंकि मेरी मौसी है इसी लिये इसने उस बच्चे को कोई सजा नहीं दी। अगर यह मेरी माँ होती तो यह भी मुझे मारने के बदले में उसके सिर पर अच्छी तरह से मारती। पर क्योंकि यह केवल मेरी मौसी है इसलिये यह मेरी परवाह नहीं करती।”

साहूकार की पत्नी ने यह सुन लिया और यह सुन कर बहुत दुखी हुई। उसने अपने मन में कहा “यह छोटा बच्चा जिसको मैंने पैदा होने से पाला मुझे उतना प्यार नहीं करता जितना यह अपनी माँ को करता है।”

सो वह उसको उसकी माँ के पास ले गयी और बोली — “बहिन मैं तुम्हारा बच्चा तुम्हें वापस करने आयी हूँ।”

उसकी बहिन ने पूछा — “यह क्या हुआ। तुमने तो इसे अपना बच्चा समझ कर इसे ज़िन्दगी भर के लिये अपनाया था फिर अब क्या हो गया। अब तुम इसे वापस करने क्यों आयी हो।”

साहूकार की पत्नी ने उसे वह नहीं बताया जो बच्चे के मुँह से उसने सुना था। वह बोली — “इसको मेरा और तुम्हारा दोनों का ही रहने दो। यह कुछ समय तुम्हारे पास रहेगा और मेरे पास आता जाता रहेगा। हम दोनों ही इसको देखेंगे भालेंगे।”

यह कर के वह अपने घर लौट आयी और अपने पति से वह बताया जो वह कर के आयी थी और बोली — "मेरी सारी मेहनत बेकार गयी। तुमको तो मालूम ही है कि मैंने अपनी बहिन के बेटे को कितने प्यार से रखा।

सात साल तक मैंने उसे इतने प्यार से पाला फिर भी वह मुझसे उतना प्यार नहीं करता जितना प्यार वह अपनी माँ से करता है जिसको उसने देखा भी नहीं है। इसलिये मैं तब तक चैन से नहीं बैठूँगी जब तक मैं महादेव के दर्शन कर के उनसे अपना एक बच्चा न माँग लूँ।"

पति बोला — "तुम भी क्या बेवकूफी की बात करती हो। तुम अपनी किस्मत से सन्तुष्ट क्यों नहीं रहतीं। तुम क्या सोचती हो कि तुम महादेव को कहाँ मिलोगी। क्या तुम्हें स्वर्ग का रास्ता पता है?"

पत्नी बोली — "नहीं पर मैं उन्हें जब तक ढूँढती रहूँगी जब तक वह मुझे न मिल जायें। और अगर वह मुझे कभी नहीं मिले तो फिर जब तक मेरी प्रार्थना का जवाब मुझे नहीं मिल जायेगा मैं घर नहीं लौटूँगी।"

कह कर वह घर छोड़ कर जंगल चली गयी। वह बहुत दिनों तक वहाँ भटकती रही और अपना देश भी उसने बहुत पीछे छोड़ दिया वह एक दूसरे देश की सीमा पर आ गयी – मदुरा तिनिवैली।

जहाँ एक नदी सागर में जा कर मिलती थी। उस नदी के किनारे दो स्त्रियाँ बैठी थीं एक कोपलिंगी रानी[26] और एक नाचने वाली स्त्री।

अब न तो रानी और नाचने वाली स्त्रियों ने साहूकार की पत्नी को कभी पहले देखा था और न ही साहूकार की पत्नी ने पहले कभी उनको देखा था।

साहूकार की पत्नी सुस्ताने के लिये वहीं बैठ गयी थोड़ा पानी पिया। रानी ने साहूकार की पत्नी से कहा — "तुम कौन हो और कहाँ जा रही हो?"

साहूकार की पत्नी बोली — "मैं दूर देश के एक साहूकार की पत्नी हूँ। मेरे कोई बच्चा नहीं है इसलिये मैं बहुत दुखी हूँ और इसी लिये मैं महादेव की खोज में निकली हूँ ताकि मैं उनसे अपने बच्चे के लिये वर माँग सकूँ।"

वह रानी से आगे बोली — "और आप कौन हैं और कहाँ जा रही हैं।"

रानी बोली — "मैं कोपलिंगी रानी हूँ इस पूरे देश की रानी। पर न तो कोई पैसा और न ही कोई खजाना मुझे खुशी दे सका क्योंकि मेरे भी कोई बच्चा नहीं है। सो मैं भी महादेव की खोज में निकली हूँ ताकि वह मुझे मेरा अपना बच्चा दे सकें।"

फिर कोपलिंगी रानी ने नाचने वाली से पूछा कि वह कौन थी और कहाँ जा रही थी।

---

[26] Coplinghee Rani

नाचने वाली बाली — "मैं एक नाचने वाली हूँ और मेरे भी कोई बच्चा नहीं है। मैं भी महादेव की खोज में हूँ ताकि वह मुझे मेरा अपना एक बच्चा दे दें।"

यह सुन कर साहूकार की पत्नी बोली — "क्योंकि हम सब एक ही उद्देश्य से बाहर निकले हुए हैं तो क्यों न हम साथ साथ चलें।"

कोपलिंगी और नाचने वाली दोनों इस बात पर राजी हो गयीं। सो वे तीनों साथ चलती रहीं। रोज वह दूर ही निकल जातीं। वे आराम करने के लिये कहीं नहीं रुकीं और न ही उनको कोई और आदमी देखने को मिला।

उनके पैर बहुत दर्द कर रहे थे। उनके कपड़े फट गये थे। वे केवल जंगली फल बीज और पौधों को खा कर ही ज़िन्दा थीं। वे इतनी थकी हुई और फटे हाल थीं कि तीनों भिखारिनें लगती थीं। वे रात को सोयी भी नहीं थीं। दिन ब दिन महीनों पर महीने और सालों तक वे चलती ही रहीं।

चलते चलते आखिर वे जंगल में एक ऐसी जगह आ गयीं जहाँ आग की एक नदी बह रही थी। यह आग की नदी सबसे बड़ी थी जो उन्होंने अपनी अपनी ज़िन्दगियों में अभी तक देखी थीं। यह पानी की बजाय लपटों की नदी थी।

उस नदी के न इस किनारे पर कोई था न उस किनारे पर। अगर उस नदी को पार करना हो तो बस लपटों के बीच से चल कर ही पार जाया जा सकता था।

जब कोपलिंगी रानी और नाचने वाली ने यह देखा तो कहा — "बस यहाँ आ कर तो हमारी सारी मेहनत खत्म हो गयी। सारी आशाऐं खत्म हो गयीं।"

लेकिन साहूकार की पत्नी बोली — "इतनी दूर आने के बाद क्या हम लोग केवल इसी की वजह से रुक जायेंगे। नहीं। हमें इसको पार करने का कोई न कोई उपाय ढूँढना ही होगा।"

ऐसा कह कर उसने आग में अपना पैर रखा। बाकी दोनों स्त्रियाँ आग में पैर रखने से डर रही थीं। जब साहूकार की पत्नी ने वह आग की नदी आधी पार कर ली तो वह घूमी और किनारे पर खड़ी दोनों स्त्रियों को आने का इशारा करते हुए बोली —

"आ जाओ। आ जाओ। डरो नहीं। इस आग ने मुझे नहीं जलाया तो यह तुम लोगों को भी नहीं जलायेगी। मैं जा कर महादेव को ढूँढती हूँ। मुझे लगता है कि वह इस नदी के दूसरी ओर हैं।"

परन्तु उन्होंने आने से मना कर दिया। उन्होंने कहा कि हम नहीं आ सकते। जब तक तुम वापस आती हो हम तुम्हारा यहाँ इन्तजार करते हैं। अगर तुम्हें महादेव मिल जायें तो उनसे प्रार्थना करना कि वह हमें भी बच्चे दे दें।

सो साहूकार की पत्नी अपने रास्ते चली गयी। आग की लपटें उसके पैरों के चारों तरफ लिपट गयीं जैसे वह पानी हों।

जब वह नदी के दूसरी तरफ आ गयी तो वहाँ तो चारों ओर जंगल ही जंगल पड़ा हुआ था। चारों तरफ से हाथी साँप बिच्छू शेर

भालू आदि के चिंघाड़ने की आवाजें आ रही थीं। पर वह उनसे डर कर पीछे नहीं हटी। उसने सोचा "मैं केवल एक बार ही मर सकती हूँ। बजाय महादेव के पाने के लौटने से तो यही ज़्यादा अच्छा होगा कि ये मुझे मार दें।"

सब जंगली जानवरों ने उसे अपने बीच में से जाने दिया और उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचाया।

अब ऐसा हुआ कि महादेव ने स्वर्ग से नीचे देखा तो उसको देखा तो उनको उस पर बहुत दया आयी क्योंकि वह **12** साल से उनकी खोज में घूम रही थी।

सो उन्होंने एक सुन्दर कुँए के पास एक आम का पेड़ उगा दिया ताकि वह वहाँ कुछ सुस्ता सके और फल खा सके। वे खुद एक फकीर का वेश रख कर वहाँ प्रगट हो गये और पेड़ के पास खड़े हो गये।

पर साहूकार की पत्नी वहाँ सुस्ताने पानी पीने या फल खाने के लिये नहीं रुकी। उसने फकीर को भी नहीं देखा। वह तो बस महादेव की खोज में आगे और आगे ही चलती रही।

उसको वहाँ से दूर जाते देख कर महादेव उसके पीछे चिल्लाये — "बाई ओ बाई। कहाँ जा रही हो। यहाँ आओ।"

उसने फकीर की तरफ बिना देखे ही कहा — "इससे तुम्हें क्या करना है कि मैं कहाँ जा रही हूँ। तुम अपनी माला फेरो और मेरी चिन्ता छोड़ो।"

फकीर फिर चिल्लाया — "यहाँ आओ। यहाँ आओ।"

पर वह सुन ही नहीं रही थी सो महादेव ने अपना फकीर का वेश छोड़ा और अपनी पूरी शान के साथ अपने असली रूप में उसके सामने जा कर खड़े हो गये।

उनको देखते ही साहूकार की पत्नी उनके पैरों पर गिर पड़ी। उन्होंने पूछा — "बाई तुम कहाँ जा रही हो।"

साहूकार की पत्नी बोली — "मैं महादेव को ढूँढने जाती हूँ। मैं उनसे प्रार्थना करने जा रही हूँ कि वह मुझे एक बच्चा दे दें। पर 12 साल हो गये मुझे उन्हें ढूँढते हुए वह मुझे अभी तक मिले ही नहीं।"

महादेव ने कहा — "अब तुम्हें और कहीं जाने की जरूरत नहीं है क्योंकि मैं ही महादेव हूँ।" उन्होंने एक आम पेड़ से तोड़ा जो कुँए के पास लगा हुआ था और उसे उसे देते हुए कहा — "लो इसे खा लो। और जब तुम घर पहुँचोगी तो तुमको एक बच्चा मिल जायेगा।"

साहूकार की पत्नी बोली — "तीन स्त्रियाँ आपको ढूँढ रही थीं। पर दो स्त्रियाँ आग की नदी के पास ही रुक गयीं क्योंकि वे डर गयी थीं। क्या उनको बच्चे नहीं मिल सकते।"

महादेव बोले — "अगर तुम चाहो तो इस आम में से एक एक टुकड़ा उनको भी दे सकती हो तो उन दोनों के भी बच्चे हो जायेंगे।"

ऐसा कह कर वह उसके सामने से गायब हो गये। और साहूकार की पत्नी आम ले कर वहाँ से लौट पड़ी। खुशी खुशी उसने जंगल और आग की नदी पार की और वहाँ आ गयी जहाँ रानी और नाचने वाली उसका इन्तजार कर रही थीं।

जैसे ही उन्होंने उसको देखा तो पूछा — "साहूकार की पत्नी बताओ तो क्या खबर है।"

वह बोली — "मुझे महादेव मिल गये। उन्होंने मुझे यह आम दिया है। अगर हम तीनों इसे खायेंगे तो हम तीनों को बच्चा मिलेगा।"

उसने आम निकाला उसका रस निचोड़ा तो वह उसने रानी को दिया उसका छिलका उसने नाचने वाली को दिया और उसका गूदा और गुठली उसने खुद ने खा ली।

तीनों स्त्रियाँ अपने अपने घर लौटीं। कोपलिंगी रानी और नाचने वाली मदुरा तिनिवैली लौटीं। साहूकार की पत्नी को तो बहुत दूर जाना था जहाँ उसका पति रहता था जहाँ से उसने अपनी यात्रा शुरू की थी।

पर उनके लौटने पर उनकी सारी दोस्त बहुत हँसी। साहूकार ने अपनी पत्नी से कहा — "मुझे तो तुम्हारी इस **12** साल की पागलपन की यात्रा में कुछ भला दिखायी नहीं देता। तुम तो अभी भी एक भिखारिन की तरह ही वापस आयी हो। और सारी दुनियाँ तुम पर हँस रही है।"

पत्नी बोली कि "मैं किसी की परवाह नहीं करती। मैंने महादेव को देखा है मैंने उनका दिया हुआ आम खाया है मेरे बच्चा जरूर होगा।"

समय आने पर साहूकार और उसकी पत्नी को एक बेटा हुआ और उसी दिन रानी और नाचने वाली को एक एक बेटी पैदा हुई। वे सब बहुत खुश थीं उन सबने एक दूसरे को यह खुशी की खबर भेजी। सबने महादेव को धन्यवाद के तौर पर कि उन्होंने उनको बच्चे दिये अपनी अपनी हैसियत के अनुसार गरीबों को खाना खिलाया।

साहूकार की पत्नी ने आम की गुठली के नाम पर अपने बेटे का नाम "कोइला" रखा। नाचने वाली ने अपनी बेटी का नाम रखा "मौली"[27] और रानी ने अपनी बेटी का नाम रखा "चन्द्रा बाई जी" क्योंकि वह सफेद चन्द्रमा की तरह सुन्दर थी।

चन्द्रा रानी बहुत सुन्दर थी – सारे देश में वह सबसे सुन्दर थी। वह इतनी आकर्षक और नाज़ुक थी कि जो कोई उसको देखता वही उसको प्यार करने लगता।

इसके अलावा वह अपने दोनों पैरों में पायल[28] पहने पैदा हुई थी – सबसे ज़्यादा कीमती पायल। वे सोने की बनी

[27] Mouli – name of the daughter of Dancing woman
[28] Translated for the word "Anklet". See its picture above.

थीं और कीमती रत्नों से जड़ी हुई थीं। वे इतनी चमकती हुई थीं जैसे सूरज। किसी ने भी वैसी पायल पहले कभी नहीं देखी थीं।

जैसे जैसे बच्ची रोज ब रोज बढ़ती रही वैसे वैसे उसकी पायलें और उनके घूँघरू भी बड़े होते रहे। जब कोई उसके पास आता था तो वे बज उठते थे।

चन्द्रा के माता पिता अपनी बेटी को देख कर बहुत खुश थे। उनको उसके ऊपर बहुत गर्व था। उन्होंने राज्य के बहुत सारे विद्वानों को उसका भविष्य बताने के लिये बुलाया।

पर उनमें से जो सबसे ज़्यादा होशियार ब्राह्मण था जैसे ही उसने बच्ची को देखा उसने उनको बताया कि उस बच्ची को तुरन्त ही राज्य से बाहर भेज देना चाहिये। अगर वह इस राज्य में रहेगी तो वह आग लगा कर आपका सारा राज्य जला कर नष्ट कर देगी।

राजा तो यह सुन कर बहुत गुस्सा हुआ। उसने ब्राह्मण से कहा — "तुम्हारे इस झूठ के लिये मैं तुम्हारा सिर कटवा दूँगा अगर तुम सच नहीं बोले तो।"

ब्राह्मण बोला — "आप मेरा सिर खुशी से कटवा सकते हैं पर जो मैं कह रहा हूँ वह बिल्कुल सच है। झूठ बिल्कुल नहीं है। अगर आप मेरा विश्वास नहीं करते तो आप थोड़ी सी ऊन मँगवाइये और उसे बच्ची के शरीर पर रखिये तो आप जान जायेंगे कि मैं सच बोल रहा हूँ या नहीं।"

तुरन्त ही ऊन आ गयी। उसे बच्ची के शरीर पर रखा गया कि तुरन्त ही वह जल कर सारी की सारी खाक हो गयी ज़रा सी भी नहीं बची। यहाँ तक कि उसने नौकरों के हाथ भी जला दिये।

यह दिखा कर ब्राह्मण बोला — "जैसे इस आग ने इस ऊन को जला दिया उसी तरह एक दिन यह लड़की अगर यह यहाँ रह गयी तो सारा देश जला देगी।"

यह सुन कर तो वहाँ बैठे सारे लोग आश्चर्यचकित रह गये। राजा ने रानी से कहा — "अगर ऐसा है तो इस बच्ची को यहाँ से तुरन्त ही बाहर भेज देना चाहिये।"

यह सुन कर रानी बहुत दुखी हुई। उससे जो कुछ हो सका अपनी बच्ची को बचाने के लिये उसने वह सब किया पर राजा उसकी कुछ नहीं सुन रहा था।

उसने हुक्म दिया कि बच्ची को एक बक्से में बन्द कर के उस देश की सीमा पर वहाँ ले जाया जाये जहाँ नदी सागर में गिरती है। वहाँ उसको नदी में बहा दिया जाये ताकि नदी उसको कहीं दूर बहा ले जाये।

तब रानी ने एक बहुत सुन्दर सोने का बक्सा बनवाया उसमें अपनी प्यारी सी बच्ची को रखा और रोते रोते उसको नौकरों को दे दिया। नौकर लोग उसे ले गये और उसे नदी में फेंक दिया। बक्सा तैरता रहा तैरता रहा और उस देश पहुँच गया जहाँ साहूकार और उसकी पत्नी रहते थे।

अब कुछ ऐसा हुआ कि जब बक्सा तैरता हुआ वहाँ पहुँचा उस समय साहूकार वहाँ पानी से अपना चेहरा धो रहा था। उसने उसे देख लिया।

उसने देखा कि पास में ही एक मछियारा मछली पकड़ने के लिये अपना जाल फेंकने वाला था सो वह चिल्लाया — "दौड़ो मछियारे दौड़ो। मछली पकड़ने के लिये मत रुको बल्कि तुम अपना जाल उस चमकते हुए बक्से को पकड़ने के लिये फेंको।"

मछियारा बोला — "मैं नहीं फेंकूँगा जब तक तुम मुझसे यह वायदा नहीं करते कि उसे पकड़ने के बाद वह बक्सा मेरा होगा।"

साहूकार बोला — "ठीक है। पर तुम वह बक्सा तो लाओ। बक्सा तुम्हारा और उसके अन्दर जो कुछ भी है वह मेरा।"

सो मछियारे ने अपना जाल बक्से की तरफ फेंका और बक्से को किनारे पर ले आया। जब उन्होंने बक्सा खोला तो जो कुछ उन्होंने देखा उससे यह कहना बहुत मुश्किल है कि मछियारे और साहूकार दोनों में से कौन ज़्यादा आश्चर्यचकित था – मछियारा या साहूकार।

क्योंकि बक्सा तो असली सोने का रत्न जड़ा हुआ था और उसमें एक बहुत सुन्दर बच्ची लेटी हुई जैसी उन्होंने कभी नहीं देखी थी। वह एक छोटी सी राजकुमारी लग रही थी क्योंकि उसकी पोशाक भी सोने के तारों से बुने हुए कपड़े की थी। उसके दोनों पैरों में पायल थीं जो सूरज जैसी चमक रही थीं।

जब साहूकार ने बक्सा खोला तो बच्ची मुस्कुरायी और अपने दोनों छोटे छोटे हाथ उसकी तरफ बढ़ा दिये। यह देख कर साहूकार बहुत खुश हो गया। उसने मछियारे से कहा — "बक्सा तुम्हारा है बच्ची मेरी है।"

मछियारा इस बात से सन्तुष्ट था क्योंकि उसके अपने घर में अपने कई बच्चे थे। उसे और बच्चों की जरूरत नहीं थी। बल्कि वह सोने का बक्सा ले कर बहुत खुश था। जबकि साहूकार को जिसके अपना केवल एक छोटा सा बेटा था और बहुत अमीर था सोने के बक्से की कोई चिन्ता नहीं थी। वह बच्ची को ले कर बहुत खुश था।

वह बच्ची को घर ले गया और उसे अपनी पत्नी को दे दिया और कहा — "प्रिये देखो हमारी कितनी सुन्दर बहू आ गयी। लो यह तुम्हारे बेटे की बहू है।"

साहूकार की पत्नी ने जब इतनी सुन्दर बच्ची को मीठी सी मुस्कुराहट के साथ देखा तो वह भी बहुत खुश हो गयी। उसने उसे बहुत प्यार किया और उसकी बहुत अच्छे से देखभाल करनी शुरू कर दी जैसे वह उसकी अपनी बेटी हो।

जब चन्द्रा रानी एक साल की हुई तो साहूकार ने उसकी शादी अपने बेटे कोइला से कर दी।

समय गुजरता गया। साहूकार और उसकी पत्नी बूढ़े हो गये और अपने पूर्वजों के पास चले गये। कोइला और चन्द्रा सबसे

अच्छी जोड़ी के रूप में रहते रहे। कोइला लम्बा और सीधा था। उसका चेहरा शेर के बच्चे जैसा था। चन्द्रा भी एक ताड़ के पेड़ की तरह शानदार थी। उसका चेहरा चाँदनी जैसा सुन्दर और शान्त था।

इस बीच नाचने वाली की बेटी मौली भी जो आम के फल से पैदा होने वाली तीसरी बच्ची थी मदुरा तिनिवैली में बड़ी हो गयी। वह भी बहुत सुन्दर थी अपने देश की लड़कियों में सबसे सुन्दर। वह दूसरी नाचने वाली लड़कियों से कहीं ज़्यादा अच्छा नाचती गाती थी।

उसकी आवाज बटेर[29] की आवाज जैसी साफ थी और इतनी तेज़ थी कि कोई उसे 12 दिन की यात्रा की दूरी से भी सुन सकता था। नाचने वाले जगह जगह घूमते रहते हैं। एक दिन एक शहर में रुक गये तो दूसरे दिन किसी और शहर में।

और फिर ऐसा हुआ कि यह टोली जिस देश में कोइला और चन्द्रा रहते थे उस देश की सीमा तक पहुँच गयी।

एक सुबह कोइला ने बहुत दूर से गाने की आवाज सुनी तो वह आवाज उसको इतनी अच्छी लगी कि उसने यह निश्चय कर लिया कि वह यह पता लगा कर रहेगा कि यह कौन गा रहा था।

[29] Translated for the word "Quail". See its picture above.

बारह दिनों तक वह जंगल में भटकता रहा। हर दिन यह आवाज तेज़ और और तेज़ होती जाती थी फिर भी वह उस जगह तक नहीं पहुँच पा रहा था जहाँ से यह आवाज आ रही थी।

आखिर 12वें दिन वह नाचने वालों के कैम्प के पास आ पहुँचा। यह कैम्प एक बड़े शहर के पास था। वहाँ पहुँच कर उसने गाने वाली यानी मौली को देखा। वह अपने चारों तरफ इकट्ठी हुई भीड़ में नाच गा रही थी।

उसके हाथों में फूलों की एक माला थी जिसे वह नाचते समय अपने सिर पर घुमाती थी।

कोइला उसकी आवाज से इतना आकर्षित हो गया कि वह तो दूर एक जंगल में जहाँ खड़ा था बस जैसे जादू के ज़ोर से बँधा वहीं खड़ा रह गया। वह तो उसके पास भी न जा सका।

जब मौली का नाच खत्म हो गया तो मौली के चारों तरफ जो लोग खड़े थे बोले — "तुम तो इतनी सुन्दर हो तुमको हमारा यह शहर छोड़ कर कहीं और क्यों जाना चाहिये। तुम हममें से एक से शादी कर लो और यहीं रह जाओ।"

अब शादी का प्रस्ताव रखने वाले इतने ज़्यादा थे कि वह यही नहीं सोच सकी कि वह किससे शादी करे। कुछ सोच कर वह बोली — "ठीक है जिसके गले में भी मेरी यह माला पड़ जायेगी मैं उसी से शादी कर लूँगी।" कह कर उसने फूलों की माला को दो तीन बार

अपने सिर के ऊपर घुमाया और फिर उसे अपने पूरे ज़ोर के साथ दूर फेंक दिया।

अब फूलों की यह माला इतनी ज़ोर से फेंकी गयी थी कि वह सारी भीड़ पार कर के कोइला के गर्दन में जा पड़ी जो जंगल की सीमा पर खड़ा था।

सारे लोग यह देखने के लिये भागे कि देखें कौन वह खुशकिस्मत है जो मौली का पति होगा। जब उन्होंने कोइला को देखा तो वे तो आश्चर्यचकित रह गये क्योंकि वह तो इन्सानों के किसी भी बच्चे से बहुत सुन्दर लग रहा था। उन्हें ऐसा लगा जैसे कोई स्वर्ग से उतर कर वहाँ आ कर खड़ा हो गया हो।

नाचने वाले उसको अपने कैम्प में घसीट कर ले गये। वे चिल्ला रहे थे — "जब तुमने यह माला जीती है तो अब तुम ही मौली के पति होगे।"

कोइला बोला — "मैं तो यहाँ केवल देखने आया था। मैं यहाँ रुक नहीं सकता। यह मेरा देश भी नहीं है। मेरे घर में मेरी पत्नी मेरा इन्तजार कर रही है।"

वे बोले — "हमें इस बात से कोई मतलब नहीं है। अब यह तो तुम्हारी किस्मत है कि तुम मौली से शादी करो। मौली जो बहुत सुन्दर है। मौली जिसका तुमने गाना सुना है। मौली जो इतना अच्छा नाचती है। तुमको मौली से शादी करनी ही पड़ेगी क्योंकि उसकी माला तुम्हारे गले में पड़ी है।" और फिर ऐसा ही हुआ।

हालॉकि कोइला अपनी पत्नी के साथ बहुत ही अच्छा व्यवहार करता था पर फिर भी वह उसको उतना प्यार नहीं करता था जितना कि वह उससे करती थी। शायद चन्द्रा की अच्छाई और सुन्दरता उसको कम प्रभावित करती थी बजाय दूसरों के।

सो बजाय यह सोचने के कि अगर वह वापस घर नहीं लौटा तो वह कितनी दुखी होगी इसलिये उसको घर वापस चले जाना चाहिये वह वहीं रुक गया थोड़ा हिचकिचाया और सोचने लगा कि उसे क्या करना चाहिये।

नाचने वालों ने उसको कुछ पीने के लिये दिया जो बहुत ही ताकतवर जादू का पेय पदार्थ था। उसका असर यह हुआ कि वह अपने घर को ही भूल गया और उसने मौली से शादी कर ली। वह वहॉ उनके साथ कई महीनों तक रहा।

एक दिन मौली की मॉ ने जो कोपलिंगी रानी के साथ महादेव की खोज में गयी थी और साहूकार की पत्नी से मिली थी कोइला से कहा — "दामाद जी। आप बहुत ही आलसी हैं। आप यहॉ कितने समय से यहॉ रह रहे हैं और आप अपने रहने खाने के लिये कुछ नहीं करते।

यह तो हम लोग हैं जो आपको खाना खिला रहे हैं और कपड़ा दे रहे हैं। आप जायें और कुछ कमा कर लायें नहीं तो मैं आपको घर से बाहर निकाल दूॅगी और फिर आप अपनी पत्नी मौली से फिर कभी नहीं मिल सकेंगे।"

कोइला के पास मौली की माँ को देने के लिये कोई पैसा नहीं था तब पहली बार उसको अपने देश और चन्द्रा का ख्याल आया।

उसने कहा — “मेरी पहली पत्नी मेरे देश में रहती है। उसके पाँवों में बहुत ही कीमती कंगन पड़े हैं। आप मुझे घर जाने की इजाज़त दें तो मैं उनमें से एक कंगन बेच कर उससे आपको पैसा दे दूँगा। वह जितना मुझे पैसा आपको देना चाहिये उससे कहीं अधिक होगा।”

नाचने वालों ने सोचा विचारा और कोइला को घर वापस जाने की इजाज़त दे दी। कोइला घर पहुँचा और चन्द्रा को बताया कि उसे किसलिये पैसा चाहिये और उससे उसका एक कंगन माँगा।

चन्द्रा ने उसे देने से मना कर दिया और कहा — “तुम मुझे यहाँ अकेला छोड़ कर यहाँ से बहुत समय से गायब हो। इसके अलावा तुमने नाचने वालों में से दूसरी लड़की से शादी भी कर ली है। अब तो तुम भी उन्हीं में से एक हो गये हो।

और अब तुम्हें मेरा एक कंगन चाहिये। और वह भी वह कंगन जिसे मैं बचपन से पहने हूँ। जो मेरे बड़े होने के साथ साथ बड़ा हुआ हैं। जिन्हें मैंने कभी उतारा नहीं है।

और तुम उसे अपनी दूसरी पत्नी को देना चाहते हो। यह नहीं हो सकता। तुम्हारी इच्छा है तो तुम अपने नये लोगों के पास चले जाओ पर मैं अपना कंगन तुम्हें नहीं दूँगी।”

वह बोला — “उन्होंने मुझे एक जादू वाला कुछ पिला दिया जिससे मैं कुछ समय के लिये तुम्हें भूल गया था। पर अब मैं उनसे थक गया हूँ। मुझे जाने दो और उन्होंने जो मेरे खाने पीने और कपड़ों पर खर्चा किया है उसे वापस कर आने दो। उसके बाद मैं अपने घर आ जाऊँगा और तुम्हारे साथ रहूँगा। तुम ही मेरी पहली पत्नी हो।”

चन्द्रा बोली — “ठीक है। तुम मेरा यह कंगन ले लो और इसे बेच कर उन्हें उनका पैसा लौटा दो पर जब तुम वहाँ जाओगे तो मुझे साथ ले जाना। मैं तुम्हें यहाँ से मुझे अकेले छोड़ कर नहीं जाने दूँगी।”

कोइला मान गया और वे दोनों मदुरा तिनिवैली देश के लिये एक साथ चल पड़े।

जब वे जा रहे थे तो भगवान कृष्ण अपनी तीन पत्नियों के साथ ताश खेल रहे थे। उन्होंने उनको देखा तो वह हँस पड़े।

उनकी पत्नियाँ बोलीं — “आप क्यों हँस रहे हैं। आप तो बहुत दिनों से हँसे नहीं हैं फिर आज ऐसी क्या बात हो गयी जिससे आज आप हँस पड़े।”

भगवान कृष्ण बोले — “मैं कोइला और उसकी पत्नी चन्द्रा रानी को देख कर हँस रहा हूँ। वे मदुरा तिनिवैली देश की तरफ जा रहे हैं। वह अपनी पत्नी का कंगन बेचने जा रहा है और वह मारा

जायेगा और फिर गुस्से में भर कर चन्द्रा रानी सारा देश जला देगी। ओ बेवकूफों।"

देवियों ने जवाब दिया — "यह तो बड़ी भयानक बात है। आप हमें वहाँ वेश बदल कर जाने दें। हम उसको समझाने की कोशिश करेंगे कि वह ऐसा न करे। वह उस देश में न जाये।"

भगवान कृष्ण बोले — "कोई फायदा नहीं। अगर तुम लोग ऐसा करोगी तो वह तुम पर हँसेगा और तुम लोगों से भी गुस्सा हो जायेगा।"

पर देवियों ने यह पक्का इरादा कर लिया था कि वे उसे रोकने की पूरी कोशिश करेंगी। सो उन्होंने बूढ़े ज्योतिषियों का रूप रखा और अपने हाथों मे एक एक लैम्प और एक एक किताब ले कर उधर की तरफ चल दीं जिधर से कोइला अपनी पत्नी के साथ आ रहा था।

जब वह पास आ गया तब उन्होंने उससे कहा — "तुम मदुरा तिनिवैली देश मत जाओ। क्योंकि अगर तुम गये तो तुम मारे जाओगे और तुम्हारी पत्नी गुस्से में आ कर पूरे देश को आग से जला देगी।"

पहले तो कोइला ने उनकी बात ही नहीं सुनी फिर उसने उनको भगा दिया। आखीर में जब उन्होंने उसको चेतावनी देना नहीं छोड़ा तो वह उनसे गुस्सा हो गया और उन्हें यह कहते हुए रास्ते से भगा

दिया कि "तुम क्या समझती हो कि मैं तुम जैसी बुढ़ियों के कहने में आ जाऊँगा।"

भगवान कृष्ण की तीनों पत्नियाँ हार झख मार कर वापस आ गयीं। वे भी उसको इस बुरे व्यवहार से बहुत गुस्सा थीं। भगवान कृष्ण बोले — "मैंने तुमसे नहीं कहा था कि वहाँ मत जाओ उसको समझाना बेकार है।"

जब कोइला और चन्द्रा राजा की राजधानी के पास पहुँचे तो वे एक बूढ़े दूध बेचने वाली के पास आये जिसने उनके साथ बहुत अच्छा बर्ताव किया। उसने उनको खाना खिलाया और रात को सोने के लिये जगह दी।

अगली सुबह कोइला ने अपनी पत्नी से कहा — "अच्छा है कि तुम यहाँ ठहरो। यह बुढ़िया तुम्हारी ठीक से देखभाल करेगी। तब तक मैं तुम्हारी यह पायल बेच कर आता हूँ।"

चन्द्रा ने कहा "ठीक है।" और वह वहीं रह गयी और कोइला कंगन बेचने के लिये बाजार चल दिया। उसको यह पता नहीं था कि वहाँ की कोपलिंगी रानी और राजा चन्द्रा रानी के माता पिता हैं। न ही यह बात चन्द्रा और चन्द्रा के माता पिता जानते थे। न ही तीनों बच्चे जानते थे कि वे कैसे एक आम से पैदा हुए थे।

अब हुआ क्या था कि कोइला और चन्द्रा के मदुरा तिनिवैली पहुँचने से कुछ देर पहले ही कोपलिंगी रानी ने जौहरी के पास सफाई के लिये दो कंगन भेजे थे।

इत्तफाक से जौहरी के घर के पास लगे एक पेड़ के ऊपर एक गरुड़ माता पिता ने अपना घोंसला बनाया था। उसमें उनके छोटे बच्चे खूब शोर मचा रहे थे। वे सारे दिन चिल्लाते रहते थे जिससे जौहरी के परिवार को बहुत परेशानी होती थी।

सो एक दिन जब माता पिता चिड़िया अपने घोंसले में नहीं थे तो जौहरी का बेटा पेड़ पर चढ़ गया और उसने उनका घोंसला तोड़ दिया और उनके बच्चों को मार दिया।

जब माता पिता चिड़िया अपने घोंसले में वापस लौटे तो उन्होंने देखा कि उनका घोंसला टूटा पड़ है और बच्चों को भी किसी ने मार दिया है तो वे बहुत दुखी हुए। उन्होंने कहा — "इन बेरहम लोगों ने हमारे बच्चों को मारा है हमको इन्हें सजा देनी चाहिये।"

उन्होंने जौहरी के घर में झॉक कर देखा तो देखा कि जौहरी रानी के भेजे हुए दो कंगनों साफ कर रहा है सो वे उसका एक कंगल ले कर उड़ गये।

जौहरी की समझ में नहीं आया कि अब वह क्या करे। उसने अपनी पत्नी से कहा — "वैसा कंगन तो मैं अपना सब कुछ बेच कर भी नहीं खरीद सकता। और उस जैसा कंगन बनाने में तो मुझे कई साल लग जायेंगे।

मेरी तो यह भी कहने की भी हिम्मत नहीं हो रही कि वह मुझसे खो गया है। इससे उनको ऐसा लगेगा कि जैसे मैंने उसे चुराया है और वे मुझे मरवा देंगे। मैं बस यह कर सकता हूँ कि उनके दूसरे

कंगन को वापस करने में कुछ देर कर दूँ और उसके जैसा दूसरा कंगन ढूँढने की कोशिश करूँ।"

सो अगले दिन रानी ने जब अपने कंगनों के बारे में पुछवाया कि उसके कंगन तैयार हैं क्या तो उसने जवाब दिया कि वे अभी तैयार नहीं हैं वे कल तैयार हो जायेंगे।

ऐसा वह अगले दिन फिर उसके अगले दिन फिर उसके अगले दिन कहता रहा। आखिर रानी का दूत इस लगातार देर से बहुत गुस्सा हुआ।

जौहरी ने भी देखा कि वह अब कोई बहाना नहीं बना पा रहा है तो उसने एक कंगन ही बहुत अच्छी तरह से साफ कर के महल भेज दिया। और साथ में यह कहलवा दिया कि दूसरा भी जल्दी ही तैयार हो जायेगा।

पर इस बीच वह रानी के दूसरे कंगन की खोज में बराबर लगा रहा क्योंकि रानी का कंगन इतना कीमती था कि वह उसकी जगह कोई और कंगन लेने को तैयार ही नहीं होती। और वैसा कंगन उसको मिला नहीं।

जब कोइला शहर पहुँचा तो बाजार के एक कोने पर उसने एक चादर बिछायी और चन्द्रा का कंगन बेचने के लिये उस पर रख दिया और खुद वह खरीदारों का इन्तजार करता उसके पास बैठ गया।

अब कोइला तो बहुत सुन्दर था। हालाँकि वह सादे से कपड़े पहने हुए था फिर भी वह एक राजकुमार जैसा लगता था। और वह

कंगन जो वह बेचने के लिये बैठा हुआ था वह तो सुबह के सूरज में सात सूरजों की तरह चमक रहा था।

इतना सुन्दर आदमी और इतना सुन्दर कंगन – लोगों ने पहले कभी नहीं देखे थे। बहुत सारे आने जाने वाले लोग जिनके सिरों पर बर्तन रखे हुए उनको देखने की वजह से अपने बर्तन गिरा कर तोड़ देते थे और फिर उन्हें देखते रहते थे।

वे उनको देख कर इतने आश्चर्यचकित थे कि कई आदमी और स्त्रियॉ जो अपनी अपनी खिड़कियों से देख रहे थे कभी कभी इतना अधिक आगे झुक जाते थे कि वे वहॉ से गिर पड़ते थे। इतने ज़्यादा चकरा जाते थे वे।

पर कोई उस कंगन को खरीदने वाला दिखायी नहीं देता था क्योंकि उनका कहना था कि वे इतने कीमती जवाहरात नहीं खरीद सकते थे। यह कंगन तो रानी के ही पहनने के लायक है।

आखिर जब दिन ढल आया तो वहॉ कौन आया? वहॉ आया वह जौहरी जिसे रानी का कंगन साफ करने का काम सौंपा गया था और जो वैसे ही कंगन की खोज में था जैसा कि चिड़िया उठा कर ले गयी थी।

जैसे ही उसने चन्द्रा क कंगन देखा जो कोइला बेच रहा था तो उसने सोचा कि यही तो चीज़ थी जो वह चाह रहा था अगर मैं इसको ले सकूॅ तो।

उसने अपनी पत्नी से कहा कि वह उस कंगन बेचने वाले के पास जाये और उससे बहुत ही नर्मी से बात करे। वह उससे कहे कि अब सारा दिन बीत गया है सो वह उसके घर आ कर रात को खाना पीना खा सकता है और ठहर सकता है।

क्योंकि अगर हम किसी तरह उसका विश्वास जीत सकें तो मैं उससे यह कंगन लेने में सफल हो जाऊँगा। मैं कहूँगा कि इसने मुझसे इसे चुराया है। और क्योंकि यह यहाँ अजनबी है तो हर कोई मेरा विश्वास करेगा उसका नहीं।

यह कंगन ही ठीक है जो मुझे कोपलिंगी रानी को देना है। यह भी वैसा ही है बस ज़रा ज़्यादा सुन्दर है।

जौहरी की पत्नी ने वैसा ही किया जैसा उसके पति ने उससे करने के लिये कहा था। उसके बाद जौहरी ख़ुद भी उसके पास गया और उससे कहा — "तुम कंगन बेचने वाले हो और मैं भी कंगन बेचने वाला हूँ सो मैं तुम्हें अपने भाई जैसा समझता हूँ। क्योंकि तुम इस शहर में अजनबी हो इसलिये जैसा कि मेरी पत्नी ने तुमसे कहा तुम हमारे साथ घर चलो। तुम वहीं खाना खाना और हमारे घर सोना।"

इस तरह इन चालाक लोगों ने कोइला को अपने घर आने पर मजबूर किया और दिखाया कि वे उस पर बहुत मेहरबान थे। उन्होंने उसको रात का खाना खिलाया और सोने के लिये एक बिस्तर दिया।

पर अगली सुबह जौहरी ने बड़े ज़ोर से चिल्लाना शुरू किया और पुलिस को बुला लिया। उसने पुलिस से कोइला को तुरन्त ही राजा के सामने ले जाने की प्रार्थना की क्योंकि वह कोपलिंगी रानी का वह कंगन उससे चुरा कर बाजार में बेचने की कोशिश कर रहा था जिसे उन्होंने उसे साफ करने के लिये दिया था।

कोइला ने वहाँ अपनी बहुत सफाई दी कि वह कंगन उसकी पत्नी का था वह तो वहाँ अजनबी था पर कोई उसका विश्वास ही नहीं कर रहा था। पुलिस उसको खदेड़ कर महल ले गयी।

जौहरी ने राजा से कहा कि यह आदमी रानी जी का कंगन चुराने की कोशिश कर रहा था जो उन्होंने उसे साफ करने के लिये दिया था। अगर उसने चुरा लिया होता तो आप सब मेरे लिये कहते कि उसे मैंने चुराया है और मुझे मार दिया होता। इसलिये मैं चाहता हूँ कि इसको मौत की सजा दी जाये।

तब राजा ने रानी को उसका कंगन दिखाने के लिये बुलाया। पर जैसे ही रानी ने उसे देखा तो वह तुरन्त ही पहचान गयी कि वह कंगन तो उसकी अपनी बेटी चन्द्रा का है। वह उसको देखते ही रो पड़ी।

वह बोली — "यह कंगन मेरा नहीं है। हे भगवान। यह कंगन तो इस धरती पर बनाया ही नहीं गया। देखो यह कंगन तो मेरे इस कंगन से बिल्कुल अलग है। जब इसके पास कोई जाता है तो यह बजता है। फिर इसकी सारी छोटी छोटी घंटियाँ बज उठती हैं।

क्या आप इसे भूल गये हैं। यह तो मेरी प्यारी बेटी का कंगन है। मेरी खोयी हुई बच्ची का। यह आया कहाँ से। और इस देश में और इस बाजार में इन नीच लोगों के हाथों में कैसे लगा।

इस जौहरी ने मेरा कंगन रख लिया होगा और उसकी जगह यह कंगन ला कर दे दिया है। कोई सुनार यह कंगन नहीं बना सकता। यह तो चन्द्रा का कंगन है।"

फिर उसने राजा से विनती की कि वह इस मामले की आगे जाँच करे।

पर उन सब लोगों ने सोचा कि रानी तो पागल हो गयी है। जौहरी बोला — "लगता है कि यह तो रानी की केवल कल्पना है पर यह वही कंगन है जिसे उन्होंने मुझे साफ करने के लिये दिया था।"

दूसरों ने भी जिसने भी उसे देखा कहा कि वह वैसा ही कंगन था जैसा कि रानी ने उसे साफ करने के लिये दिया था। यह उस कंगन की जोड़ी का कंगन है।

यह निश्चय करने के बाद जब पुलिस ने कोइला को पकड़ा तो यह कंगन उसके हाथ में था इसके आधार पर उसको मौत की सजा दे दी गयी। पर रानी ने चन्द्रा का कंगन लिया और उसे सब गहनों से अलग एक मजबूत आलमारी के अन्दर सुरक्षित बन्द कर के रख दिया।

तब लोग कोइला को जंगल में ले गये और वहाँ जा कर उसका सिर काटने ही वाले थे कि उसने उन लोगों से कहा — "अगर मुझे मरना ही है तो मुझे मेरे ही हाथों से मरने दो।" कह कर उसने अपनी तलवार निकाली और उस पर गिर पड़ा।

क्योंकि उसकी तलवार की धार बहुत तेज़ थी सो उसने उसके शरीर को दो बराबर हिस्सों में काट दिया। उसके शरीर का एक हिस्सा एक तरफ गिर पड़ा और दूसरा हिस्सा दूसरी तरफ गिर पड़ा। जो लोग उसको मारने के लिये ले कर गये थे वे उसके शरीर को जहाँ वह पड़ा था वहीं वैसा ही छोड़ कर वहाँ से चले गये।

जब यह खबर शहर में पहुँची तो बहुत सारे लोग जिन्होंने कोइला को पहले दिन कंगन बेचते देखा था कानाफूसी करने लगे कि जरूर ही इस मामले कहीं कोई अन्याय हुआ है। राजा ने अपना फैसला सुनाने में बहुत जल्दी की।

हमें ऐसा लगता है कि उस बेचारे ने वह कंगन चुराया नहीं था। क्योंकि अगर उसने उसे चुराया होता तो वह उसे हम सबके सामने खुले बाजार में बैठ कर उसे बेचता नहीं। यह राजा की बेरहमी है कि इतने सुन्दर कुलीन आदमी को उसने मरवा दिया। और वह तो यहाँ वैसे भी अजनबी था।

बहुत सारे लोग तो उसकी इस बदकिस्मती पर रो ही पड़े।

राजा के कानों में भी यह खबर पड़ी तो वह बहुत गुस्सा हुआ। उसने कहलवा दिया कि आगे से इस मामले के बारे में शहर में कोई

बात न करे। अगर किसी ने इस बारे में एक शब्द भी कोई बात की या मरे हुए के लिये एक भी ऑसू बहाया तो उसको मौत की सजा दे दी जायेगी।

इससे लोग और बहुत डर गये और कोई भी कोइला के बारे में बात करने से भी डरता था पर किसी के सोचने पर कोई काबू नहीं रख सकता था। लोग सोच तो रहे ही थे।

जिस दिन सुबह को यह सब हुआ वह बूढ़ा दूध बेचने वाला जिसका घर शहर से कुछ दूरी पर था और जिसके घर में चन्द्रा सो रही थी अपने मेहमान के लिये एक कटोरा दूध ले कर गया।

पर जैसे ही चन्द्रा ने उसे चखा तो उसने तो रोना शुरू कर दिया। वह बोली — "मॉ यह तुमने क्या किया। मेरा मुँह तो खून से भर गया।"

बुढ़िया बोली — "नहीं नहीं बेटी। तुम कोई बुरा सपना देख रही होगी। देखो यह तो ताजा गर्म दूध है जो मैं तुम्हारे पीने के लिये लायी हूँ। फिर से पियो।"

चन्द्रा ने उसे फिर से पिया तो वह फिर बोली — "नहीं नहीं यह तो खून है। रात को मैंने एक भयानक सपना देखा और इस सुबह जब मैं जागी तो मैंने देखा कि मेरी शादी का हार टूट कर दो टुकड़े हो गया है। और अब इस दूध में मुझे खून का स्वाद आ रहा है। मुझे यहॉ से जाने दो। मुझे लगता है कि मेरे पति अब नहीं रहे।"

भली बुढ़िया ने उसे बहुत तसल्ली देने की कोशिश की "बेटी तुम ऐसा क्यों सोचती हो कि वह अब इस दुनियॉ में नहीं है। कल जब वह तुम्हारा कंगन बेचने गया था तब तक तो वह बिल्कुल ठीक था। और उसने यह भी कहा था कि वह जल्दी ही वापस आयेगा। हो सकता है कि वह आने वाला ही हो।"

चन्द्रा बोली — "नहीं नहीं मुझे पूरा विश्वास है कि वह मर गया है। मुझे जाने दो। इससे पहले कि वह मर जाये मुझे उससे मिलना है।"

बुढ़िया बोली — "नहीं मैं तुम्हें नहीं जाने दूॅगी। तुम इस शहर की सड़कों पर इस तरह से अकेली घूमने के लिये बहुत ज़्यादा सुन्दर हो। और अगर तुम्हारे पति ने तुमको इस तरह देख लिया तो वह बहुत नाराज होगा। और क्या पता तुम रास्ता ही भूल जाओ और फिर कोई तुम्हें दासी बना कर ले जाये।

याद रखो उसने तुमको यहीं रहने के लिये कहा है कि जब तक वह वापस आता है तुम यहीं रहो। थोड़ा धीरज रखो। तुम जहॉ हो वहीं रुको। मैं अभी शहर जा कर तुम्हारे पति के बारे में पता कर के आती हूॅ। अगर वह ज़िन्दा है तो मैं उसे वापस ले कर लौटती हूॅ और अगर वह नहीं है तो मैं उसकी खबर ले कर आती हूॅ।"

सो उसने मिट्टी के एक बर्तन में दूध भरा उसे अपने सिर पर रखा जैसे वह उसे बेचने के लिये ले जा रही हो और कोइला को

ढूँढने शहर चल दी। जब तक वह लौटी तब तक चन्द्रा को हर मिनट एक घंटे को बराबर लग रहा था।

दूध बेचने वाली बुढ़िया जब तक शहर पहुँची तब तक वह इस आशा में कि या तो उसे कहीं कोइला मिल जाये या फिर ऐसे आदमी की खबर मिल जाये जो बाहर से कंगन बेचने वहाँ आया हो वहाँ की कई सड़कों पर से गुजर चुकी थी।

पर उसको तो वह मिला ही नहीं। न कोई उसके बारे में बात कर रहा था क्योंकि सभी लोग राजा के हुक्म की वजह से उसके बारे में बात करने से भी डरते थे।

जब वह उसको नहीं खोज पायी तो उसे कुछ शक हुआ सो उसने अपनी खोज में कुछ और सावधानी बर्तनी शुरू कर दी। बाजार में सारी सड़कों पर और उन जगहों पर जहाँ वह यह सोचती थी कि वह गया होगा वह घूमती फिरी।

लोगों को उस पर इस तरह से घूमने पर कोई शक न हो जाये कभी कभी वह "दूध ले लो।" की आवाज लगा लेती थी। कभी वह कहती "मक्खन ले लो मक्खन।"

आखिर एक स्त्री जो उसको इस तरह आते जाते देख रही थी उससे बोली — "ओ बेवकूफ स्त्री तुम यहाँ क्या कर रही हो। तुम इस सड़क के छह बार तो चक्कर काट चुकी हो जैसे तुम्हारे पास इस एक बर्तन में छह चीज़ें बेचने के लिये हैं। कोई भी तुमको इस तरह चक्कर काटते देख कर आसानी से समझ लेगा कि तुम वैसी ही

बेवकूफ हो जैसे कल एक कंगन बेचने वाला यहाँ आया था और दिन भर की मेहनत के बाद मार दिया गया।"

बुढ़िया ने पूछा — "तुम किसके बारे में बात कर रही हो।"

दूसरी स्त्री बोली — "ओह। मुझे लगा कि तुम दूध बेचने वाली हो और बाहर से आयी हो और तुम्हें इस बारे में कुछ पता नहीं है। पर छोड़ो यह बात कोई बात करने की नहीं है क्योंकि राजा का हुक्म है कि जो कोई उसके बारे बात करेगा उसको मौत की सजा मिलेगी। ओह वह बहुत सुन्दर था।"

बुढ़िया फुसफुसायी — "कहाँ है वह अब।"

दूसरी स्त्री बोली — "वहाँ जहाँ भीड़ इकट्ठा है। राजा के जौहरी ने उसके ऊपर झूठा इलजाम लगाया कि वह कंगन उसने उसके पास से चुराया है। सो उसको मौत की सजा सुना दी गयी।

बहुत लोगों ने सोचा कि उसको मौत की सजा सुनाना एक अन्याय था पर किसी को बताना नहीं कि यह बात मैंने तुम्हें बतायी है।"

इतना कह कर उसने जंगल की तरफ इशारा कर दिया। बुढ़िया उसी तरफ भागी गयी। वहाँ जा कर उसने देखा कि कोइला के शरीर के दो आधे हिस्से बराबर बराबर पड़े हुए हैं। उसने अपने दूध का बर्तन तो जमीन पर फेंक दिया और उसके सामने घुटने टेक कर बैठ गयी और ज़ोर ज़ोर से रोने लगी।

उसके रोने की आवाज राजा के पहरेदारों ने सुनी तो वे वहाँ पहुँचे। कुछ ने उसको पकड़ लिया और कहा कि इस मरे हुए आदमी के लिये रोना जुर्म है। इसके बारे में बात करना भी तुम्हें मौत की सजा दिलवा सकता है।

बुढ़िया तुरन्त बोली — "मैं इस मरे हुए आदमी के लिये नहीं रो रही। क्या तुम देख नहीं रहे कि मेरा बर्तन टूट गया है और मेरा सारा दूध बिखर गया है। क्या मुझ जैसी गरीब बुढ़िया के लिये यह रोने की बात नहीं है।" और उसने फिर रोना शुरू कर दिया।

वे चिल्लाये "चुप चुप। आओ तुम्हारा मिट्टी का बर्तन कोई इतनी बड़ी चीज़ नहीं थी। यह तो केवल मिट्टी का एक बर्तन है। आँसू बहाना बन्द करो। हम तुम्हें सोने का बर्तन दे देंगे।"

"मैं न तो तुम्हारे सोने के बर्तन की परवाह करती हूँ और न ही चाँदी के। तुम यहाँ से चले जाओ। मेरा मिट्टी का बर्तन उन सबसे ज़्यादा कीमती था। मेरे दादा के दादा और मेरी दादी की दादी इस बर्तन को इस्तेमाल करते थे। और ज़रा सोचो कि अब यह बर्तन टूट गया है और इसका दूध भी बिखर गया है।"

कह कर उसने अपने बर्तन के टुकड़े उठाये और रोती हुई वहाँ से चली गयी जैसे वह इतना केवल अपने मिट्टी के बर्तन के लिये ही रो रही हो। जब वह अपने घर पहुँची तो रो कर बोली — "बेटी तुम्हारा डर ठीक था।" और फिर उसको जितनी कोमलता से वह बता सकती थी सब बता दिया।

जैसे ही चन्द्रा ने यह सुना तुरन्त ही वह राजा के महल भागी गयी जो शहर के बीच में था। वह सीधी उस कमरे में चली गयी जिसमें राजा बैठा हुआ था और बोली — “आपने मेरे पति को मारने की हिम्मत कैसे की?”

जैसे ही वह बोली तो उसकी आवाज की आवाज से उसका कंगन जिसे रानी ने एक अलग आलमारी में बन्द कर के रख दिया था सारे दरवाजे तोड़ कर चन्द्रा के पैरों तक लुढ़कता हुआ आ गया।

राजा के पास उसकी इस बात का कोई जवाब नहीं था। चन्द्रा अपने घुटनों पर बैठ गयी। उसने अपने कपड़े फाड़ डाले बाल नोच डाले और जब उसने यह कर दिया तो सारे देश में आग लग गयी। उसके बाल भी जल गये।

बुढ़िया दूध बेचने वाली ने जो अब तक उसके पीछे लगी थी उसके सिर पर मक्खन का एक लौंदा यह सोच कर रखा कि शायद उससे उसका दिमाग कुछ ठंडा पड़ जाये। दो और स्त्रियाँ उसके ऊपर पानी डालने के लिये पानी ले कर आयीं।

पर अब तक घरों की 19 लाइनों में आग लग चुकी थी। यह देख कर दूध वाली चिल्लायी हम लोगों के घरों पर दया करो। उन्हें मत जलाओ क्योंकि मैंने तो तुम्हारे लिये वह सब किया जो मैं कर सकती थी। सो चन्द्रा ने उस हिस्से को नहीं जलाया पर वह आग दूसरी दिशाओं में बढ़ती चली गयी।

उसने राजा और रानी और महल के सारे लोगों को भी मार दिया। नीच जौहरी और उसकी पत्नी को भी। जब वह मर रहा था तो चन्द्रा ने उसका दिल निकाल लिया और उन गरुड़ों के दे दिया जो ऊपर आसमान में घूम रहे थे — "लो यह तुम्हारे बच्चों की मौत का बदला है।" नाचने वाली लड़की, मौली और दूसरे लोग भी आग के चपेटे में आ गये।

फिर चन्द्रा वहाँ गयी जहाँ उसके पति का शरीर पड़ा हुआ था। वहाँ जा कर वह बहुत ज़ोर ज़ोर से रोयी। जब वह वहाँ रो रही थी तो आसमान से एक सुई और धागा नीचे गिरा। उसे उसने उसे यह कहते हुए उठा लिया कि अब मैं तुम्हें फिर से ज़िन्दा कर सकती हूँ।

उसने कोइला के शरीर के दोनों हिस्सों को बराबर बराबर रखा और उस सुई से सिल दिया। फिर उसने महादेव से कहा "मुझसे जो कुछ भी हो सकता था वह मैंने किया। मैंने यह शरीर सिल दिया है अब आप इसे ज़िन्दगी दें।"

उसकी यह बात सुनते ही महादेव ने उसके शरीर में जान डाल दी। चन्द्रा बहुत खुश हो गयी और वे दोनों अपने देश आ कर रहने लगे। आज भी मदुरा तिनिवैली में वह जगह देखी जा सकती है जहाँ यह आग लगी थी।

23 तीन चतुर आदमियों ने राक्षसों को कैसे हराया[30]

एक बार की बात है कि एक बहुत ही अमीर आदमी था जिसकी पत्नी बहुत सुन्दर थी। इस आदमी का बस एक ही शौक था तीर चलाना।

यह आदमी रोज अपनी पत्नी की नाक में पहनी लौंग के मोती[31] पर अपना तीर ऐसे चलाता था कि उसको किसी तरह की कोई चोट नहीं पहुँचती थी।

एक दिन जब छुट्टी का दिन था इस आदमी की पत्नी का भाई इसकी पत्नी को अपने घर ले जाने के लिये इसके घर आया। तो जैसे ही उसने अपनी बहिन को देखा तो बोला — "तुम इतनी पीली पीली सी और दुबली सी क्यों दिखायी दे रही हो बहन। क्या तुम्हारे पति तुम्हारे साथ कोई खराब व्यवहार करते हैं। क्या बात है।"

पत्नी बोली — "नहीं नहीं ऐसी कोई बात नहीं है। मेरे पति का व्यवहार तो मेरे साथ बहुत अच्छा है। मेरे पास बहुत पैसा है। बहुत गहने हैं। जैसा मैं चाहती थी उससे कहीं अच्छा मकान है। मुझे बस एक ही परेशानी है और वह यह कि वह हर सुबह मेरी नाक में पहने हुए मोती पर अपने तीर से निशाना लगाते हैं।

[30] How the Three Clever Men Outwitted the Demons. (Tale No 23).

[31] Translated for the words "Pearl in the Nose Ring". See its picture above. Nose ring or nose pearl is a kind of ornament worn on the nose and is very common in India.

और इससे मुझे बहुत डर लगता है। कि किसी दिन उनका निशाना चूक भी सकता है और उनका तीर मेरे चेहरे को छेद कर मुझे मार सकता है।

इसलिये मुझे अपनी ज़िन्दगी का हमेशा ही डर लगा रहता है। फिर भी मैं उनसे ऐसा करने के लिये मना नहीं कर सकती। क्योंकि इससे उनको बहुत आनन्द मिलता है। पर अगर वह अपनी मर्जी से इस काम को छोड़ दें तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा।"

भाई ने पूछा — "इसके बारे में वह खुद तुमसे क्या कहते हैं।"

बहिन बोली — "रोज जब भी वह मोती को निशाना बना कर आते हैं तो वह बहुत खुशी और गर्व से कहते हैं "क्या कभी मेरे जैसा कोई होशियार आदमी हुआ है।" और फिर मैं जवाब देती हूँ "नहीं कोई भी नहीं। मुझे तो नहीं लगता कि आप जैसा कोई होशियार आदमी कभी हुआ है।"

भाई बोला — "अब आगे से ऐसा मत कहना। अगली बार वह तुमसे जब यह बात कहें तो उनसे कहना "दुनियाँ में आपसे भी ज़्यादा होशियार लोग हैं।"

बहिन ने कहा कि वह उसकी सलाह पर ध्यान देगी। सो अगली बार जब उसने उसकी नाक की लौंग के मोती को निशाना बनाया और उससे पूछा कि "क्या कभी मेरे जैसा कोई होशियार आदमी हुआ है।"

तो पत्नी ने जवाब दिया "ऐसा नहीं है दुनियाँ में आपसे भी ज़्यादा होशियार लोग हैं।"

यह सुन कर वह बोला — "अगर हैं तो होने दो। मैं तब तक आराम से नहीं बैठूँगा जब तक मुझे कोई मिल नहीं जाता।"

और वह घर छोड़ कर चला गया। वह ऐसे किसी आदमी को ढूँढने के लिये जो उससे ज़्यादा होशियार हो बहुत दूर जंगल में चला गया।

वह चलता गया चलता गया। आखीर में वह एक नदी के पास आ पहुँचा। नदी के किनारे बैठा एक आदमी खाना खा रहा था। मोती पर निशाना लगाने वाला भी वहीं बैठ गया। दोनों आपस में बात करने लगे।

बात करते करते मोती पर निशाना लगाने वाले ने कहा — "वैसे तुम्हारी यात्रा का उद्देश्य क्या है और तुम जा कहाँ रहे हो।"

अजनबी बोला — "मैं एक कुश्तीबाज हूँ देश का सबसे मजबूत आदमी। मैं कुश्ती के और बोझा उठाने के मामले में कई आश्चर्यजनक काम कर सकता हूँ।

मैं सोचता था कि दुनियाँ भर में मेरे जैसा कोई दूसरा नहीं है पर फिर मैंने सुना कि कहीं दूर देश में मुझसे भी ज़्यादा एक होशियार आदमी है जो हर सुबह अपनी पत्नी की नाक की लौंग के मोती पर निशाना लगाता है और उसका तीर उसकी पत्नी के शरीर से छूता भी नहीं।

मैं उसे ही ढूँढने निकला हूँ और जानना चाहता हूँ कि यह सच है या नहीं।"

मोती पर निशाना लगाने वाला बोला — "यह बिल्कुल सच है। और इसके लिये अब तुम्हें और कहीं जाने की जरूरत नहीं है क्योंकि मैं ही वह आदमी हूँ जिसके बारे में तुमने सुना है।"

फिर कुश्तीबाज ने पूछा — "और तुम किसलिये यात्रा पर निकले हो और तुम कहाँ जा रहे हो।"

मोती पर निशाना लगाने वाला बोला — "मैं भी अपने से किसी ज़्यादा होशियार आदमी की तलाश में निकला हूँ। अब क्योंकि हम दोनों का एक ही उद्देश्य है तो हम लोग एक दूसरे के भाई बन जाते हैं और साथ साथ घूमते हैं। हो सकता है कि हमसे भी ज़्यादा होशियार लोग इस दुनियाँ में हों।'

कुश्तीबाज राजी हो गया सो वे दोनों एक साथ घूमने चल दिये। वे अभी बहुत दूर नहीं चले थे कि वे एक चौराहे पर आ गये। वहाँ एक आदमी बैठा हुआ था जिसको उन्होंने पहले कभी नही देखा था।

उसने कुश्तीबाज और मोती पर निशाना लगाने वाले को रोका और उनसे पूछा — "दोस्तों तुम लोग कौन हो और कहाँ जा रहे हो।"

उन्होंने जवाब दिया — "हम दो बहुत होशियार लोग हैं। हम लोग यह देखने के लिये दुनियाँ घूम रहे हैं कि हमारे जैसा होशियार

कोई और भी है या नहीं। पर तुम कौन हो और तुम कहाँ जा रहे हो।”

तीसरा आदमी बोला — “मैं एक पंडित हूँ। मेरी याद बहुत अच्छी है। मैं अपने अच्छे दिमाग और अच्छे सोचने के लिये बहुत मशहूर हूँ। मैं अक्सर सोचा करता था कि मेरे जैसा होशियार आदमी इस दुनियाँ में कोई नहीं है।

पर मैंने दो आदमियों के बारे में सुना है जो बहुत होशियार हैं। उनमें से एक कुश्तीबाज है और एक रोज अपनी पत्नी की नाक में पहनी लौंग के मोती को बिना उसको चोट पहुँचाये तीर से निशाना लगाता है। मैं उन दोनों से मिलना चाहता हूँ और उनसे सीखना चाहता हूँ अगर यह सच है तो।”

दोनों बोले — “पंडित यह सच है और वे दोनों आदमी हम ही हैं जिनके बारे में तुम बात कर रहे हो।”

यह सुन कर पंडित तो बहुत खुश हो गया — “तब तो हम सबको भाइयों की तरह से रहना चाहिये। क्योंकि तुम लोगों के घर बहुत दूर हैं तो तुम लोग मेरे घर चलो। मेरा घर पास में ही है। वहाँ तुम लोग थोड़ा आराम करना और फिर हम लोग अपनी अपनी होशियारी दिखायेंगे।”

यह सलाह कुश्तीबाज और मोती पर निशाना लगाने वाले दोनों को पसन्द आयी सो वे दोनों पंडित के घर चले गये।

अब पंडित के घर में लोहे का एक बहुत बड़ा बर्तन था। वह इतना भारी था कि उसे **25** लोग भी मुश्किल से हिला सकते थे।

अपनी ताकत दिखाने के लिये कुश्तीबाज बीच रात में बरामदे से उठा जहाँ वह सो रहा था और जितनी चुपचाप वह बर्तन उठा सकता था उतनी चुपचाप उसने उसे अपने कन्धों पर उठाया और उसे नदी पर ले गया। वहाँ उसने इसको नदी में सबसे गहरी जगह ले जा कर गाड़ दिया।

यह सब कर के वह पंडित के घर से जितनी चुपचाप गया था उतनी ही चुपचाप वहाँ लौट आया और अपने कम्बल में लिपट कर सो गया। पर हालाँकि वह बहुत ही बेआवाज गया था और बेआवाज आया था पर फिर भी पंडित की पत्नी ने उसे सुन लिया।

उसने अपने पति को जगाया आर कहा "मैंने कुछ देर पहले कुछ लोगों के चलने की आहट सुनी जैसे कोई बिल्कुल चुपचाप चल रहा हो पर वैसी ही आहट मैंने फिर सुनी। मुझे लगता है घर में कोई चोर है। चलो उठ कर देखते हैं। यह बड़ी अजीब सी बात है कि चोरी करने के लिये चोरों ने यह चाँदनी रात चुनी है।"

सो वे दोनों तुरन्त ही उठे और घर में चारों तरफ चक्कर काट आये पर उनको ऐसा बिल्कुल नहीं लगा कि किसी ने कोई चीज़ छुई हो या कोई चीज़ इधर से उधर रखी हो।

आखीर में वे रसोईघर में आये। वहाँ भी देखने पर पहले उनको यही लगा कि वहाँ सब कुछ वैसा ही था जैसा रात को सोते समय उन्होंने उसे छोड़ा था।

कि इतने में पंडित की पत्नी चिल्लायी — "अरे देखना उस लोहे के बड़े बर्तन का क्या हुआ वह तो यहाँ नहीं है वह कहाँ है। मैंने तो उसको देखने की सोचा भी नहीं था क्योंकि वह तो सुरक्षित था ही क्योंकि वह तो दो चार लोगों से भी उठाया भी नहीं जा सकता था।"

दोनों ने उसे घर के अन्दर बाहर दोनों जगह देखा पर वह बर्तन उनको कहीं दिखायी नहीं दिया हाँ मिट्टी में गहरे गहरे पाँव के निशान जरूर दिखायी दिये जैसे कोई भारी चीज़ उठा कर ले गया हो। ये निशान रसोईघर से नदी की तरफ जा रहे थे।

यह देख कर पंडित बोला — "ऐसा लगता है कि किसी बहुत ही ताकतवर आदमी ने यह काम दिखाने के लिये किया है क्योंकि यहाँ केवल एक ही आदमी के पैरों के निशान हैं। और उसने वह बर्तन नदी में डुबो दिया है क्योंकि इस नदी के उस पार पैरों के कोई निशान नहीं हैं।

मुझे आश्चर्य है कि यह किसने किया होगा। चलो ज़रा चल कर देखते हैं कि हमारे दोनों मेहमान सोये हुए हैं या नहीं। हो सकता है कि वह जो कुश्तीबाज है उसने अपनी ताकत दिखाने के लिये यह किया हो।"

कहते कहते वह अपनी पत्नी के साथ बरामदे में गया जहाँ उसके मेहमान सो रहे थे। वे तो गहरी नींद सो रहे थे। पहले तो उन्होंने मोती पर निशाना लगाने वाले की तरफ देखा तो पंडित बोला — "नहीं नहीं यह वह नहीं हो सकता। यह तो ऐसा काम कर ही नहीं सकता।"

फिर उसने कुश्तीबाज की तरफ देखा और देख कर उस चालाक पंडित ने उसकी थोड़ी सी खाल चाट ली और फिर अपनी पत्नी से बोला — "यकीनन यही आदमी है जिसने हमारा बर्तन चुराया है और नदी में छिपा दिया है।

इसने यह काम अभी अभी ही किया है क्योंकि इसका गर्दन तक का शरीर ताजा पानी में भीगा हुआ है। क्योंकि इसकी खाल पर सिर से ले कर पैर तक नमक का कोई स्वाद नहीं है। कल मैं इसको यह सब बता कर आश्चर्य में डाल दूँगा कि मैं यह सब जानता हूँ।"

यह कह कर पंडित अपनी पत्नी के साथ अपने घर चला गया।

अगली सुबह जैसे ही दिन निकला पंडित ने मोती पर निशान लगाने वाले को और कुश्तीबाज दोनों को बुलाया और कहा — "आज हम लोग नदी में नहायेंगे। मैं आपको घर में नहीं नहला सकता क्योंकि वह बड़ा बर्तन जिसमें हम पानी भरते हैं रात में कुछ अजीब तरीके से गायब हो गया है।"

कुश्तीबाज बोला — "अरे पर वह जा कहाँ सकता है।"

पंडित बोला — "हाँ यह तो सोचने की बात है।"

कह कर वह उन दोनों को नदी पर उस जगह ले गया जहाँ पिछली रात कुश्तीबाज ने वह बर्तन नदी में डाला हुआ था।

उसने नदी में घुस कर उस बर्तन को ढूँढ लिया और उसकी तरफ इशारा करता हुआ बोला — "देखा दोस्तों यह बरतन कितनी दूर यात्रा करके यहाँ आ गया है।" कुश्तीबाज तो यह सुन कर आश्चर्यचकित रह गया कि पंडित को यह बात पता है।

उसने पूछा — "इसको यहाँ कौन रख सकता है।"

पंडित बोला — "मैं बताता हूँ कि मैं ऐसा क्यों सोचता हूँ कि वह तुम हो।"

तब उसने रात का सारा हाल सुनाया कि रात में किस तरह उसकी पत्नी ने किसी के पैरों की आहट सुनी और इस शक में मुझे जगाया कि मैं उठ कर देखूँ कि कहीं घर में कोई चोर तो नहीं है। हमने देखा कि हमारा वह बर्तन गायब है। ढूँढने पर वह हमको नदी में मिला।

फिर उसने उनको यह भी बताया कि उसने किस तरह जाँचा कि चोर कौन था। क्योंकि कुश्तीबाज उससे ठीक पहले गले तक पानी में था।

कुश्तीबाज और मोती पर निशाने वाला यह सुन कर बहुत आश्चर्य में पड़ गये। पंडित की बुद्धि ने इसका पता लगाया था।

मोती पर निशाना लगाने वाले ने सोचा ये दोनों लोग तो बहुत ही अक्लमन्द निकले।

खैर तीनों घर लौट कर आये। सारा दिन तीनों बहुत खुश थे आनन्द मना रहे थे। जब शाम हुई तो पंडित ने कुश्तीबाज से कहा — "हमको छोटी छोटी बातों को जाने देना चाहिये। आज हम लोग शानदार दावत खायेंगे। कुश्तीबाज तुम उस पहाड़ी पर जाओ और वहाँ से कोई मोटे से मोटा बकरा खोज कर लाओ। आज हम शाम को उसी को पकायेंगे।"

कुश्तीबाज राजी हो गया और वहाँ से चला गया। वह तुरन्त ही उस पहाड़ी पर जा पहुँचा जहाँ बकरे बकरियों का झुंड चर रहा था। वह उनमें से एक बकरे को उठा कर वहाँ से भागने ही वाला था कि एक छोटा सा राक्षस वहाँ आ गया।

उसने देखा कि कुश्तीबाज की निगाह तो बकरों के झुंड पर है तो उसने सोचा कि अगर मैं किसी तरह से उसे अपने आपको उठा लेने दूँ तो मैं इसके घर पहुँच कर इसके और इसके दोस्तों के साथ कुछ बढ़िया चाल खेल सकूँगा सो तुरन्त ही उसने आपको एक बहुत ही सुन्दर मोटे बकरे में बदल लिया।

कुश्तीबाज ने देखा कि उस झुंड में एक बकरा बहुत सुन्दर और तगड़ा है तो बस उसने उसे ही उठा लिया अपनी बगल में दबाया और उसे घर ले आया। बकरे ने उसकी पकड़ से छूटने के लिये बहुत हाथ पैर मारे।

कुश्तीबाज ने भी महसूस किया कि दुनियाँ का कोई बकरा इतनी ज़ोर से हाथ पैर नहीं मार सकता था फिर भी वह उसको कस कर पकड़े रहा और जीत के इनाम की तरह से पंडित के घर ले आया।

पंडित ने उसके आने की आवाज सुनी तो वह दौड़ कर उससे दरवाजे पर मिलने के लिये भागा। पर जैसे ही उसने बकरा देखा तो वह तो डर गया क्योंकि कुश्तीबाज ने तो उसको इतनी कस कर पकड़ रखा था कि उसकी तो ऑखें ही बाहर निकली पड़ रही थीं।

उनसे आग बरस रही थी और वह बहुत भयानक थीं। ऐसा लग रहा था जैसे वहाँ ऑखें नहीं बल्कि दो ज़िन्दा जलते हुए अंगारे हों। यह सब पंडित को इतना साफ दिखायी दिया कि वह तुरन्त ही समझ गया जिसे बकरा समझ कर उसके दोस्त ने पकड़ा हुआ था वह बकरा नहीं बल्कि राक्षस था।

उसके दिमाग ने तुरन्त ही काम करना शुरू कर दिया "अगर मैंने यह दिखाया कि हम लोग इससे डरे हुए हैं तो यह तो हम सबको खा जायेगा। मुझे इसे पालतू बनाने की कोशिश करनी चाहिये।"

सो वह बड़ी ऊँची आवाज में चिल्लाया — "ओ कुश्तीबाज। ओ बेवकूफ दोस्त। यह तुमने क्या किया। मैंने तो तुमसे अपने खाने के लिये एक मोटा बकरा लाने के लिये कहा था और तुम यह नीच छोटा राक्षस ले कर चले आ रहे हो।

अगर तुम्हें राक्षस को ही ले कर आना था तो तुम्हें और कई राक्षसों को ले कर आना था क्योंकि हम लोग तो बहुत भूखे लोग हैं। एक राक्षस तो मेरे बच्चे रोज खाते हैं मेरी पत्नी तीन राक्षस खाती है और मैं **12** राक्षस रोज खाता हूॅ। और तुम हम सबके लिये केवल एक ही राक्षस ले कर आये हो।"

पंडित के ऐसे शब्द सुन कर कुश्तीबाज तो बहुत आश्चर्य में पड़ गया और उसने राक्षस बकरे को छोड़ दिया। राक्षस बकरा तुरन्त ही पंडित के पास आया और बहुत ही नम्रतापूर्वक बोला — "सर आप मुझे मत खाइये। मैं आपको दुनियॉ की वे सब चीज़ें दूॅगा जो आप चाहेंगे। बस मुझे जाने दीजिये।

मैं आपको पहाड़ के बराबर खजाना लाल हीरे सोना और बहुत सारे रत्न ला कर दूॅगा। बस आप मुझे खाइये नहीं और मुझे जाने दीजिये।"

पंडित बोला — "नहीं नहीं। मुझे मालूम है कि तुम क्या करोगे। तुम यहॉ से चले जाओगे और फिर कभी नहीं लौटोगे। हम लोग तो भूखे हैं सोने हीरे जवाहरात का क्या करेंगे हमको तो इस समय बहुत ही बढ़िया खाना चाहिये इसलिये हम तुम्हें तो जरूर खायेंगे।"

क्योंकि पंडित अपने स्वाभाविक रूप में विश्वास के साथ बोल रहा था तो राक्षस ने सोचा कि यह पंडित जो कुछ कह रहा है सच ही कह रहा होगा।

सो राक्षस ने अपनी बात और ज़्यादा नम्रता के साथ दोहरायी और बोला — "बस तुम मुझे जाने दो। मैं तुम्हारे लिये खजाना ले कर अभी वापस आता हूँ।"

पंडित अक्लमन्द था। उसने अपने चेहरे पर सन्तुष्टि दिखायी और कहा — "ठीक है तुम जा सकते हो पर हमसे भागने की कोशिश मत करना। तुम चाहे पाताल के अन्दर ही क्यों न चले जाओ हम तुम्हें फिर भी ढूँढ निकालेंगे और खा जायेंगे क्योंकि हम तुम और तुम्हारे साथियों से कहीं ज़्यादा ताकतवर हैं।"

राक्षस जिसने अभी अभी कुश्तीबाज की मजबूत पकड़ महसूस की थी और उसके बाद पंडित के परिवार के राक्षस खाने का प्रेम उसी के मुँह से सुना था सोचा कि वह तो बहुत खुशकिस्मत था जो वहाँ से बच गया था।

वह तुरन्त घर लौटा और अपने खजाने की तरफ गया वहाँ से बहुत सारी कीमती चीज़ें उठायीं और फिर तुरन्त ही पंडित के घर वापस चल दिया ताकि देर हो जाने पर पंडित उसे खाये नहीं। उसके कई साथियों ने उसे पकड़ा और पूछा कि वह उनका इतना सारा खजाना कहाँ ले जा रहा है।

राक्षस बोला — "यह मैं अपनी जान बचाने के लिये ले कर जा रहा हूँ। एक बार दुनियाँ में घूमते समय मुझे कुछ भयानक लोगों ने पकड़ लिया। वे तो आदमियों से भी ज़्यादा भयानक थे। उन्होंने

मुझे धमकी दी कि अगर मैंने उनको खजाना नहीं दिया तो वे मुझे खा जायेंगे।”

वे बोले — “हम भी उन भयानक जीवों को देखना चाहेंगे क्योंकि हम लोगों ने पहले ऐसा कभी नहीं सुना कि कोई आदमी राक्षस को खाता हो।”

राक्षस ने जवाब दिया — “वे बहुत ही भयानक लोग हैं। मैंने ऐसे भयानक लोग पहले कभी नहीं देखे। अगर उनको मौका मिल जाये तो वे तो हमारे राजा को भी खा सकते हैं। उनमें से एक कह रहा था कि वह **12** राक्षस रोज खाता है। उसकी पत्नी तीन राक्षस रोज खाती है और उसका हर बच्चा एक एक राक्षस खाता है।”

यह सुन कर उन्होंने उसको जाने दिया पर राक्षसों के राजा ने उससे कहा कि वह अगले दिन तुरन्त ही वहाँ से लौट कर आये क्योंकि यह मामला थोड़ा गम्भीर है और वह इस मामले पर विचार करना चाहेगा।

तीन दिन बाद जब वह राक्षस पंडित को घर खजाना ले कर लौट कर आया तो पंडित बहुत गुस्सा हुआ बोला — “तुमने इतनी देर कहाँ लगा दी। तुमने तो जल्दी ही लौटने का वायदा किया था।”

राक्षस बोला — “वह मेरे साथी राक्षसों ने मुझे रोक लिया था। उन्होंने मुझे बड़ी मुश्किल से आने दिया। वे इस बात पर बहुत दुखी थे कि मैं आपके लिये इतना सारा खजाना ले कर आ रहा था।

हालाँकि मैंने उनसे कहा भी कि आप लोग बहुत ताकतवर हैं पर उन्हें मेरा विश्वास ही नहीं हुआ। उन्होंने मुझसे कहा है कि जैसे ही मैं यहाँ से लौटूँ उनको सूचना दूँ वे लोग एक काउन्सिल में मेरे इस काम के ऊपर सोच विचार करेंगे।"

पंडित ने पूछा — "तुम्हारी काउन्सिल की मीटिंग कहाँ होगी।"

राक्षस बोला — "ओह वह तो बहुत दूर होगी। बीच जंगल में। जहाँ हमारा राजा रोज अपना दरबार लगाता है।"

पंडित बोला — "मैं और मेरे दोस्त उस जगह को देखना चाहेंगे और तुम्हारे राजा और उसके दरबार को भी। अगर तुमने हमारा कहा नहीं माना तो हम बहुत नाराज हो जायेंगे।"

क्योंकि वह पंडित के डरावने शब्दों से बहुत डरा हुआ था सो वह बोला — "ठीक है। आप मेरी पीठ पर बैठ जाइये। मैं आपको वहाँ ले चलता हूँ।"

सो पंडित कुश्तीबाज और मोती पर निशाना लगाने वाला तीनों उसकी पीठ पर बैठ गये और वह राक्षस उनको ले कर उड़ चला। जितनी जल्दी उसके पंख उसको उड़ा कर ले चले। वह उड़ता रहा उड़ता रहा जब तक वह उस जंगल में पहुँचा जहाँ राजा का दरबार लगने वाला था।

वहाँ पहुँच कर उसने उनको राजा की राजगद्दी के ऊपर लगे एक पेड़ के ऊपर बिठा दिया। कुछ मिनटों में ही मोती पर निशाना लगाने वाले कुश्तीबाज और पंडित ने आवाजें सुनीं। आवाजों के

साथ आये वहाँ हजारों राक्षस। जहाँ जहाँ तक उनकी नजर जाती थी सारी जमीन राक्षसों से ढकी हुई थी।

वे सब राजा की राजगद्दी के आसपास आ कर बैठ गये। वे तीनों तो उन राक्षसों को देख सकते थे पर राक्षसों को वे दिखायी नहीं दे रहे थे।

राजा बोला — "उस नीच को यहाँ लाया जाये जो हमारा खजाना आदमियों के लिये ले कर गया था।"

जब वे उसको घसीटते हुए दरबार में लाये तो उसको दोषी ठहराया गया तो उसको सजा दे दी जाती पर उसने अपने बचाव में बहुत अच्छी दलीलें दीं।

उसने कहा — "राजा साहब। वे कोई साधारण आदमी नहीं थे वे बहुत ही भयानक थे। उन्होंने कहा कि उन्होंने बहुत सारे राक्षस खा लिये हैं। आदमी कहता था कि वह **12** राक्षस रोज खाता था उसकी पत्नी तीन राक्षस रोज खाती थी और उसके बच्चे एक एक राक्षस रोज खाते थे।

उसने यह भी कहा कि वह और उसके दोस्त हम सब राक्षसों से ज़्यादा ताकतवर है और वैसे ही राज करता है जैसे आप हमारे ऊपर राज करते हैं।"

राक्षसों का राजा बोला — "मैं ऐसे लोगों को देखना चहूँगा तभी मैं तुम्हारा विश्वास करूँगा पर... ।"

इसी बीच वह पेड़ जिस पर पंडित मोती पर निशाना लगाने वाला और कुश्तीबाज बैठे थे टूट गया। सो पहले कुश्तीबाज फिर मोती पर निशाना लगाने वाला और आखीर में पंडित सब राक्षस राजा के सिर पर गिर पड़े।

वे सब इतनी अचानक नीचे गिरे कि राजा को लगा जैसे वह सब आसमान से टपके हों। उनको भी इसकी आशा नहीं थी सो उन्होंने भी हिम्मत से काम लेने की सोची।

सो कुश्तीबाज ने राक्षस राजा को एक ठोकर मारी और फिर उसको अपने शरीर से चिपका कर तड़ातड़ मारना शुरू कर दिया। मोती पर निशाना लगाने वाले ने भी उसके साथ ऐसा ही किया।

पंडित जो उन लोगों से ऊँचे पर बैठा हुआ था वह चिल्लाया "ऐसा ही करो। ऐसा ही करो। सबसे पहले हम इसी को अपने शाम के खाने में खायेंगे बाद में हम दूसरे राक्षसों को खायेंगे।"

बस यह सुन कर तो सब वहाँ से भाग लिये। राक्षस राजा चिल्लाया — "मुझे छोड़ दो। मुझे छोड़ दो। मुझे पता चल गया कि यह सब सच है। मुझे जाने दो। मैं तुम्हें इतना ही खजाना और दूँगा पर बस तुम मुझे छोड़ दो।"

पंडित वहीं से चिल्लाया — "नहीं नहीं। तुम इसकी बात मत सुनना। हम आज इसी को खायेंगे।"

और कुश्तीबाज और मोती पर निशाना लगाने वाले ने उसे और ज़ोर ज़ोर से मारना शुरू कर दिया।

राक्षस फिर चिल्लाया "मुझे छोड़ दो। मुझे छोड़ दो।"

"नहीं नहीं।" और वे लोग उसको करीब एक घंटे तक पीटते रहे। फिर यह सोचते हुए कि वे उसको मारते मारते थक जायेंगे पंडित बोला — "इस जंगल में इसके खजाने का हम क्या करेंगे। पर अगर यह उसे हमारे घर तक लाने तक का वायदा करे तो हम इसे आज के खाने में नहीं खायेंगे। तुमको अपने बदले में हमको काफी खजाना देना पड़ेगा क्योंकि हम लोग बहुत भूखे हैं।"

राजा राक्षस इस बात के लिये राजी हो गया। उसने अपने भागे हुए राक्षसों को बुलाया और उन तीनों बहादुरों को उनके घर छोड़ कर आने को कहा और साथ में बहुत सारा खजाना भी ले जाने के लिये कहा।

छोटे छोटे राक्षसों ने डर से कॉपते हुए अपने राजा का हुक्म माना। पर वे पंडित मोती पर निशाना लगने वाले और कुश्तीबाज के लिये अपना सबसे अच्छा करने के लिये उत्सुक थे। उधर वे तीनों भी अपने घर जाने की जल्दी में थे।

जब वे घर पहुँच गये तो पंडित ने कहा "तुम लोग तब तक यहाँ से नहीं जाओगे ज्ब तक हमारा काम पूरा नहीं हो जाता।"

तुरन्त ही राक्षसों ने बहुत सारा खजाना ला कर पंडित के घर में रख दिया और अपना काम खत्म कर के पंडित और उसके दोस्तों से डर कर जो राक्षसों कै खाने की बात ऐसे कर रहे थे जैसे बादाम

और किशमिश खाने की बात कर रहे हों तुरन्त ही उड़ कर वापस चले गये।

इस तरह यह दिखा कर कि वह उनसे बिल्कुल नहीं डर रहा था पंडित ने अपने परिवार को राक्षसों से खाने से बचा लिया। इसके अलावा उसने बहुत सारा खजाना भी ले लिया।

उसने उस खजाने को तीन बराबर हिस्सों में बॉटा। एक तिहाई हिस्सा उसने कुश्तीबाज को दिया। एक तिहाई हिस्सा उसने मोती पर निशाना लगाने वाले को दिया। और एक तिहाई हिस्सा उसने अपने पास रख लिया। फिर उसने अपने दोनों दोस्तों को बहुत प्यार के साथ विदा किया।

सो मोती पर निशाना लगाने वाला जब कीमती खजाने के साथ घर लौट कर आया तो उसने अपनी पत्नी को बुलाया और उसे वह सब देते हुए कहा — "मैं यात्रा करते करते बहुत दूर देश चला गया था। वहॉ से तुम्हारे लिये यह खजाना ले कर आया हूॅ।

मैंने देखा कि तुम सच कह रही थीं कि दनियॉ में मुझसे भी ज़्यादा होशियार लोग हैं। क्योंकि मैंने देखा कि मेरी अपनी होशियारी का कोई फायदा नहीं है जबकि एक पंडित और एक कुश्तीबाज की होशियारी का कम से कम कुछ तो फायदा है।

मैं इस खजाने के लायक नहीं था। अब मैं तुम्हारी नाक की लौंग के मोती को कभी अपना निशाना नहीं बनाऊॅगा।"

और उसने फिर ऐसा ही किया। उसने फिर कभी उसकी नाक की लौंग के मोती को अपने तीर का निशाना नहीं बनाया।

24 मगर और गीदड़[32]

एक बार एक भूखा गीदड़ छोटे छोटे केंकड़े मछली या फिर जो कुछ और उसे खाने के लिये मिल जाये ढूँढने के लिये नदी किनारे गया। अब ऐसा था कि उसी नदी में एक मगर भी रहता था। वह भी बहुत भूखा था और वह तो गीदड़ खा कर बहुत खुश होता।

काफी देर तक गीदड़ इधर से उधर भागता रहा पर इत्तफाक की बात उसे वहाँ कुछ भी खाने के लिये नहीं मिला। आखिर जहाँ मगर लेटा हुआ था उसी के पास साफ उथले पानी के नीचे घास में उसको एक केंकड़ा दिखायी दे गया जो बहुत तेज़ी से भागा जा रहा था।

गीदड़ इतना भूखा था कि जैसे ही उसने केंकड़ा देखा उसने पानी में अपना पंजा डाल दिया और उस भागते हुए केंकड़े को पकड़ने की कोशिश की कि खटाक। मगर ने उसे पकड़ लिया।

गीदड़ ने सोचा "हे भगवान। अब मैं क्या करूँ। इस बड़े मगर ने तो मेरा पंजा ही अपने मुँह में पकड़ लिया। अगले ही पल यह मुझे पानी में खींच लेगा और निगल जायेगा। मेरे बचने का अब एक ही तरीका है कि मैं इसको यह विश्वास दिला दूँ कि इसने कहीं गलती कर दी है।"

---

[32] The Alligator and the Jackal. (Tale No 24).

सो वह खुशी से चिल्लाया — "मगर तुम तो बड़े चतुर हो। तुमने तो बजाय मेरे पंजे के घास की जड़ ही पकड़ ली। मुझे आशा है कि वह तुम्हें मेरे पंजे से अधिक मुलायम लग रही होगी।"

मगर घास में काफी नीचे की ओर धँसा हुआ था सो उसे आसपास का साफ दिखायी नहीं दे रहा था। यह सुन कर बोला — "ओह मैं कितना थक गया हूँ कि मैंने सोचा कि मैंने गीदड़ का पंजा पकड़ लिया है पर जैसा कि यह कह रहा है यह तो गीदड़ का पंजा नहीं है यह तो घास की जड़ है।"

सो उसने गीदड़ का पंजा छोड़ दिया। पंजे के छूटते ही गीदड़ वहाँ से खुशी से चिल्लाता हुआ भाग गया — "ओ अक्लमन्द मगर। तुम तो वाकई बहुत अक्लमन्द हो कि तुमने मुझे दोबारा जाने दिया।"

मगर यह सुन कर बहुत दुखी हुआ पर गीदड़ तो दोबारा पकड़े जाने के लिये बहुत दूर जा चुका था। अगले दिन गीदड़ फिर अपना खाना ढूँढने के लिये नदी के किनारे आया पर वह मगर से बहुत डरा हुआ था।

सो वह दूर से ही बोला — "जब भी मैं अपना खाना ढूँढने निकलता हूँ तो मुझे कीचड़ में से झाँकते हुए बढ़िया बढ़िया केंकड़े दिखायी दे जाते हैं तो मैं उन्हें पकड़ लेता हूँ और खा लेता हूँ। काश मुझे अभी एक दिखायी दे जाये।"

अब मगर जो पानी की तली में कीचड़ में धँसा हुआ था केंकड़े की सब बातें सुन रहा था। सो उसने अपनी नाक का बहुत ही छोटा सा आगे का हिस्सा पानी से बाहर निकाला।

उसने सोचा कि "अगर मैं अपनी नाक का यह छोटा सा हिस्सा पानी से बाहर निकालूँगा तो गीदड़ को लगेगा कि यहाँ कोई केंकड़ा है। वह जैसे ही उसे पकड़ने आयेगा तो मैं उसे खा लूँगा।"

पर जैसे ही गीदड़ ने मगर की छोटी सी नाक देखी तो वह समझ गया कि यहाँ तो मगर बैठा है। वह बोला — "अच्छा मेरे दोस्त तो तुम यहाँ छिप बैठे हो। तो यहाँ नदी के इस हिस्से में तो अब मेरा खाना मिलने का कोई मौका नहीं है।"

इतना कह कर वह वहाँ से भाग गया। कुछ दूर जा कर उसने फिर मछली का खाना खाया। मगर दोबारा अपना शिकार खोने की वजह से अपने ऊपर बहुत गुस्सा था। इस बार उसने पक्का इरादा कर लिया था कि अबकी बार वह इस गीदड़ को नहीं छोड़ेगा।

अगले दिन जब फिर से गीदड़ नदी के किनारे आया तो मगर ने अपने आपको किनारे के पास में ही छिपा लिया ताकि अगर वह पकड़ सकता होगा तो वह उसे तुरन्त ही पकड़ लेगा।

उधर गीदड़ भी डरा हुआ था कि शायद आज तो मगर मुझे पकड़ ही लेगा सो वह नदी के किनारे नहीं आ रहा था। हालाँकि उसको भूख तो बहुत लगी थी पर उसे पकड़े जाने का डर भी था सो

वह सुरक्षित दूरी पर रह कर ही अपना शिकार ढूँढने की कोशिश कर रहा था।

आज वह बिना खाना खाये नहीं जाना चाहता था सो पिछले दिन की याद कर के वह फिर ज़ोर से बोला — "अरे सारे के सारे केंकड़े कहाँ गये। यहाँ तो मुझे केवल एक केंकड़ा ही दिखायी दे रहा है और मुझे तो भूख बहुत लगी है।

सामान्यतया तो केंकड़े पानी में बुलबुले उठाते हैं और मैं उन बुलबुलों को देख कर उन्हें पकड़ लेता हूँ पर आज तो मुझे यहाँ कोई बुलबुला भी उठता दिखायी नहीं दे रहा।"

मगर ने सोचा "अगर केंकड़े पानी में बुलबुले उठाते हैं तो मैं भी पानी में बुलबुले उठा सकता हूँ। जब यह पानी में बुलबुले देखेगा तो यह केंकड़ों के बहाने यहाँ आयेगा और मैं इसको खा जाऊँगा।"

सो उसने अपनी नाक में से हवा निकाल कर कुछ बुलबुले उठा दिये। वे सब नदी की सतह पर तैर गये और उनका एक भँवर सा बन गया। जब मगर ने पानी में इस तरह से हवा छोड़ी तो पानी में बहुत हलचल मच गयी।

इससे गीदड़ समझ गया कि वहाँ कौन हो सकता था और वह तो यह कहता हुआ वहाँ तेज़ी से भाग गया — "धन्यवाद मगर जी धन्यवाद। अगर मुझे पता होता कि आप इतने पास हैं तो मैं यहाँ आया ही नहीं होता।"

अब तो मगर को अपने ऊपर बहुत गुस्सा आया कि एक छोटा सा गीदड़ उसको बार बार धोखा दिये जा रहा है। उसने सोचा "बस जो हो गया सो हो गया। अब मैं इसको बार बार नहीं सहूँगा। अगली बार मुझे बहुत होशियारी से काम लेना होगा।"

सो काफी दिनों तक मगर गीदड़ का इन्तजार करता रहा पर गीदड़ फिर वहाँ नहीं आया। असल में वह वहाँ आते आते थक चुका था तो उसने सोचा "अगर मामला ऐसा ही चलता रहा तब तो मैं किसी न किसी दिन पकड़ा ही जाऊँगा सो अब मुझे अपना खाना कहीं और जा कर ढूँढना चाहिये।"

सो उसके बाद वह नदी के किनारे नहीं गया। वह अब जंगल की तरफ चला गया और वहाँ की जंगली अंजीरें और जड़ें खा कर गुजारा करने लगा जिनको वह अपने पंजों से खोद लेता था।

एक दिन मगर को यह बात पता चल गयी तो उसने गीदड़ को जमीन पर ही पकड़ने का फैसला किया। वह एक सबसे बड़े अंजीर के पेड़ के पास पहुँचा जहाँ नीचे जमीन पर बहुत सारी अंजीर पड़ी हुई थीं।

उसने उसको एक ढेर बनाया और उसमें अन्दर छिप कर बैठ गया। वहाँ बैठ कर वह गीदड़ का इन्तजार करने लगा। गीदड़ आया तो उसने देखा कि एक पेड़ के नीचे तो बहुत सारी अंजीरों

का ढेर लगा हुआ है। उसने तुरन्त ही भॉप लिया कि ऐसा ढेर तो मेरा दोस्त केवल मगर ही बना सकता है।

यह जॉचने के लिये कि इसके अन्दर मगर है या नहीं उसने पुकारा — "ओ रसेदार अंजीरों। मैं तो हमेशा पेड़ से वही टूटी अंजीरें खाता हूॅ जो टूट कर नीचे गिरती हैं और फिर हवा से इधर उधर चली जाती हैं। पर यह बड़ा ढेर तो बिल्कुल शान्त खड़ा है। ये अंजीरें अच्छी नहीं हो सकतीं। मैं तो इनमें से एक भी नहीं खा सकता।"

मगर ने सोचा "अरे बस इतना ही। यह गीदड़ भी कितना शक्की है। मैं इनको अभी लुढ़काता हूॅ। जब गीदड़ इन्हें लुढ़कती हुई देखेगा तो वह इनको खाने के लिये इधर आयेगा और फिर मैं उसको खा लूॅगा।"

सो उसने अपने आपको हिलाया तो उस ढेर से कुछ अंजीरें लुढ़क कर दूर चली गयीं। गीदड़ चिल्लाया — "मगर जी। आपका बहुत बहुत धन्यवाद कि आपने मुझे बता दिया कि आप यहॉ हैं। मैं तो यह बात किसी तरह भी पता नहीं लगा सकता था कि इस ढेर में आप दबे हैं। आप तो अंजीरों के ढेर में इतना नीचे दबे पड़े थे।"

मगर यह सुन कर इतना गुस्सा हुआ कि वह ढेर में से निकल कर तुरन्त ही गीदड़ के पीछे भागा। पर गीदड़ तो उससे कहीं जल्दी वहॉ से भाग गया।

मगर अभी भी उसके पीछे पड़ा हुआ था। उसने सोचा कि अगली बार मैं इसको बच कर नहीं भागने दूँगा और वहाँ से दूर भाग गया। मैं गीदड़ को दिखा दूँगा कि जितना वह सोचता है मैं उससे कहीं ज़्यादा चालक हूँ।

अगले दिन वह जल्दी जल्दी गीदड़ की माँद की तरफ चल दिया और उसमें अन्दर जा कर बैठ गया। उस समय गीदड़ अपने घर में से कहीं बाहर गया हुआ था।

जब वह घर वापस लौटा तो उसने अपने चारों तरफ देखा तो उसे लगा कि कोई भारी सा जानवर उसके घर तक गया है। इसके अलावा मेरे घर के दरवाजा भी दोनों तरफ से कुछ टूट सा गया है जैसे किसी बड़े से जानवर ने घर में अन्दर जाने की कोशिश की हो।

मैं इस घर के अन्दर तब तक नहीं जाऊँगा जब तक मुझे यह पता न चल जाये कि इसके अन्दर कौन है। पर मैं कैसे पता लगाऊँ।

सो वह जोर से चिल्लाया — "ओ मेरे घर। मेरे प्यारे घर।"

पर घर क्या बोलता घर तो बेजान मिट्टी का बना हुआ था। फिर वह दोबारा बोला — "ओ मेरे प्यारे घर। मैं जब भी घर वापस लौटता हूँ तो तुम मेरा स्वागत करते हो पर आज तो तुम मेरी किसी बात का जवाब तक नहीं दे रहे। क्या बात है। क्या घर में कुछ गड़बड़ हो गयी है जो तुम बोल नहीं रहे।"

यह सुन कर मगर ने सोचा — "घर तो बोलते नहीं पर लगता है कि इसका घर बोलता है। सो यह घर इसी लिये नहीं बोल रहा क्योंकि मैं इस घर में हूँ। सो मेरे लिये यही अच्छा होगा कि मैं इसके घर की तरफ से जवाब दूँ ताकि इसको लगे कि इसके घर के साथ कुछ गड़बड़ी नहीं है।

सो वह बोला — "आइये गीदड़ जी। आपका स्वागत है।"

ये शब्द सुन कर तो गीदड़ बहुत डर गया। उसने सोचा तो वह भयानक मगर यहाँ भी आ पहुँचा। अबकी बार मुझे इसे मार ही देना चाहिये। क्योंकि अगर आज मैंने इसे नहीं मारा तो फिर किसी और दिन यह मुझे खा जायेगा।

सो वह बोला — "बहुत बहुत धन्यवाद घर जी। आपकी मीठी आवाज सुन कर मुझे बहुत खुशी हुई। मैं अभी आया। मैं अपना खाना पकाने के लिये थोड़ी सी लकड़ियाँ ले आऊँ फिर वापस आता हूँ।"

कह कर वह वहाँ से भाग गया और पास से बहुत सारी सूखी लकड़ियाँ इकट्ठी करके अपने घर के दरवाजे पर लगा दीं।

इस बीच मगर वहाँ चूहे की तरह से चुप बैठा रहा। वह सोच रहा था कि आज उसने गीदड़ को हरा दिया। अब तो उसे दोहरा खाना मिलेगा – एक तो गीदड़ और दूसरा वह जो वह अपने खाने के लिये लाया होगा। और यह सोच कर वह मन ही मन मुस्कुरा दिया।

गीदड़ ने लकड़ियाँ इकट्ठी करके अपने घर के दरवाजे पर लगा कर उनमें आग लगा दी और उनको अपनी माँद के अन्दर जितनी दूर तक उससे हो सका उतनी दूर तक धकेल दिया। लकड़ियाँ इतनी ज़्यादा थीं कि आग बहुत बड़ी हो गयी।

आग सारी माँद में फैल गयी। मगर को वहाँ से भागने का मौका भी नहीं मिला। उसने उसे जला कर मार डाला।

गीदड़ अपनी माँद के बाहर नाच गा रहा था खुशियाँ मना रहा था — "मगर जी। आपको मेरा घर कैसा लगा। मेरा घर अच्छा और गर्म था न। अब वह मुझे कभी तंग नहीं करेगा। डिंग डौंग। डिंग डौंग।"

List of Tales of Old Deccan Days

Part 1
1. Punchkin
2. A Funny Story
3. Brave Seventee Bai
4. Truth's Triumph
5. Rama and Laxman or The Learned Owl
6. Little Surya Bai
7. Wanderings of Vicram Maharajah
8. Less Equality Than Men Deem

Part 2
9. Panchphul
10. When the Sun the Moon and the Wind Went Out to Dinner
11. Singh Raja and Cunning Little Jackals
12. Jackal, Barber and a Brahman Who Had Seven Daughters
13. Tit For Tat
14. The Brahman, the Tiger and Six Judges
15. The Selfish Sparrow and the Houseless Crows
16. The Valiant Chattee-maker
17. Rakshas' Palace
18. The Blind Man, the Deaf Man and the Donkey
19. Muchie-Lal
20. Chundun Raja
21. Sodeva Bai
22. Chandra's Venegeance
23. How the Three Clever Men Outwitted the Demons
24. The Alligator and the Jackal

Indian Classic Books of Folktales Translated in Hindi
by Sushma Gupta

12th Cen **Shuk Saptati.**
No 29 By Unknown. 70 Tales. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911. Under the Title "The Enchanted Parrot".
शुक सप्तति — ।

c1323 **Tales of Four Darvesh**
No 24 By Amir Khusro. 5 Tales. Tr by Duncan Forbes.
किस्सये चहार दरवेश

1868 **Old Deccan Days or Hindoo Fairy Legends**
No 23 By Mary Frere. 24 Tales. (5th ed 1889).
पुराने दक्कन के दिन या हिन्दू परियों की कहानियॉ

1872 **Indian Antiquary 1872**
No 34 A collection of scattered folktales in this journal. 18 Tales.

1880 **Indian Fairy Tales**
No 30 By MSH Stokes. London, Ellis & White. 30 Tales.
हिन्दुस्तानी परियों की कहानियॉ

1884 **Wide-Awake Stories – Same as Tales of the Punjab**
By Flora Annie Steel and RC Temple. 43 Tales.

1887 **Folk-tales of Kashmir.**
No 11 By James Hinton Knowles. 64 Tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं

1889 **Folktales of Bengal.**
No 4 By Rev Lal Behari Dey. Delhi : National Book Trust. 22 Tales.
बंगाल की लोक कथाऐं

1890 **Tales of the Sun, OR Folklore of South India**
No 18 By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri.
London : WH Allen. 26 Tales
सूरज की कहानियॉ या दक्षिण भारत की लोक कथाऐं

1892 **Indian Nights' Entertainment**
No 32 By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन

1894 **Tales of the Punjab.**
No 10 By Flora Annie Steel. Macmillan and Co. 43 Tales.
पंजाब की लोक कथाऐं

1903 **Romantic Tales of the Panjab**
No 31 By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियाँ

1912 **Indian Fairy Tales**
No 28 By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 29 Tales.
हिन्दुस्तानी परियों की कहानियाँ

1914 **Deccan Nursery Tales or Fairy Tales from Deccan**.
No 22 By Charles Augustus Kincaid. 20 Tales.
दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें : hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में
हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. **1901**. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **2022**

2. Serbian Folklore.
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874.** 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंग्रेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। **2022**

"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). it contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न्। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal.
By Rev Lal Behari Dey. **1889**. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल बिहारि डे। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। **2020**

5. Russian Folk-Tales.
By Alexander Nikolayevich Afanasief. **1889**. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **2022**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian.
By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales**.**
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **2022**

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales.
Collected and Edited by Nelson Mandela. **2002**. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2022**

8. Fourteen Hundred Cowries.
By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. **1962**. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियाँ – फूजा अबायोमी। **2022**

9. Il Pentamerone.
By Giambattista Basile. **1634**. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। **2022**। **3** भाग

10. Tales of the Punjab.
By Flora Annie Steel. **1894**. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **2022**। **2** भाग

11. Folk-tales of Kashmir.
By James Hinton Knowles. **1887**. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **2022**। **4** भाग

12. African Folktales.
By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. **1998**. 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **2022**

13. Orphan Girl and Other Stories.
By Offodile Buchi. **2001**. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियाँ – ओफ़ोडिल बूची। **2022**

14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories.
By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. **1947**. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **2022**

15. Folktales of Southern Nigeria.
By Elphinston Dayrell. London : Longmans Green & Co. **1910**. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरैल। **2022**

16. Folk-lore and Legends : Oriental.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. **1889**. 13 Folktales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **2022**

17. The Oriental Story Book.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. **1855**. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। **2022**

18. Georgian Folk Tales.
Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.
जियोर्जिया की लोक कथाऐं – मरजोरी वारड्रौप। **2022**। **2** भाग

19. Tales of the Sun, OR Folklore of South India.
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. **1890**. 26 Tales
सूरज की कहानियॉ या दक्षिण की लोक कथाऐं — मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री। **2022**।

20. West African Tales.
By William J Barker and Cecilia Sinclair. **1917**. 35 tales. Available in English at :
पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं — विलियम जे बार्कर और सिसीलिया सिन्क्लेयर। **2022**

21. Nights of Straparola.
By Giovanni Francesco Straparola. **1550, 1553**. 2 vols. First Tr: HG Waters. London: Lawrence and Bullen. **1894**.
स्ट्रापरोला की रातें — जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला। **2022**

22. Deccan Nursery Tales.
By CA Kincaid. **1914**. 20 Tales
दक्कन की नर्सरी की कहानियॉ – सी ए किनकैड। **2022**

23. Old Deccan Days.
By Mary Frere. **1868 (5th ed in 1898**) 24 Tales.
पुराने दक्कन के दिन – मैरी फ्रैरे। **2022**

24. Tales of Four Dervesh.
By Amir Khusro. **Early 14th century**. 5 tales. Available in English at :
किस्सये चहार दरवेश — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

25. The Adventures of Hatim Tai : a romance (Qissaye Hatim Tai).
Translated by Duncan Forbes. London : Oriental Translation Fund. **1830.** 330p.
किस्सये हातिम ताई — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**।

26. Russian Garland : being Russian folktales.
Edited by Robert Steele. NY : Robert McBride. **1916**. 17 tales.
रूसी लोक कथा माला — अंग्रेजी अनुवाद – ऐडीटर रोबर्ट स्टीले। **2022**

27. Italian Popular Tales.
By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. **1885**. 109 tales.
इटली की लोकप्रिय कहानियॉ — थोमस फैडैरिक केन। **2022**

28. Indian Fairy Tales
By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 1892. 29 tales.
भारतीय परियों की कहानियॉ — जोसेफ जेकब्स। **2022**

29. Shuk Saptati.
By Unknown. c 12th century. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911. Under the Title “The Enchanted Parrot”.
शुक सप्तति — । **2022**

30. Indian Fairy Tales
By MSH Stokes. London : Ellis & White. **1880.** 30 tales.
भारतीय परियों की कहानियाँ — ऐम ऐस ऐच स्टोक्स। **2022**

31. Romantic Tales of the Panjab
By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. **1903**. 422 p. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियाँ — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

32. Indian Nights' Entertainment
By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. **1892**. 426 p. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

34. Indian Antiquary 1872
A collection of scattered folktales in this journal. 1872.

35. Short Tales of Panjab
By Charles Swynnerton – a collection of short tales given in his two books – “Romantic Tales of the Panjab” and “Indian Nights' Entertainment” given above – No 31 and 32. **1903**.

Facebook Group :
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस करके एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स करके **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन गुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना पारम्भ किया। सन **2021** तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से ये लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचायी जा सकेंगी।

विंडसर कैनेडा
2022